जून 2020

₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

हेलो, मैं अखिलेश यादव बोल रहा हूं....

कोरोनाकाल में वीडियो कालिंग से संवाद कर रहे राष्ट्रीय अध्यक्ष

04

चीन पर समाजवादियों की नीति

50

युवा बेरोजगार बेकाबू भ्रष्टाचार महंगाई बेशुमार

12

R.N.I. No. 68832/97

गांधी ने हमें जो रास्ता दिखाया है वही देश के लिए सही रास्ता है। गांधीवादी रास्ते पर चलकर हमें डा. लोहिया, आचार्य नरेन्द्र देव और जयप्रकाश नारायण के समाजवादी सिद्धांतों को साकार करना है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन

जून 2020

वर्ष 21 | संख्या 8

अंदर

मीडिया 36

प्रमुख समाचार पत्रों में विशेष साक्षात्कार

प्रिय पाठकों,

समाजवादी बुलेटिन का यह नया अंक बदले हुए रंग-रूप और कलेवर में आपके हाथों में है। इसमें समाचार के साथ विचार का संतुलन बनाये रखते हुए आपके लिए पठनीय सामग्री को हर पन्ने पर समेटा गया है। हम निरंतर ऐसी ही सामग्री लेकर आयेंगे। आशा है आपको बुलेटिन का यह नया रूप पसंद आयेगा। आपकी प्रतिक्रिया की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक

प्रोफेसर रामगोपाल यादव

☎ 0522 - 2235454

samajwadibulletin19@gmail.com

bulletinsamajwadi@gmail.com

Mob:- 9598909095

/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए

19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित

आस्था प्रिंटर्स, गोमती नगर, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

12 कवर स्टोरी

युवा बेरोजगार बेकाबू भ्रष्टाचार महंगाई बेशुमार

समाजवादी पार्टी का आह्वान

लक्ष्य 2022 28

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने आज पार्टी मुख्यालय में "समाजवादी पार्टी का आव्हान" अपील जारी करते हुए सभी पार्टी कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों का आव्हान किया कि वे राज्य और केन्द्र की भाजपा सरकारों की अक्षम्य गलतियों तथा जनविरोधी नीतियों का जन-जन के बीच जाकर पर्दाफाश करें और पीड़ित, दुःखी तथा असहाय लोगों की यथासम्भव मदद करें।

हेलो , मैं अखिलेश यादव बोल रहा हूं... 04

भारत को विदेश नीति में रणनीतिक हित देखना चाहिए 58

चीन पर समाजवादियों की नीति रही है सबसे स्पष्ट 50

हैलो, मैं अखिलेश यादव बोल रहा हूं....

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव वीडियोकॉलिंग के जरिए पार्टी के नेताओं-कार्यकर्ताओं से लगातार सम्पर्क बनाए हुए हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष जी सबका हाल चाल पूछते हुए सन् 2022 में जीत के लिए संकल्पित होकर काम करने का निर्देश देना भी नहीं भूलते। वे संगठनात्मक गतिविधियों की जानकारी लेते हैं और कोरोना से उत्पन्न हालातों के मद्देनजर पार्टी के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं, सभी को यह निर्देश देते हैं कि वे गरीबों-कमजोरों की मदद जारी रखे तथा सन् 2022 में भाजपा को हराने के लक्ष्य को ध्यान में रखकर सक्रिय एवं संगठित रहें। बूथस्तर तक संगठन को सक्रिय रखना है।

श्री अखिलेश यादव को वीडियोकॉलिंग के दौरान कई स्थानों से इलाके के लोगों ने बताया कि किसान भी अब बाजार से सामान लेने नहीं आ रहे हैं। उनकी फसल को इस बार ओला-वर्षा-आंधी से बहुत नुकसान हुआ है। श्रमिकों को रोजगार नहीं मिला। वे बेरोजगारी का दंश झेल रहे हैं। उनकी स्थिति बहुत खराब है। उनकी नौकरी चली गई और यहां भी उन्हें काम नहीं मिल रहा है। श्री अखिलेश यादव ने उनसे कहा कि कोरोना काल में भी भाजपा सरकार में लूट, हत्या, बलात्कार, गांव-गांव तक झगड़े, लाठी-गोली का चलन है। राज्य में अपराधों की बाढ़ आ गई है। प्रदेश अराजकता का शिकार है। भाजपा सांसद विधायक, नेता थानों पर हमला करते रहे हैं। उन्होंने कानून

को हाथ में ले रखा है। सत्ता का दुरूपयोग करने में भाजपा को कोई लोकलाज नहीं है। भाजपा को काम करने का अभ्यास ही नहीं है। उन्हें तो विघटन और नफरत फैलाना ही सुहाता है। भाजपा का यह एजेण्डा है कि जब कोई बिना काम किए ही काम बन जाता है और वोट हासिल किए जा सकते है तो विकासकार्यों में समय और श्रम खपाने की क्या जरूरत है? भाजपा को हवा महल में रहना ही अच्छा लगता है।

अखिलेश जी उत्तर प्रदेश के पार्टी नेताओं व कार्यकर्ताओं से तो बात कर ही रहे हैं, कई बार वे प्रदेश, यहां तक कि विदेशों में भी बात कर रहे हैं। इसी कड़ी में एक दिन उन्होंने गलवान घाटी की स्थिति के बारे में लेह-लद्दाख के कुछ पत्रकारों से वार्ता की। उन्होंने जोखिम उठा कर अपनी लोकतांत्रिक जिम्मेदारी का निर्वहन करने के लिए पत्रकारों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि भारत के लिए यह गौरव की बात है कि भारतीय फौज का हौसला बढ़ा हुआ है। भारतीय जवानों के साथ सारा देश है। जवानों के साथ किसान भी खड़े हैं। श्री अखिलेश यादव ने स्थानीय गाइड से भी बात की। अखिलेश जी को स्थानीय गाइड सहित अन्य सभी लोगों ने अगली बार वहां आने का निमंत्रण दिया।

वीडियोकॉलिंग से वार्ता क्रम में अमेरिका में न्यूयार्क की ओहियो सिटी से श्री एस.के. राय की अखिलेश जी से वार्ता हुई। श्री राय जनपद मऊ (उप्र) के मूल निवासी हैं। कोरोना संकट की वजह से वे तीन महीनों से अमेरिका में रूके हैं। वहां उनके बेटे रहते हैं। श्री राय ने बताया कि विदेश में जो भारतीय बसे हैं वे समाजवादी पार्टी और इसके राष्ट्रीय अध्यक्ष जी को पसंद करते हैं। यहां के उत्तर प्रदेश के भारतीय चाहते है कि उत्तर प्रदेश के विकास के लिए सन् 2022 में समाजवादी सरकार ही बननी चाहिए। श्री विनोद लंदन में बैंकिंग सेक्टर में काम करते है। उनसे भी अखिलश जी ने बात की।

श्री अखिलेश यादव ने अयोध्या में पूर्वमंत्री एवं पूर्व विधायक श्री पवन पाण्डेय और समाजवादी छात्रसभा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राहुल सिंह से सम्पर्क किया। वार्ता स्थल सूर्यकुण्ड, दर्शननगर स्थित सूर्य भगवान के मंदिर के निकट इस अवसर पर सर्वश्री रक्षा राम यादव, शमशेर यादव, जनाब एजाज खान, अनुराग सिंह छोटू, हरेन्द्र सिंह तथा संजय यादव श्रेत्रवासी उपस्थित रहे। उन्होंने बताया कि अयोध्या में भाजपा द्वारा विकास कार्य नहीं किए जाने से लोग बहुत दुःखी हैं।

नौजवानों में समाजवादी पार्टी के लिए हलचल है। इस बार छात्र-नौजवान भाजपा को 2022 में सत्ता से बाहर करके ही दम लेंगे।

इस अवसर पर कई महिलाओं की शिकायत थी कि समाजवादी सरकार में उन्हें समाजवादी महिला पेंशन मिली थी जिससे उन्हें बहुत मदद मिलती थी। यह पेंशन भाजपा सरकार ने बंद कर दी है। उन्होंने कहा कि अगले चुनावों में वे भाजपा को हटाकर समाजवादी पार्टी की सरकार बनवाएंगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष जी द्वारा संकट काल में क्षेत्रवासियों के साथ खड़े होने पर आभार जताया। श्री अखिलेश यादव को उन्होंने आशीर्वाद दिया तो उन्होंने भी आश्वासन दिया कि दुबारा सरकार बनने पर और ज्यादा पेंशन दी जाएगी।

वीडियोकॉलिंग के जरिए मैनपुरी के श्री दाताराम से अखिलेश यादव जी की बात हुई। वहां बुजुर्ग दद्दा ने जहां अखिलेश जी को पुनः मुख्यमंत्री बनने का आशीर्वाद दिया वहीं श्री दाता राम के दाऊ जी भी बात करके बहुत प्रसन्न नज़र आए और कहा कि वे हमेशा समाजवादी पार्टी के साथ रहे हैं। हापुड़ के गांव उपैड़ा में श्री सुधाकर कश्यप से वार्ता हुई। उन्होंने वहां उपस्थित गांववासियों के अतिरिक्त अपने परिवार से भी अखिलेश जी का परिचय कराया। राठ, हमीरपुर से श्री चन्द्रशेखर चौधरी से भी श्री अखिलेश यादव की बात हुई। श्री चन्द्रशेखर चौधरी इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्रसंघ के उपाध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने कहा कि नौजवानों में समाजवादी पार्टी के लिए हलचल है। इस बार छात्र-नौजवान भाजपा को 2022 में सत्ता से बाहर करके ही दम लेंगे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के श्री अखिलेश गुप्ता ने छात्र समस्याओं की चर्चा की। वहीं मेरठ के श्री नौमान मुर्तजा ने कहा कि इस बार सन् 2022 में विधानसभा चुनावों में समाजवादी पार्टी की जीत सुनिश्चित है। मेरठ के ही श्री गुलशन राणा ने कहा कि हम सब सन् 2022 की तैयारियों में जुटे हैं। आपका आशीर्वाद हमारे साथ है।

जौनपुर के श्री लाल बहादुर से सम्पर्क के समय वे श्री अखिलेश यादव के आह्वान पत्र को वितरित किए जाने के संबंध में बैठक कर रहे थे। उन्होंने आश्वस्त किया कि सन् 2022 में इस बार कोई चूक नहीं होगी। वहीं कुशीनगर के दीपक कुमार से अखिलेश जी ने 2022 के चुनावों की तैयारी करते रहने के लिए कहा। श्री अखिलेश यादव ने आजमगढ़ में विधायक श्री नफीस अहमद और भरत यादव, प्रधान से भी वार्ता की। श्री नफीस अहमद ने बताया कि क्षेत्र में उनके आह्वान की प्रतियां वितरित की जा रही हैं। आजमगढ़ के रही श्री दीपक ने बताया कि समाजवादी सरकार में पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे की योजना के माध्यम से पूर्वांचल में विकास को बढ़ावा देने का बड़ा काम किया गया था। आज इस हाइवे का काम शिथिल पड़ गया है। श्री दीपक ने जनपद में मेडिकल कालेज दिए जाने के लिए भी आभार जताया जहां आज गरीबों का इलाज हो रहा है। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि अगर भाजपा सरकार ईमानदार होती तो पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे का निर्माण कार्य कभी का पूरा हो जाता। समाजवादी सरकार के समय शुरू हुआ तय मानकों में कमी करने के बावजूद पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे अधर में है। भाजपा सरकार के पास उपलब्धियों के नाम पर अपनी तो कोई योजना है नहीं बस समाजवादी पार्टी के विकास कार्यों को ही वे अपना बताते घूमते हैं।

वाराणसी जनपद के कार्यकर्ताओं-नेताओं ने वीडियोकॉलिंग के दौरान अखिलेश जी को बताया कि प्रधानमंत्री जी के निर्वाचन क्षेत्र में जनता परेशान है, शहर की सांस्कृतिक गरिमा नष्ट की जा रही है। मछुआरा समाज और बुनकरों के प्रतिनिधियों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष जी को अपनी समस्याएं बताईं। उन्होंने बताया कि समाजवादी सरकार में उन्हें जो सुविधाएं मिली थीं, भाजपा सरकार ने उन्हें बंद कर दिया है। अब वे आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहे हैं। लोकतंत्र में जनता का इतना उत्पीड़न कभी नहीं हुआ। भाजपा तानशाही चला रही है।

वाराणसी के श्री किशन दीक्षित के साथ नाविक संघ के अध्यक्ष श्री प्रदीप साहनी 'सोनू' पार्षद मिथलेश साहनी 'बच्चा' ने भी अपनी परेशानियां बताई। श्री प्रदीप साहनी 'सोनू' ने बताया कि भाजपा राज में विकास के नाम पर कमजोर वर्ग के लोगों को परेशान किया जा रहा है। यहां विकास की जगह विनाश को बढ़ावा मिल रहा है। राष्ट्रीय अध्यक्ष जी को बताया गया कि वाराणसी के राजघाट के किनारे मछुआरा समाज के लोग

रहते हैं। यहां 50 परिवारों को उजाड़ दिया गया। वाराणसी से श्री मनोज राय धूपचंड़ी ने श्री अखिलेश यादव को बुनकरों के दिन प्रतिदिन बिगड़ते हालात की जानकारी दी। बुनकर प्रतिनिधियों ने बताया कि परेशान हाल कारीगर अब सब्जी बेचने लगे है। समाजवादी सरकार आएगी तभी उन्हें राहत मिल पाएगी। वाराणसी के लूम संचालक श्री इसरार अहमद 'गुल्लू' धागा मशीन चलाने वाले श्री मोइनुद्दीन अंसारी, लूम कारीगर श्री अजीमुद्दीन अंसारी तथा श्री सऊद अहमद के अलावा लूम चलाने वाले हाजी जुबैर एवं परवेज आलम, हाफिज अनवार अहमद साड़ी में लगने वाले धागा के विक्रेता भी श्री अखिलेश यादव की वार्ता के दौरान मौजूद थे।

श्री अखिलेश यादव से वाराणसी के ही श्री अजय फौजी से भी बात हुई। श्री फौजी द्वारा प्रधानमंत्री जी 16 फरवरी 2020 को बीएचयू के रविदास गेट पर को काला झण्डा दिखाने पर पुलिस ने बर्बरता से पिटाई की। उनको कई गम्भीर चोटें आई हैं। श्री अखिलेश यादव ने उनके स्वास्थ्य लाभ की कामना की और कहा कि भाजपा लोकतंत्र में नागरिकों के अधिकारों को कुचलने पर उतारू है। वाराणसी की श्रीमती शालिनी यादव व श्री सत्य प्रकाश सोनकर से अखिलेश यादव जी ने संगठन को मजबूत करने में जुटने के लिए कहा बिजनौर के श्री मज़हर हसन और एरवा कटरा के श्री संतोष से भी पूर्व मुख्यमंत्री जी ने जनसमस्याओं पर चर्चा की। वाराणसी के ही बसंत बहार स्वीटशाप के मालिक श्री शुभम ने बताया कि इन दिनों बिक्री कम हो रही है। लोगों के पास पैसा नहीं है। भाजपा सरकार की गलत नीतियों के चलते अर्थव्यवस्था बुरी तरह

आजम खान के साथ हो रहा बर्ताव अनैतिक एवं अमानवीय

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं सांसद मोहम्मद आजम खान के साथ जो व्यवहार भाजपा सरकार कर रही है वह अनैतिक एवं अमानवीय है। लोकतंत्र में सरकार का आचरण बिना राग द्वेष का होना चाहिए। भाजपा सरकार द्वारा समाजवादी पार्टी के नेताओं को अपमानित करने और यातना देने के लिए झूठे केसों में फंसाया जाता रहा है। भाजपा समझती है कि इससे समाजवादी पार्टी का मनोबल तोड़ा जा सकता है। भाजपा इसमें कभी सफल नहीं हो सकेगी। श्री अखिलेश यादव ने यह बात जनता के नाम 'अगस्त क्रांति की समाजवादी दिशा-बाइस में बाइसिकल' पत्र जारी करने के अवसर पर कही।

उल्लेखनीय है कि राजनैतिक द्वेष में भाजपा सरकार ने श्री आजम खान, उनकी पत्नी डॉ तंजीन फातिमा एवं पुत्र अब्दुल्ला आजम के खिलाफ झूठे मुकदमे दर्ज कर उन्हें जेल में बंद कर रखा है। संवेदनहीनता की हद यह है कि रमजान के पवित्र महीने व बकरीद के पाक मौकों पर भी इन्हें जेल में रखने से भाजपा सरकार ने परहेज नहीं किया जबकि श्री अखिलेश यादव ने मांग की थी कि इन्हें छोड़ा जाए।

दरअसल आजम खान साहब की सियासी शख्सियत से खौफजदा भाजपा उन्हें झूठे मामलों में फंसाकर उन्हें प्रताड़ित कर रही है। जबकि उसे यह अहसास भी नहीं कि समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्यों में से एक आजम साहब के साथ संघर्षों का शानदार इतिहास है। उनका एक लंबा

राजनीतिक संघर्ष रहा है। भाजपा सरकार ने उनके खिलाफ जैसे मामलों में केस दर्ज करवाए हैं वे खुद इंगित करते हैं कि सरकार व सत्तारूढ़ पार्टी की मंशा में खोट है। कई जानकार इन मामलों को हास्यास्पद तक बता चुके हैं।

इन जानकारों का कहना है कि शासन-प्रशासन की इन हरकतों से श्री आजम खान वह शानदार इतिहास नहीं धुल जाएगा जिसमें वे गए कई दशकों से रामपुर और आस-पास की राजनीति का चेहरा बदल देने वाले नायक के तौर पर नजर आते हैं। वे ऐसी शख्सियत हैं जिन्होंने दशकों लोकतंत्र के लिए संघर्ष किया है। आपातकाल में दो वर्ष तक उन्होंने जेल की यातना सही है।

पुलिस-प्रशासन ने मुकदमे दर्ज कराने में मनमानी कि इसके संकेत भी दिखने लगे हैं। रामपुर के डूंगरपुर में कथित तौर पर मकान तोड़ने और लूटपाट करने के मुकदमों में पुलिस ने श्री आजम खान के करीबी माने जानेवालों को जेल भेजा था। वह अब जमानत पर बाहर आने लगे हैं। श्री आजम खान खुद भी मानते हैं कि अंतत: जीत सच्चाई की होगी। उन्होंने जौहर यूनिवर्सिटी के लिए जमीन अधिग्रहीत कराने के मामले में उन्हें सीतापुर कारागार में भेजे गए पुर्नग्रहण नोटिस को लेने से साफ इंकार कर दिया।

आजम खान साहब व उनके परिवार के सदस्यों के खिलाफ सत्तारूढ़ पार्टी के कहने पर पुलिस-प्रशासन द्वारा की जा रही मनमानी कार्रवाई के खिलाफ समाजवादी पार्टी लगातार मुखर है। खुद राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने मोहम्मद आजम खान, उनकी पत्नी डाॅ तंजीन फातिमा एवं

पुत्र अब्दुल्ला आजम की गिरफ्तारी के मुद्दे पर लगातार सरकार को घेरा है जिसका सरकार के पास कोई जवाब नहीं। इन तीनों को जब रामपुर जेल से सीतापुर जेल स्थानांतरित किया गया तो अखिलेश जी तत्काल सीतापुर रवाना हो गए व कारागार में आजम साहब व उनकी पत्नी व पुत्र से मुलाकात की व उनका हालचाल लिया तथा उन्हें अपने एवं पार्टी के समर्थन का भरोसा दिलाया।

श्री यादव लगातार कह रहे हैं कि मोहम्मद आजम खान प्रदेश के प्रतिष्ठित राजनेता हैं। वे 9 बार विधायक, 5 बार मंत्री और एक बार राज्यसभा सदस्य रह चुके हैं। इस समय वह रामपुर से लोकसभा के सदस्य हैं। मौलाना मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय जैसा उच्च शैक्षणिक संस्थान उन्हीं की देन है। उनकी पत्नी भी विधायक हैं। आजम साहब के पुत्र श्री अब्दुल्ला आजम भी विधायक रहे हैं। सरकार इन सबके साथ जो व्यवहार कर रही है वह अशोभनीय है। राज्य में सत्तारूढ़ भाजपा सरकार अपनी संकीर्ण मानसिकता के चलते विपक्ष के नेताओं के प्रति बदले की भावना से काम करने से बाज नहीं आ रही है। रमजान के पवित्र महीने में भी वह इबादत और रोजे की फर्ज अदायगी में बाधा डालने में भाजपा को कोई संकोच नहीं किया। भाजपा सरकार की यह हठधर्मिता है कि मानवीय मूल्यों के पालन से भी वह गुरेज कर रही है।

प्रभावित हुई है।

श्री अखिलेश यादव ने वीडियोकॉलिंग से अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के नौजवान श्री नजीबुर्रहमान से भी वार्ता की। उनसे कहा कि वे नौजवानों के बीच काम जारी रखें। समाजवादी पार्टी युवाशक्ति को सबसे ज्यादा महत्व एवं सम्मान देती है। वे पहली बार वोटर बनने वाले युवाओं से सम्पर्क कर रहे हैं। समाजवादी पार्टी से उन्हें जोड़ा जाएगा। समाजवादी पार्टी के बांदा कार्यालय में जिलाध्यक्ष श्री विजय करन तथा महासचिव श्री आमिर मौजूद थे। उन्होंने श्री अखिलेश यादव को भरोसा दिया कि सन् 2022 में वे जिले की सभी विधानसभा सीटों पर समाजवादी पार्टी की जीत दर्ज कराएंगे।

कन्नौज लोकसभा के अंतर्गत तिर्वा स्थित मिठाई की दूकान के मालिक स्व. मुन्ना बाथम के पुत्र श्री दिनेश बाथम से अखिलेश जी की वार्ता हुई। उन्होंने कहा कि कोई काम धंधा नहीं चल रहा है। सब बेकारी से परेशान हैं। जब वार्ता हो रही थी तो सड़क चलते अन्य लोग भी आ जुटे। मिठाई की दूकान के बगल में एक टेलर मास्टर भी आ गए। उन्होंने अखिलेश जी को नमस्कार किया। छिबरामऊ के श्री मतीन और श्री आमिर से अध्यक्ष जी ने बूथों के बारे में जानकारी ली।

प्रयागराज के युवा नेता श्री देव बोस और श्री राजू बनारस से राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने वार्ता में जनसमस्याओं की जानकारी ली। प्रयागराज की मेजा विधानसभा क्षेत्र के श्री शिव कैलाश ने बताया कि सभी लोग पार्टी के काम में लगे हैं, गांवस्तर पर सबको जोड़ने का काम कर रहे है। साइकिल से यात्रा कर जनसम्पर्क अभियान चलाया जा रहा है। कालपी के सैफ ने जब श्रमिकों के लिए किए गए कामों का ब्यौरा दिया तो अध्यक्ष जी ने राहत कार्य के लिए उन्हें बधाई दी। गाजीपुर के श्री चन्द्रिका यादव से श्री अखिलेश यादव ने 2022 के चुनावों में समाजवादी सरकार बनाने के लिए अभी से काम पर जुट जाने को कहा। गाजीपुर के समाजवादी नेता श्री अमला यादव के निधन के पश्चात उनके भाई से फोन पर श्री अखिलेश यादव की बात हुई। श्री यादव ने शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की।

भाजपा की वर्चुअल रैली में चीनी विद्युत उपकरणों का खुलकर इस्तेमाल हो रहा है। भाजपा द्वारा चीन से आयातित इलेक्ट्रिानिक्स गुड्स का इस्तेमाल भारत की अस्मिता के साथ खिलवाड़ है।

एटा के युवा नेता श्री सागर यादव ने कहा कि पार्टी के युवा कार्यकर्ता सक्रिय हैं। एटा की जनता आपके इंतजार में है।

औरैया और कन्नौज के सीमावर्ती गांव रामगढ़ पुरवा आशा के श्री मोहित यादव ने दिखाया कि नहर में पानी नहीं है। गांव के लोग परेशान हैं। श्री मोहित ने कहा कि समाजवादी सरकार में किसान सुखी थे। फर्रूखाबाद के मन्नन खां ने विश्वास दिलाया कि वे समाजवादी पार्टी की बराबर मदद करते रहेंगे और 2022 में समाजवादी पार्टी की सरकार बनवाएंगे। संतकबीर नगर के पूर्व सांसद श्री सुरेन्द्र यादव के परिवार से श्री मनीष यादव ने बताया कि वे पार्टी संगठन की मजबूती में लगे है। जनता से निरंतर सम्पर्क किया जा रहा है। समाजवादी सरकार के विकास कार्यों से जनता को अवगत करा रहे हैं। इसी जनपद के श्री जयराम पाण्डेय से भी श्री अखिलेश यादव ने बात की। इसके अलावा श्री अजीम खां से भी सम्पर्क किया।

श्री अखिलेश यादव ने वीडियोंकाॅलिंग से आगरा के श्री राजपाल यादव से भी वार्ता की। उनका कहना था कि आगरा में विकास का कार्य सिर्फ समाजवादी सरकार ने किया था। भाजपा सरकार ने तो आगरा को तबाह कर दिया है। नागरिक सुविधाएं अस्तव्यस्त हैं। श्री अखिलेश यादव ने कानपुर के आर्यनगर विधानसभा क्षेत्र से समाजवादी पार्टी विधायक श्री अमिताभ बाजपेयी से वीडियोंकाॅलिंग पर सम्पर्क किया। श्री बाजपेयी ने उन्हें बताया कि भाजपा सरकार में लोग पानी को तरस रहे है। इसके लिए विधायक को धरना देने के लिए विवश होना पड़ा।

कानपुर में अभिमन्यु गुप्ता से श्री अखिलेश यादव ने जब सम्पर्क किया तो उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की व्यापारियों, ठेला-पटरी वालों की आवाज उठाने के लिए प्रशंसा की और आभार व्यक्त किया। श्री

अखिलेश यादव को व्यापारियों ने बताया कि भाजपा की वर्चुअल रैली में चीनी विद्युत उपकरणों का खुलकर इस्तेमाल हो रहा है। भाजपा द्वारा चीन से आयातित इलेक्ट्रिानिक्स गुड्स का इस्तेमाल भारत की अस्मिता के साथ खिलवाड़ है। श्री अभिमन्यु गुप्ता ने बताया कि दुकान खुलने के पहले से ही व्यापारी नकदी के संकट से जूझ रहे है। लाॅकडाउन से पहले खरीदे गए माल के भुगतान के वादे बिक्री न होने के कारण पूरे नहीं हो रहे हैं, जिसके चलते बैंक से चेक बाउंस हो रही है। भाजपा सरकार से जो उम्मीद थी, वह पूरी नहीं हुई। व्यापारियों को पैकेज से क्या मिलेगा? श्री अखिलेश यादव ने उनसे कहा कि चीन ने गलवान घाटी में हमारे सैनिकों की हत्या की इससे सभी देशवासी आक्रोश में है। चीन को आर्थिक क्षति पहुंचाने के लिए उसके आयातित सामान के इस्तेमाल से बचना चाहिए। चीनी उत्पाद का बहिष्कार होना चाहिए। उन्होंने कहा देश की सीमाओं पर खून बहाने वाले वीरों को हमारा नमन है।

श्री अखिलेश यादव ने उन्नाव में पत्रकार शुभम मणि त्रिपाठी की गोली मार कर हत्या किए जाने की निंदा करते हुए कहा है कि उत्तर प्रदेश में माफियाराज है। भाजपा सरकार में पत्रकारों पर हमला आम बात है। पत्रकारिता की स्वतंत्रता भाजपा के कारण खतरे में है। भाजपा लोकतंत्र को भी आतंकित करना चाहती है। बाराबंकी जनपद के विधानसभा क्षेत्र दरियाबाद के मेडिकल स्टूडेंट श्री अगस्त्य पटेल से राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की वार्ता में प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं की दुर्दशा पर चर्चा हुई। श्री अगस्त्य पटेल बांदा के मेडिकल कालेज में एमबीबीएस तृतीय वर्ष के छात्र हैं। श्री पटेल ने चिकित्सा क्षेत्र में नौजवानों के सामने आ रही कठिनाइयों के बारे में बताया और समाजवादी सरकार के समय की सुविधाओं का जिक्र किया।

अखिलेश जी ने लखनऊ के श्री अभय यादव से नौजवानों की गतिविधियों एवं रोजगार के बारे में बात की जबकि फतेहपुर के श्री परवेज से उन्होंने क्षेत्रीय गतिविधियों पर चर्चा की। सुल्तानपुर के श्री दीपू श्रीवास्तव ने बताया कि इस क्षेत्र में प्रवासी श्रमिक बड़ी संख्या में आए है जो बड़ी परेशानी में दिन काट रहे हैं। भाजपा सरकार उनकी समस्याओं की तरफ ध्यान नहीं दे रही है।

रोजगार दुश्वार बेकाबू भ्रष्टाचार

दुष्यंत कबीर

उत्तर प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी सरकार के कार्यकाल का बड़ा हिस्सा निकल गया लेकिन नौकरियां देने के नाम पर सिर्फ हवा-हवाई घोषणाएं ही हुई हैं। सरकार की अदूरदर्शिता और पक्षपातपूर्ण नीतियों के चलते उद्योग चौपट है, खेती बर्बाद है और रोजगार का कही अतापता नहीं। इन्वेस्टमेंट मीट में अरबों रूपए फूंक कर एक सुई का कारखाना तक भाजपा सरकार नहीं लगवा सकी। फिर भी करोड़ों को नौकरी देने का झूठा प्रचार कर युवाओं व श्रमिकों को धोखा दिया जा रहा है।

युवाओं को रोजगार तो नहीं मिला अलबत्ता भर्तियों में अनियमितताओं की गंभीर शिकायतें सामने आ रही हैं। प्रदेश की भाजपा सरकार से युवाओं को नाउम्मीदी के अलावा और कुछ नहीं मिला। सन् 2017 से सन् 2020 तक एक भी नौकरी में भर्ती नहीं हुई। हर नौकरी भ्रष्टाचार की शिकायतों से भरी रही।

भ्रष्टाचार का आलम यह है कि सचिवालय से ही रैकेट संचालित हो रहा है जहां ठेका देने के नाम पर करोड़ों की रिश्वतखोरी हो रही है। प्रदेश के पशुधन विभाग में टेंडर दिलवाने के नाम पर करोड़ों का फर्जीवाड़ा किया गया। इसकी पूरी साजिश सचिवालय में बैठकर रची

गई अौर घोटाले को अंजाम दिया गया, लेकिन जिम्मेदार बेफिक्र रहे।

दरअसल भाजपा के सत्ता में आने के साथ ही घोटाले भी शुरू हो गए। पीडीएस घोटाला, 69000 शिक्षक भर्ती घोटाला, स्कूली बच्चों के लिए जूते-मोजो में घोटाला, डीएचएलएफ घोटाला, होमगार्ड घोटाला के साथ पीडब्लूडी, पंचायतीराज और बाल विकास पुष्टाहार घोटाले हैं जो काफी चर्चित हो चुके हैं। सबसे आश्चर्य जनक तो यह है कि तमाम घोटाले सचिवालय की परिधि में ही हुए हैं और उनमें मंत्रियों का स्टाफ भी संलिप्त पाया गया है। भाजपा सरकार के पास इस बात का क्या जवाब है कि सचिवालय में बैठकर जो भी लोग पशुधन घोटाले को अंजाम दे रहे थे उनको सचिवालय में बैठने की जगह किसने दी? जहां बैठकर घोटाला हो रहा था वहां से मंत्री और उपमुख्यमंत्री का कक्ष कितनी दूरी पर है? सचिवालय में अलग से एक दफ्तर ही खुल जाए और किसी की उस पर नज़र ही न पड़े यह तो तभी सम्भव होगा जबकि ऊपर के बड़े लोग भी उसमें चल रहे ठगी के धंधे के कहीं न कहीं भागीदार होंगे?

भाजपा सरकार ने कोरोना काल में सरकारी नीतियों के कारण त्रस्त होकर उत्तर प्रदेश लौटे प्रवासी श्रमिकों के दर्द को भी अपने प्रचार के वास्ते इवेंट बना दिया है। भाजपा सरकार ने 1.25 करोड़ लोगों को रोजगार देने का जो इवेंट किया वह किसी ड्रामा से कम नहीं। ऐसा ड्रामा किया जिसकी दूसरी मिसाल मिलना मुश्किल है। लाॅकडाउन हो या फिर अनलाॅक भाजपा सरकार श्रमिकों में विश्वास जगाने में पूर्णतया असफल रही है। मुख्यमंत्री प्रदेश में एक करोड़ से ज्यादा रोजगार देने का दावा कर रहे हैं परन्तु इसका ब्यौरा नहीं है कि कहां कितनों को कौन काम मिला है? बस हवाई आंकड़े ही पेश किए जा रहे है। यह श्रमिकों के साथ धोखा है।

उत्तर प्रदेश में राज्य सरकार कई इन्वेस्टमेंट मीट करा चुकी, कई एमओयू होने की खबरे छपीं, लेकिन अभी तक कहीं एक भी कारखाना लगने की सूचना नहीं है। किसी बैंक ने किसी उद्योगपति को लोन नहीं दिया। कहीं भूमि अधिग्रहण की कार्यवाही नहीं शुरू हुई। रोजगार हवा में दिया जा रहा है। इस सरकार के तथाकथित आत्मनिर्भर रोजगार का बड़ा झूठ यह है कि यहां पहले से कुम्हार, हलवाई, राजमिस्त्री आदि अपने धंधे करते रहे हैं। नोटबंदी के बाद लाॅकडाउन ने उनका कामकाज ठप्प कर दिया है। प्रदेश की भाजपा सरकार लघु और छोटे उद्योगों की केवल प्रेस विज्ञप्तियों में चिंता करती है अन्यथा उसका सारा ध्यान बड़े उद्योगपतियों के आवभगत में रहता है। श्रमिकों को एक हजार रुपए की राहत देने से उनकी जिंदगी में कौन-बदलाव आएगा? रोजगार के लिए जब तक उचित वातावरण नहीं बनेगा कोई उद्योगपति उत्तर प्रदेश में क्यों आएगा? यहां जीएसटी, नोटबंदी, लाॅकडाउन के अलावा कानून व्यवस्था की बिगड़ी स्थिति चिंता पैदा करती है।

उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री करोड़ों को रोजगार देने का दावा तो कर रहे है पर कहां किसको रोजगार मिल रहा है, इसका आंकड़ा नहीं है। जो बाहर से आए हैं वे सब अकुशल श्रमिक ही नही हैं, कुशल कारीगरों को कहां रोजगार मिल रहा है? जबकि प्रदेश में उद्योग अभी चल नहीं रहे हैं। नए उद्योग लग नहीं रहे है। पूंजी निवेश की कहानियां तो बताई जाती हैं पर जमीन पर कुछ अता पता नहीं है। उत्तर प्रदेश में लोगों के पास काम-कारोबार नही है, रोजगार नही है। रोजगार न मिलने से इटावा में मुम्बई से लौटे युवक ने खुदकुशी कर ली। उसका शव पेड़ पर लटका मिला। बांदा में भी एक मजदूर ने फांसी लगा ली। विधूना में 35 वर्षीय प्रिंस एक दूकान में काम करता था, नौकरी छूटने पर उसने आर्थिक तंगी से परेशान होकर आत्महत्या कर ली। उसका एक साल का बेटा है। ये घटनाएं मुख्यमंत्री के रोजगार के दावों की पोल खोलती है और जनमानस को विचलित करती हैं।

वस्तुतः झूठ ही भाजपा का सच है। आखिर श्रमिक यह क्यों कह रहे हैं कि अगर उत्तर प्रदेश में रोजगार की व्यवस्था होती तो वह वापस क्यों जाने की सोचते? प्रदेश में अन्य जगहों से केवल अकुशल श्रमिक ही नहीं आए हैं उनमें कई कुशल श्रेणी के लोग भी हैं। कोई उद्योग लगा नहीं है जहां भाजपा सरकार उन्हें खपाएगी? रोजगार के झूठे दावों की वजह से ही भाजपा सरकार आज तक नए औद्योगिक संस्थानों का ब्योरा नहीं दे पाई है। नौजवानों को रोजगार नहीं मिलने से उनके सामने भविष्य का अंधेरा है।

जब पहले से ही युवा बेरोजगार घूम रहा है तब दूसरे प्रदेशों से आए युवाओं को कहां रोजगार मिल पाएगा? जब बड़े संस्थान नहीं तो कुशल कार्मिको को कहां नौकरी मिलेगी? बहुत से श्रमिक फिर वापस जाने को बेताब हैं। अंततः उन्हें वापस फिर दूसरे प्रदेशों में जाना पड़ेगा, जिसकी शुरअात हो भी

चुकी है। स्थानीय कारीगरों के लाभ के लिए समाजवादी सरकार में लखनऊ में अवध शिल्पग्राम की स्थापना की गई थी भाजपा सरकार के समय वहां सन्नाटा पसरा रहता है। सिंगल अथवा डबल इंजन की सरकारें सिर्फ सपने दिखाने और लोगों को बहकाने में माहिर है।

उत्तर प्रदेश में मनरेगा का काम कई जनपदों में तीन वर्ष से बंद है। मनरेगा में काम करने वाले मजदूर को इस बीच कोई दूसरा काम भी नहीं मिल पाया। इससे इन तमाम श्रमिकों की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई है। किसी तरह कर्ज लेकर अपने परिवार के लिए वे दो वक्त की रोटी भी जुटाना मुश्किल हैं। वैसे भी मनरेगा में एक वर्ष में 100 दिन ही काम कराने की व्यवस्था है। ऐसे तमाम श्रमिक जो 265 दिन बिना कोई काम रहते हैं अर्द्ध बेकारी के शिकार हैं। उन्हें लगभग बेरोजगारों की श्रेणी में भी रखा जा सकता है। दरअसल, जिस तरह भाजपा ने धोखे से सरकार बनाई, झूठे वादों पर लोगों को बहकाया, उसी तरह वह रोजगार के मामले में भी धोखा दे रही है। उत्तर प्रदेश विकास के मामले में पिछड़ता जा रहा है।

जनता की बदहाली पर अर्थव्यवस्था की बिगड़ती स्थिति पर, नौजवानों में बढ़ती हताशा पर केन्द्र-राज्य की भाजपा सरकारें ध्यान देने के बजाय अव्यवहारिक और अवास्तविक अभियान चलाकर अपनी विफलता को छुपाना चाहती है। इससे बेखबर प्रधानमंत्री और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बस एक दूसरे की प्रशंसा कर के खुश हो रहे है। उनके अच्छे दिन चल रहे हैं जबकि जनता दुःखी, हताश एवं निराश है।

69,000 शिक्षक भर्ती में भारी गड़बड़ियां

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश के परिषदीय प्राथमिक स्कूलों में 69000 सहायक अध्यापक भर्ती में 37,339 पद खाली रखने का आदेश सुप्रीम कोर्ट ने दिया है। हकीकत यह है कि खाली 1.37 लाख पद तीन साल में भी नहीं भरे जा सके हैं।

69000 सहायक अध्यापक भर्ती परीक्षा में अनियमितताओं का आलम यह रहा कि सामान्य वर्ग के कई अभ्यर्थियों का चयन अन्य पिछड़ा वर्ग अभ्यर्थी के रूप में हुआ। लिहाजा यह माना जा रहा है कि आरक्षण व्यवस्था भी मानी नहीं गई।

भाजपा सरकार में बेसिक शिक्षा विभाग की 69,000 शिक्षक भर्ती में अनियमितता के कई आरोप हैं। ऊंची मेरिट वाले अभ्यर्थियों का भी नाम फर्जीवाड़े में आने के बाद भर्ती में पारदर्शिता के सरकारी दावों पर सवाल हैं। परीक्षा में सेटिंग और पर्चा आउट करवाने वाले गिरोह का खुलासा हुआ है। पैसे देकर पास होने के आरोप सामने आए हैं। शिक्षक भर्ती की लिखित परीक्षा का रिजल्ट आने के बाद ही कई अभ्यर्थियों के नतीजों पर सवाल उठे। इन अभ्यर्थियों की अकादमिक परीक्षाओं में प्रदर्शन बहुत खराब था पर लिखित परीक्षा में उनके नंबर काफी अधिक थे। ऐसे भी टॉपर बने जिन्हें 150 में से 142 नंबर मिले लेकिन उन्हें राष्ट्रपति का नाम तक पता नहीं। कुछ ऐसे भी सफल अभ्यर्थियों के नाम सामने आए जिन्होंने एक ही सेंटर पर परीक्षा दी और एक ही परिवार से जुड़े हैं। ऐसे तथ्य सामने आए हैं कि पास करवाने का ठेका लेने वाले गिरोह के सदस्य परीक्षा पास कराने से लेकर काउंसिलिंग व नियुक्ति कराने तक का ठेका लेते थे। अलग-अलग विभाग के अधिकारियों से मिलीभगत करके खेल करते थे।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि उत्तर प्रदेश में कोरोना संकट से निबटने में नाकामयाब भाजपा सरकार अब अपने घोटालों पर पर्दा डालने की तिकड़म में लग गई है। उसकी जीरो टालरेंस नीति एक मजाक बन गई है। चाहे वह 69000 शिक्षक भर्ती का मामला हो या एक नाम से अनेक नौकरी करने या पशुधन मंत्री के निजी सचिव द्वारा ठेकेदारी घोटाला अथवा रामपुर में मोहम्मद आजम खां की जांच हो। अखिलेश जी ने कहा है कि अपनों को बचाने और दूसरों को फंसाने की भाजपा की नीति के लिए भी एक एसटीएफ जांच होनी चाहिए।

'पढ़ाई नहीं तो फीस नहीं, और परीक्षा भी नहीं'

समाजवादी छात्रसभा ने किया जोरदार प्रदर्शन

बुलेटिन ब्यूरो

'पढ़ाई नहीं तो फीस नहीं, और परीक्षा भी नहीं' की मांग को लेकर समाजवादी छात्रसभा के नौजवानों ने राजधानी लखनऊ में हजरतगंज स्थित गांधी जी की प्रतिमा पर 22 जून 2020 तो जोरदार प्रदर्शन किया।

समाजवादी छात्रसभा के निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष श्री दिग्विजय सिंह 'देव' सहित बड़ी संख्या में नौजवानों को पुलिस ने बलपूर्वक प्रदर्शन से रोका और उन्हें गिरफ्तार कर लिया। भाजपा सरकार की छात्र-युवा विरोधी नीतियों के चलते प्रदेश में व्यापक असंतोष है समाजवादी छात्रसभा दो सप्ताह पूर्व छात्रों की मांग को लेकर एडीएम के माध्यम से महामहिम राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन दे चुकी थी। सरकार के कान न देने पर प्रदर्शन किया गया।

पुलिस द्वारा बल प्रयोग कर जबरन गिरफ्तार किए जाने के पूर्व श्री दिग्विजय सिंह देव ने मुख्यमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन भी दिया, जिसमें कहा गया है कि कोरोना संकट और लाॅकडाउन के चलते शिक्षण संस्थाएं बंद रहीं। समाजवादी छात्र सभा की मांग है कि छात्र-छात्राओं की सभी प्रकार की फीस माफ की जाए। छात्रावास के कमरों के किराये का भुगतान सरकार करे। बिना परीक्षा अगली कक्षा में छात्र-छात्राओं को प्रोन्नति दी जाए तथा सन् 2020-21 के सत्र में प्रवेश लेने वाले छात्रों को शुल्क में विशेष छूट दी जाए।

ज्ञापन में यह भी कहा गया है कि कोरोना संकट में शिक्षण संस्थान बंद रहे हैं। आर्थिक एवं सामाजिक जीवन अस्तव्यस्त हुआ है। प्रारम्भिक कक्षाओं से लेकर उच्चस्तर तक की कक्षाओं का संचालन बंद रहा है। लाखों छात्र घरों में बंद है। ऑनलाइन शिक्षण तकनीकी कठिनाइयों के चलते उपयोगी नहीं है। प्रदेश में कोरोना महामारी का प्रकोप घटने के बजाय बढ़ रहा है। छात्र-छात्राएं अपने भविष्य को लेकर चिंतित है। समाजवादी छात्रसभा ने इस सम्बंध में पोस्टकोर्ड अभियान भी चलाया था। प्रदर्शन में महेन्द्र यादव, कांची सिंह, प्रियंका इंसान, अनिल यादव मास्टर, हर्ष वशिष्ठ, सुमित पाल, सुब्रत अवस्थी, अमर सिंह, यादव, सोमिल सिंह, परवेज आलम, शिवम, अश्विनी वर्मा सहित तमाम छात्र-छात्राओं ने भाग लिया और गिरफ्तारी दी।

भाजपा राज में कमरतोड़ महंगाई सड़कों पर उतरे समाजवादी

बुलेटिन ब्यूरो

देश व उत्तर प्रदेश में जबसे भाजपा सरकार सत्ता में आई है जनता की परेशानियां बढ़ी हैं। महंगाई का मुंह रोज-ब-रोज बढ़ता ही जा रहा है। खाद्य वस्तुओं की कीमतें आसमान छू रही हैं। पेट्रोल-डीजल के दाम लगभग रोज ही बढ़ रहे हैं। किसान और जनता पेट्रोल-डीजल की कीमतें बढ़ने से बुरी तरह प्रभावित हैं। अभी बदहाली के इस दौर से लोग निकल नहीं पा रहे हैं कि अब ईंधन गैस और बिजली की दरें बढ़ाकर लोगों पर भारी बोझ डाल दिया गया है।

पेट्रोल-डीजल के दामों में बढ़ोत्तरी से किसान सबसे ज्यादा परेशानी झेल रहा है। कृषि यंत्र, डीजल-पेट्रोल से चलते हैं। सब्जी की फसल, खेत, बगीचे, फूलों में भी किसान पानी नहीं लगा पा रहे है। किसान की आमदनी का कोई रास्ता नहीं निकल रहा है। किसान के ट्रैक्टर तथा अन्य परिवहन साधन पेट्रोल-डीजल की मंहगाई के चलते खड़े हैं। किसान की मूलभूत आवश्यकता की अनदेखी कर भाजपा सरकार उसे गहरे आर्थिक संकट में ढकेल रही है।

सरकार की इस मनमानी का समाजवादी पार्टी लगातार डटकर विरोध कर रही है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर समाजवादी पार्टी के युवा संगठनों की ओर से 26 जून 2020 को राजधानी लखनऊ में कानपुर सहित प्रदेश के विभिन्न जनपदों में पेट्रोल-डीजल के दामों में असाधरण वृद्धि, बढ़ती मंहगाई और भ्रष्टाचार तथा किसानों और नौजवानों के उत्पीड़न के विरोध में जोरदार

प्रदर्शन हुए।

इससे बौखलाई भाजपा सरकार के इशारे पर पुलिस ने लखनऊ में समाजवादी नौजवानों पर, जो शांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्शन कर रहे थे, बेरहमी से हमला कर दिया। नौजवानों को पीटा गया। लाठी चार्ज किया गया। घायल युवा नेताओं का उपचार कराने के बजाय उन्हें गिरफ्तार कर थाने में बंद कर दिया गया। नौजवानों पर झूठे केस भी दर्ज कर दिए गए हैं। पुलिस ने ट्रैक्टर तथा सपा की झंडा लगी कई गाड़ियां भी सीज कर दी।

भाजपा ने पहले तो डीजल-पेट्रोल तथा ईंधन गैस के दामों में असाधारण वृद्धि कर जनता की कमर तोड़ दी अब प्रदेश में बिजली भी मंहगी करने की तैयारी हो गई है। पिछले 6 सालों से भाजपा केन्द्र में सत्तासीन है। उसने डीजल पर उत्पाद कर में नौ गुना वृद्धि की है। सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम गिरने के बावजूद देश में दाम कम नहीं किए। उसने स्वयं मुनाफाखोरी का यह एक अजब उदाहरण पेश किया है।

भाजपा ने नोटबंदी-जीएसटी लागू कर पूरे देश में व्यापारिक गतिविधियों को पहले ही अवरूद्ध कर दिया है। कारोबारी उसकी मार से अभी तक उभर नहीं पा रहे हैं। औद्योगिक संस्थानों में कर्मचारियों की छंटनी हो गई। कोरोना संकट के साथ लाॅकडाउन ने तो जीवन को ही अस्तव्यस्त कर दिया। छोटे-मोटे कारोबारियों की दूकानें भी बंद हो गई। प्रदेश में चारों ओर अव्यवस्था फैली हुई है लेकिन सरकार इससे बेखबर।

सरकार की कुंभकर्णी नींद तोड़ने के लिए समाजवादी पार्टी के नौजवान सड़क पर उतरे।

नौजवान नारे लगा रहे थे कि वैश्विक महामारी के इस दौर में मंहगाई दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है परन्तु भाजपा सरकार उस

डीजल पर उत्पाद कर में नौ गुना वृद्धि की है। सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम गिरने के बावजूद देश में दाम कम नहीं किए। उसने स्वयं मुनाफाखोरी का यह एक अजब उदाहरण पेश किया है।

पर लगाम लगाने में असमर्थ है। प्रदेश में जनाक्रोश फैल रहा है। भाजपा की दमनकारी जनविरोधी नीतियां निंदनीय है। समाजवादी युवा संगठनों के सैकड़ों नौजवानों ने नारे लगाते हुए लखनऊ में लोकभवन पर प्रदर्शन किया।

लोहिया वाहिनी, यूथ ब्रिगेड और युवजन सभा के नौजवान अपनी सांकेतिक असहमति जताने के लिए ट्रैक्टर के साथ वहाँ गए थे। समाजवादी युवा लगातार नारे लगा रहे थे- पेट्रोल-डीजल के दाम कम करो, महिलाओं पर अत्याचार कम करो, मंहगाई कम करो, जनता पर अत्याचार बंद करो। प्रदर्शन का नेतृत्व युवजन सभा के प्रदेश अध्यक्ष अरविन्द गिरि, लोहिया वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष राम करन निर्मल तथा यूथ ब्रिगेड के प्रदेश अध्यक्ष अनीस राजा ने किया।

इन युवा नेताओं ने कहा कि भाजपा सरकार कोरोना संकट की आड़ में जनता पर मंहगाई लादने और उनको आर्थिक रूप से परेशान करने में लगी है। वह लोकतांत्रिक ढंग से शांतिपूर्ण प्रदर्शन को भी कुचलकर अपनी तानाशाही लादने में लगी है। उसका रवैया युवा विरोधी है। नौजवानों पर बर्बरता से लाठीचार्ज करना निंदनीय है। पेट्रोल-डीजल के दाम से किसानों की सिंचाई की लागत बढ़ेगी। परिवहन मंहगा होने से उपभोक्ता वस्तुएं मंहगी होगी। केवल पेट्रोल कम्पनी के अच्छे दिन आएंगे।

युवा संगठनों की ओर से महामहिम राज्यपाल को जिलाधिकारी द्वारा प्रेषित ज्ञापन में मांग की गयी कि पेट्रोल-डीजल की कीमतों में हुई वृद्धि वापस ली जाए, कानपुर शेल्टर होम की घटना की सीबीआई जांच हो, शिक्षक भर्ती घोटाले की जांच हो, ओवर लैपिंग का अनुपालन हो, गन्ना किसानों का बकाया मूल्य का भुगतान हो, कानून व्यवस्था सुदृढ़ हो, दलित-पिछड़ों व समाजवादी पार्टी कार्यकर्ताओं का दमन बंद हो तथा कोरोना महामारी के कारण बेरोजगार नागरिकों को रोजगार उपलबध कराया जाए। समाजवादी युवा संगठनों के नौजवान कार्यकर्ताओं ने कानपुर, वाराणसी, प्रयागराज, हरदोई, कन्नौज, हापुड़, बस्ती, देवरिया, रायबरेली, बागपत, अयोध्या, श्रावस्ती, संतकबीरनगर, गोण्डा, शाहजहांपुर, कुशीनगर, अलीगढ़, मेरठ, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, इटावा, बरेली आदि जनपदों में भी मंहगाई, डीजल मूल्य वृद्धि के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन कर भाजपा सरकार की जनविरोधी, दमनकारी नीतियों का विरोध किया।

भाजपा सरकार में युवाओं से छल

"कहाँ तो तय था चराग़ाँ हर एक घर के लिये
कहाँ चराग़ मयस्सर नहीं शहर के लिये"

ऋचा सिंह

पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष,
इलाहाबाद केंद्रीय विवि

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार के वादों और उसके इरादों पर दुष्यंत कुमार जी की यह पंक्तियां बिल्कुल सटीक बैठती हैं।

भारतीय जनता पार्टी ने 2017 के चुनावी घोषणा पत्र में वादा किया था कि अगले 5 वर्षों में 70 लाख रोजगार, हर घर के एक सदस्य को कौशल विकास का प्रशिक्षण, प्रदेश में 10 अंतरराष्ट्रीय स्तर के विश्वविद्यालय और 25 मेडिकल कॉलेज और 6 नये एम्स। वादा ये भी था कि गरीब छात्रों के लिए 500 करोड़ रुपए का बाबा साहब अंबेडकर कोष और 1000 करोड़ रुपए के स्टार्टअप फंड वेंचर कैपिटल स्थापित करने का। किन्तु सर्वविदित है कि भाजपा सरकार के वादे और इरादों में कोई सामंजस्य नहीं है।

चुनावी वादों को याद कर आज उत्तर प्रदेश का युवा अपने आप को ठगा और छला महसूस कर रहा है। प्रदेश की भाजपा सरकार, नौकरियां देने की बजाय नौकरी छीनने की नीतियों पर कार्य कर रही है।

देश का सबसे बड़ा सूबा उत्तर प्रदेश पिछले तीन सालों से बेरोजगारी, अपराध, महिलाओं पर हिंसा, भ्रष्टाचार, उद्योग धंधों में भारी गिरावट आदि समस्याओं में डूबा दिखाई पड़ता है और दिन-ब-दिन ये समस्याएं विकराल होती चली जा रही है। इन सब समस्याओं में सबसे प्रमुख समस्या है, प्रदेश में तेजी से बढ़ती बेरोजगारी।

अगर पिछले तीन साल के बेरोजगारी के आंकड़ों पर थोड़ा सा प्रकाश डाला जाए तो पता चलता है कि किस प्रकार उत्तर प्रदेश का युवा बेरोजगारी के दलदल में दिन-ब-दिन धंसता जा रहा है । रोजगार के अवसरों का विश्लेषण किया जाए तो पता चलता है कि उत्तर प्रदेश में शिक्षित- अशिक्षित के बीच ,ग्रामीण-शहरी क्षेत्र में, महिला-पुरुष के बीच तीन साल में रोजगार के अवसरों में जबरदस्त गिरावट आयी है ।उत्तर प्रदेश का युवा और छात्र बेरोजगारी की मार से इस हद तक परेशान और हताश हो चला है की

आत्महत्या जैसे घातक कदम उठाने लगा है। आए दिन प्रदेश के किसी न किसी कोने से

युवाओं की आत्महत्या जैसी घटनाएं पड़ती रहती हैं।

यह प्रदेश का दुर्भाग्य नहीं तो क्या है, जब नौकरी के नाम पर पढ़े लिखे और उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं को भाजपा सरकार मनरेगा-मजदूरी के लिए प्रेरित कर रही है। सरकार का कहना है कि डिग्री पास छात्रों को अगर रोजगार चाहिए तो वह मजदूरी क्यों नहीं कर लेते। यह शर्मनाक है ! पिछले दिनों ही समाचार पत्रों में छपा कि मेरठ जिले में डिग्री प्राप्त छात्रों को रोजगार के नाम पर मजदूरी का काम दिया गया ।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सत्ता संभालने के साथ ही प्रदेश के युवाओं को अयोग्य करार कर दिया था । मुख्यमंत्री जी ने कहा - "प्रदेश में नौकरियां तो बहुत हैं लेकिन योग्य छात्रों की भारी कमी है, अतः सरकारी भर्तियां पूरी नहीं हो पा रही है" । यह बयान न सिर्फ बेहद निदंनीय है बल्कि युवा शक्ति को हतोत्साहित करने वाला है। इतिहास में पहली बार हुआ है कि जिस प्रदेश ने हजारों- हजार नौकरशाह, शिक्षाविद, न्यायमूर्ति, डॉक्टर, इंजीनियर या अन्य सभी क्षेत्रों के विशेषज्ञ देश को दिये हैं, उस प्रदेश के युवाओं को सार्वजनिक मंच से प्रदेश के मुखिया ने अयोग्य कहा हो।

अगर हम उत्तर प्रदेश सरकार की नीतियों पर गौर करें और सरकार के ज़िम्मेदार लोगों की बयानबाजी को याद करें तो स्पष्ट होता है कि भाजपा सरकार बेरोजगारी के महा दानव से निपटने में पूरी तरह से ना सिर्फ विफ़ल है, बल्कि बेरोजगारी की समस्या के प्रति उदासीन भी है। बढ़ती बेरोजगारी के सामने सरकार बेबस और लाचार है। मुख्यमंत्री योगी जी के लिए बेरोजगारी कोई समस्या ही नहीं है और अगर है भी तो इस समस्या के ज़िम्मेदार प्रदेश के युवा और छात्र स्वयं हैं।

उत्तर प्रदेश में बेरोजगारी के आंकड़ों पर एक नज़र

उत्तर प्रदेश में बेरोजगारी के आंकड़े बताते हैं कि योगी सरकार के सत्ता संभालते ही साल दर साल बेरोजगारी दर में भारी वृद्धि हुई है। पिछले तीन सालों में बेरोजगारी दर और बेरोजगारों की संख्या अपने चरम पर है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनामी (CMIE) के अनुसार 2020 जनवरी से अप्रैल के बीच बेरोजगारी दर उत्तर प्रदेश में 11.8% तक पहुंच गई है। यह बेरोजगारी दर 2019 के इस अवधि में 9.6% थी और 2018 में 4.4% थी। जिसका मतलब है कि पिछले 2 साल में बेरोजगारी की दर में 7% का भारी इजाफा हुआ है, प्रदेश में रोजगार की समस्या बढ़ी है और रोजगार के अवसर और साधनों में जबरदस्त कमी आयी है।

अगर बेरोजगारी के आंकड़ों की तुलना पिछली समाजवादी पार्टी की सरकार के कार्यकाल से की जाए तो भाजपा सरकार में स्थिति भयावह दिखाई पड़ती है। जहां सपा सरकार के कार्यकाल के अंत में बेरोजगारी दर जनवरी से अप्रैल 2017 में मात्र 3.8% थी वहीं बेरोजगारी दर पिछले 3 साल में जनवरी से अप्रैल 2020 की अवधि में बढ़कर 11.8% हो गई है। इसका सीधा मतलब है कि पिछली समाजवादी सरकार के मुकाबले बीजेपी सरकार के तीन के कार्यकाल में बेरोजगारी में 3 गुना का

इजाफा हुआ है।

आंकड़े बताते हैं कि तीन साल पहले के मुकाबले आज रोजगार के अवसर 3 गुना कम हो गए हैं। अगर शैक्षिक योग्यता के आधार पर बात की जाए तो स्पष्ट होता है कि पढ़े-लिखे युवाओं में बेरोजगारी का स्तर लगातार बढ़ता जा रहा है। ग्रेजुएट / उच्च शैक्षिक योग्यता रखने वाले युवाओं की स्थिति में तेज़ी से गिरावट आयी है और उनमें बेरोजगारी दर वर्तमान में 20% तक पहुंच गई है।

यही उच्च शिक्षा में बेरोजगारी दर 2017 की शुरुआत में मात्र 7.6% हुआ करती थी। यहां भी आंकड़े बताते हैं की योगी सरकार के कार्यकाल में उच्च शिक्षित युवाओं में भी बेरोजगारी दर का लगभग 3 गुना का इजाफा हुआ है और रोजगार के अवसर पहले के मुकाबले 3 गुना कम हो गए हैं।

रोजगार के मामले महिलाओं की स्थिति पुरुषों के मुकाबले, शहर और ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में भयावह हुई है और उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाएं, पुरुषों के मुकाबले 4 गुना ज्यादा बेरोजगार हैं।

सरकारी भर्तियों में गिरावट

भाजपा सरकार के कार्यकाल में सरकारी भर्तियों में जबरदस्त गिरावट आयी है। स्वरोजगार के संसाधनों और अवसरों में भी भारी गिरावट दिखाई पड़ती है। पिछले तीन साल में प्रदेश में ना के बराबर इन्वेस्टमेंट हुआ है और न ही कहीं नए उद्योग धंधे- और कारखाने लग रहे हैं। इस सबके ऊपर प्रदेश की ख़स्ताहाल आर्थिक स्थिति ने बेरोजगारी की समस्या को और विकराल कर दिया है।

पिछले तीन सालों में प्रदेश में सरकारी भर्तियों में ज़बरदस्त अनियमितताएं एवं भर्ष्टाचार देखने को मिला है। कक्षा 5 योग्यता वाली नलकूप भर्ती परीक्षा से लेकर शिक्षक भर्ती से लेकर प्रतिष्ठित पीसीएस तक की परीक्षाओं के पेपर आउट हो रहे हैं। जो छात्र

जब जब प्रदेश का युवा अपने सवाल और न्याय की मांग लेकर सड़कों पर आता है तो उससे 'निपटने' और अपने भ्रष्टाचारी मुखौटे पर पर्दा डालने के लिये सरकार पुलिस बल को आगे कर देती है।

परीक्षा में नहीं बैठे, देश के राष्ट्रपति का नाम नहीं जानते, उनके नाम रिजल्ट में सबसे ऊपर है। एक के बाद एक परीक्षा में बड़ा घोटाला हुआ और नकल माफियाओं के बड़े तंत्र के कारण सरकारी भर्तियां बड़े पैमाने पे फंसी हुयी हैं। सबसे बड़ी बात है की इस पूरे भर्ष्टाचारी तंत्र के संचालन में भाजपा के कई सफेदपोश लोगों का नाम शामिल है जो लगातार रोज़गार के क्षेत्र में भ्रष्ट तंत्र को न सिर्फ बढ़ावा दे रहे हैं, बल्कि संरक्षण भी दे रहे हैं। अतः पूरे प्रदेश में लाखों-लाख भर्तियां ठप्प पड़ी हुई हैं।

सिपाही भर्ती से लेकर शिक्षक भर्ती, पीसीएस तक की परीक्षाएं भाजपा सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार और नाकामी के कारण लटकी हुई हैं। अकेले पुलिस विभाग में ही लाखों पद खाली पड़े हुए हैं । हाल ही में 69000 शिक्षक भर्ती में व्याप्त भ्रष्टाचार ने तो अनियमितताओं और भ्रष्टाचार की सारी सीमाओं को ही तोड़ दिया है।

सूबे के युवाओं के साथ छल की हद तो तब हो गयी है जब परीक्षाओं में गड़बड़ी, भ्रष्टाचार, अनियमितताओं के स्पष्ट प्रमाण होने के बावजूद सरकार रोज़गार के झूठे आंकड़ों के साथ आये दिन अपनी पीठ थपथपाने का काम कर रही है। जब जब प्रदेश का युवा अपने सवाल और न्याय की मांग लेकर सड़कों पर आता है तो उससे 'निपटने' और अपने भ्रष्टाचारी मुखौटे पर पर्दा डालने के लिये सरकार पुलिस बल को आगे कर देती है।

'निपटने' और 'निपटा' देने वाले शब्दों का सहारा लेकर प्रदेश के मुखिया आये दिन विभिन्न मंचो से प्रदेश के युवाओं को धमकाते नज़र आते हैं। जब भी छात्र-छात्राएं भर्तियों की मांग को लेकर सड़कों पर आते हैं तो उन पर ही अराजकता का आरोप लगा दिया जाता है। जायज़ मांगों को लेकर धरना प्रदर्शन करने वाले युवाओं पर आये दिन झूठे मुकदमे लाद दिए जाते हैं और पुलिसिया दमन किया जाता है । इलाहाबाद से आने वाले एक कैबिनेट मंत्री ने तो विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों को गुंडा और क्रिमिनल तक बता दिया था। प्रदेश सरकार के यह सभी युवा विरोधी कृत्य और बयानबाजी उनकी दूषित मानसिकता को दर्शाती हैं।

सरकारी नौकरी की उम्मीद लिए गांव से

शहर आए युवा दिन-ब-दिन निराशा,

परेशानी और हताशा के माहौल से घिरते जा रहे हैं । शहर में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवा, भाजपा सरकार में तिहरी मार झेल रहे हैं। जहां एक ओर सरकारी भर्तियां रुकी पड़ी हुई हैं और छात्र बेरोजगार हैं, वहीं दूसरी ओर रोज़गार पर सवाल उठाने के लिए छात्रों को आए दिन पुलिस की बर्बरता का सामना करना पड़ता है। इन सब से भी ऊपर आसमान छूती महंगाई की मार के चलते, छात्र निराशा के सबसे बुरे दौर से गुज़र रहा है। शहर में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवाओं को बढ़ते किराए, फीस और राशन की आसमान छूती कीमतों का दंश झेलना पड़ रहा है।

खोखले वादे

भाजपा सरकार की तमाम खोखली घोषणाओं के बावजूद पिछले 3 साल में प्रदेश में कोई भी बड़ा इन्वेस्टमेंट अब तक नहीं हुआ है और ना ही कोई बड़े कारखाने लगे हैं। 2018 में आयोजित 'इन्वेस्टर्स समिट' और 'डिफेंस एक्सपो' का सरकार के द्वारा बड़ा बखान किया गया लेकिन आज तक किसी को नहीं पता और न ही इसके कोई आंकड़ें मिलते हैं कि "कितनी नौकरियां लोगों को इस डिफेंस एक्सपो और इन्वेस्टर्स सम्मिट के बाद मिली" या कितनी संख्या में रोजगार के अवसरों का सृजन हुआ। अभी कुछ महीने पहले ही प्रदेश के औद्योगिक विकास मंत्री सतीश महाना ने माना कि 2018 के इन्वेस्टर्स समिट में साइन किए गए 1045 एमओयू में से मात्र 90 प्रोजेक्ट पर काम शुरू हो पाया है। सरकार के कैबिनेट मंत्री का यह बयान सरकार के खोखले वादों की खुद ही पोल खोलता है।

कोरोना संकट के चलते प्रदेश का युवा, बड़ी संख्या में दूसरे प्रदेशों से लौट रहा है। .... सरकार ने अभी तक यह नहीं बताया कि प्रदेश वापस लौटने वाले शिक्षित युवाओं का उत्तर प्रदेश में क्या भविष्य है और उन्हें देने के लिए सरकार के पास मनरेगा के सिवा क्या है ?

केंद्र सरकार का 'नोटबंदी' का फैसला सदी का सबसे गलत फैसला साबित हो रहा है, जिसका असर बड़े पैमाने पर रोजगार के क्षेत्र पे साफ दिखाई पड़ता है । नोटबंदी ने उद्योग जगत की कमर तोड़ दी है और उसमें भी छोटे उद्योग धंधे और स्वरोजगार सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। प्रदेश और देश भर में संगठित और गैर संगठित दोनों ही क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर नौकरियों में छंटनी हो रही हैं। बची हुई कसर कोरोना के समय में गलत

तरीके से लगाए गए लॉकडाउन और अदूरदर्शी फ़ैसलों ने पूरी कर दी है। आनन-फानन में बिना तैयारी के सरकारी फैसलों ने उद्योग धंधों को चौपट कर दिया है। लॉकडाउन ने कोरोना को तो नहीं परन्तु उद्योग धंधों पे ज़रूर ताला लगवा दिया है।

कोरोना संकट के चलते प्रदेश का युवा, बड़ी संख्या में दूसरे प्रदेशों से लौट रहा है। यह युवा बेरोजगार है और शिक्षित और अशिक्षित दोनों है। सरकार ने अभी तक यह नहीं बताया कि प्रदेश वापस लौटने वाले शिक्षित युवाओं का उत्तर प्रदेश में क्या भविष्य है और उन्हें देने के लिए सरकार के पास मनरेगा के सिवा क्या है ? स्वस्थ जनतंत्र की स्थापना के लिए आवश्यक है कि सरकार हर हाथ को योग्यता अनुसार काम दे पर मौजूदा सरकार अपने इस दायित्व में पूर्णतया असफल है।

आज पूरे देश में बेरोजगारी 40 साल के इतिहास में सबसे ज्यादा उच्चतम स्तर पर है। अगर अर्थव्यवस्था की बात की जाए तो देश की विकास दर बहुत नीचे चली गई है। यह सिलसिला देश में नोटबंदी से शुरू हुआ और एक के बाद एक गलत आर्थिक नीतियों की वजह से दिन-ब-दिन अत्यंत विकट और विकराल होता जा रहा है।

बेरोजगारी के ज्वालामुखी के मुहाने पर यूपी

वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश बेरोजगारी के ज्वालामुखी के मुहाने पर बैठा हुआ है जो किसी भी पल फट सकता है। बेरोजगारी के उभरते मंजर को अगर आर्थिक मंदी और नीतियों के साथ जोड़कर देखा जाए तो

स्थितियां और भी विस्फोटक और भयावह दिखाई देती हैं। रोजगार के नए अवसरों की बात तो बहुत दूर, जिनके पास रोजगार हैं वो भी बेरोज़गार होते जा रहे हैं। सरकारी नौकरियां तो मिल नहीं रही हैं, प्राइवेट क्षेत्र में भी नौकरियां जा रही हैं और बड़े पैमाने पर छटनियाँ हो रही हैं। जो युवा-छात्र, समाज और देश के वर्तमान और भविष्य हैं, वह जैसे तैसे आज अपने को बचाने की जद्दोजहद में लगे हुए हैं।

जब सत्ता के करीबी सफेदपोश और जिम्मेदार लोग ही प्रश्न पत्रों को लीक कराने में लग जाएं, अनियमिताओं को संरक्षण देने लगे, सरकारी नौकरियों के पदों को लाखों रुपए में बेचने लगे, जब पूरा का पूरा थाना ही अपराधियों का मुखबिर हो जाए, रक्षक ही भक्षक हो जाए तो जनता, समाज और युवाओं का हाल क्या होगा? ऐसे दौर में अपने और प्रदेश को बचाने के लिए युवाओं के पास आंदोलन के अलावा सरकार ने विकल्प ही क्या छोड़ा है। ऐसे में युवाओं के पास एक ही विकल्प बचता है!

" प्रदेश की सत्ता लाचार, युवा बेरोजगार, चरम पर भ्रष्टाचार, उखाड़ फेंको ऐसी सरकार!"

यूपी में कानून-व्यवस्था ठप
राष्ट्रपति शासन जरूरी

बुलेटिन ब्यूरो

भाजपा की नफरत फैलाने और असहिष्णुता को बढ़ावा देने की रीति नीति के बुरे नतीजे सामने आने लगे हैं। प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति नियंत्रण से बाहर है एवं जनता सकते में है। सरेआम हत्या, लूट, अपहरण और बलात्कार की घटनाएं हो रही हैं। पुलिस भी अपराधियों की गोलियों का निशाना बन रही है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री की 'ठोक दो' नीति व प्रदेश के अपराध मुक्त हो जाने के दावों की कलई खुल चुकी है।

उत्तर प्रदेश में अपराधियों का खूनी खेल जारी है। सत्ता संरक्षित अवांछित समाज विरोधी तत्वों को किसी का डर नहीं है। कोई दिन ऐसा नहीं जाता जब राजधानी लखनऊ सहित प्रदेश के विभिन्न जनपदों से हत्या, लूट, अपहरण, दुष्कर्म की घटनाओं की सूचनाएं न आती हों। प्रदेश में कानून का राज नहीं रह गया है। मुख्यमंत्री के नियंत्रण में अब प्रशासन नहीं रह गया है। खाकी पर अपराधी हावी हो गए हैं। उत्तर प्रदेश में कानून-व्यवस्था पूरी तरह तहस नहस है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि राज्य में अराजकता की स्थिति के कारण उत्पन्न संवैधानिक संकट के मद्देनजर राष्ट्रपति शासन लगना आवश्यक है।

हाल के कुछ दिनों में प्रदेश में जिस तरह से दुस्साहसिक अपराध की घटनाएं हो रही हैं उससे लगता है मानो सरकार नाम की चीज ही नहीं है। कानपुर में 22 जून 2020 को अपहृत युवक संजीत यादव की हत्या समूची कानून व्यवस्था की हत्या है। पुलिस ने जिस तरह से संजीत के परिजनों को झांसे में रखा और बाद में बता दिया कि उसकी हत्या कर दी गई वह बेहद संगीन मसला है। यह पूरा घटनाक्रम पुलिस की अकर्मण्यता और घोर लापरवाही का नतीजा है। संजीत यादव के अपहरण के बाद फिरौती की रकम 30 लाख रूपए भी बदमाश पुलिस के सामने से ही लेकर फरार हो गए। खाकी के लिए क्या यह शर्म की बात नहीं?

लखनऊ में लोकभवन के सामने जिस महिला ने न्याय न मिलने पर आग लगाई थी

उसकी मौत हो गई है। दबंगों पर कार्यवाही करने में पता नहीं क्यों पुलिस को पसीने आ जाते हैं। आरोपियों की गिरफ्तारी में लापरवाही क्यों होती है? इस सबका दुष्परिणाम दुखद होगा ही। गाजियाबाद में पत्रकार विक्रम जोशी को बदमाशों ने इसलिए गोली मार दी क्योंकि उसने भांजी से छेड़छाड़ के मामले की शिकायत पुलिस से की थी। पुलिस ने कुछ किया नहीं उल्टे उन्हें शिकायत की जानकारी मिल गई। फिर तो बदमाशों की हिम्मत बढ़ गई। पुलिस ने अगर समय से कार्रवाई की होती तो पत्रकार की जान नहीं जाती। जबसे भाजपा सरकार उत्तर प्रदेश में सत्तारूढ़ हुई है चौथे स्तम्भ पर लगातार हिंसक हमले होने लगे हैं। अपने मनमाफिक न लिखने वाले पत्रकारों पर खनन माफिया और भूमाफिया तो अपनी ताकत दिखाते ही रहे हैं अब स्थानीय अपराधी भी बेखौफ हो रहे हैं। स्वयं पुलिस कर्मी भी उनके साथी बन जाते हैं। ऐसे में न्याय पाने के लिए जनता कहां जाए?

कानपुर के चौबेपुर थानान्तर्गत बिकरू गांव में कुख्यात अपराधी को पकड़ने गई पुलिस टीम के 8 वीरों की अपराधी गिरोह ने गोलियां बरसा कर जान ले ली। उत्तर प्रदेश के अपराधिक जगत की इस सबसे शर्मनाक घटना में सत्ताधारियों और अपराधियों की मिली भगत का खामियाजा कर्तव्यनिष्ठ पुलिस कर्मियों को भुगतना पड़ा है। भाजपा सरकार की यह ऐतिहासिक नाकामी है। बेलगाम अपराधियों ने नृशंस हत्या ही नहीं की मृत पुलिस कर्मियों के असलहे भी लूट ले गए। इससे ही साफ है कि भाजपा राज में अपराधियों का मनोबल कितना बढ़ गया है।

उत्तर प्रदेश में माफियाओं की समानांतर सरकार चल रही है। राज्य में अपराधिक अवांछित तत्वों का साम्राज्य कायम हो चुका है। यह सब 'ठोकों नीति' का ही परिणाम है कि अपराधी पुलिस को ठोकने का दुस्साहसपूर्ण कृत्य करने में आगा-पीछा नहीं सोचते हैं। आखिर इतना जघन्य काण्ड करने की बदमाशों की हिम्मत कैसे पड़ गई? भाजपा नेता व दुर्दान्त हिस्ट्रीशीटर विकास दुबे पर पर इनाम था। 20 साल पहले थाने में घुसकर उसने हत्याएं की थीं। इस सबके बावजूद वह बाहर कैसे रह रहा था?

जब अपराधी बेखौफ होकर जेल से भी अपना कारोबार चला रहे हैं तो फिर जनता की रक्षा कौन करेगा? क्या प्रदेश में कानून व्यवस्था संविधान के अनुसार कायम है? कानपुर की घटना ने तो प्रदेश के रामराज्य और कानून की धज्जियां उड़ा दी है।

कानपुर के बिकरू काण्ड के कातिल का रहस्मयी तरीके से उज्जैन में पकड़ा जाना व अगले दिन, पुलिस के दावे के मुताबिक एनकाउंटर हो जाने को संदिग्ध माना जा रहा है। मुख्य अारोपी समेत जो एनकाउण्टर हो चुके है एवं इनके सहयोगियों, सभी के 5 वर्ष से अब तक की सी.डी.आर. सरकार जारी कर देगी तो सच्चाई सामने आ जाएगी कि किसके किस नेता, अफसर से सम्पर्क थे? अब सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर जांच हो रही है।

अपराधों का अालम यह है कि उन्नाव में पत्रकार शलभ त्रिपाठी पत्रकार की हत्या भी निर्ममता से की गई थी। कानपुर देहात के थाना भोगनीपुर में पत्रकार संतोष गुप्ता की पुत्नी पौत्नी की 18 जुलाई 2020 को हत्या कर दी गई। शाहजहांपुर में उपजा संगठन के जिलाध्यक्ष जब दफ्तर से घर जा रहे थे वाहन चेकिंग के नाम पर महिला दारोगा ने अभद्रता की।

सच तो यह है कि भाजपा नेतृत्व की अहंकारी भाषा ने उत्तर प्रदेश को डुबो दिया है। पूरा राज्य डरा-सहमा हुआ है। कानून के राज्य की क्या यही परिभाषा है? जब अपराधी बेखौफ होकर जेल से भी अपना कारोबार चला रहे हैं तो फिर जनता की रक्षा कौन करेगा? क्या प्रदेश में कानून व्यवस्था संविधान के अनुसार कायम है? कानपुर की घटना ने तो प्रदेश के रामराज्य और कानून की धज्जियां उड़ा दी है। यह पूरी व्यवस्था के लिए खुली चुनौती है।

वस्तुतः उत्तर प्रदेश सत्ता व अपराध के गठजोड़ के उस वीभत्स दौर में हैं जहां न तो पुलिस को मारने वाले दुर्दान्त अपराधी पर कोई कार्रवाई हुई है और नहीं अधिकारी पर जिसकी संलिप्तता का प्रमाण जगजाहिर है। ऐसे में तथाकथित निष्पक्ष जांच भी उनसे करवाई जा रही है जो खुद कठघरे में में खड़े हैं।

कानपुर के बिकरू काण्ड की आग अभी बुझी भी नहीं थी कि अलीगढ़ की तेबथू पुलिस चौकी के अन्दर घुसकर पुलिस पर हमला हो गया। सुल्तानपुर जनपद में 24 घंटे में डबल मर्डर से सनसनी फैल गई। वहां कोतवाली देहात के सराय अचल में दबंगों ने शिव बहादुर की लाठी डंडों से पीट कर हत्या कर दी जबकि बदमाशों ने रामपुर निवासी विनय शुक्ल को गोलियों से छलनी कर दिया। बलिया में तैनात पीसीएस अधिशासी अधिकारी सुश्री मणि मंजरी राय का खुद के खिलाफ हो रहे षडयंत्र से हारकर आत्महत्या करना कई सवाल खड़े करता है। जौनपुर में पुलिस की मौजूदगी में दलितों पर दबंगों ने गोलियां बरसाईं। लाठी-डंडो से पीटा। कासगंज में दबंगों ने रेप किया और पुलिस ने पीड़िता के परिवारीजनों का ही उत्पीड़न किया। लखीमपुर खीरी के निघासन थाना क्षेत्र में 2 सगी नाबालिग बहनों को पहले अगवा किया गया फिर उनके साथ गैंगरेप किया गया। पुलिस ने 18 घंटे बाद रिपोर्ट लिखी उसमें भी जबरन तहरीर बदलवा दी और दबाव बनाने के लिए पीड़िता के परिवारवालों को ही कोतवाली में बैठाए रखकर परेशान किया गया।

कोरोना के बढ़ते संक्रमण के बीच लोगों की मदद के बजाय शराब तस्करी में भाजपाई व्यस्त हो गए हैं। कानपुर, वाराणसी, गोरखपुर के बाद किशनी में अवैध शराब का धंधा करते भाजपा का सेक्टर संयोजक पकड़ा गया। सत्ता के संरक्षण में शराब तस्करी, अवैध खनन और दूसरे अपराध खूब पनप रहे हैं। जबकि मुख्यमंत्री यह दावा करते नहीं थकते कि उनके राज में अपराधी डरे हुए हैं, ज्यादातर जेलों में हैं लेकिन सच्चाई यह है कि भाजपा सरकार और उसकी पुलिस के पास तो इलाकों के मोस्ट वाण्टेड की सूची भी नहीं है। कानपुर के अपराधी की तो क्राइम हिस्ट्री को दरकिनार कर उसका नाम ही टॉपटेन अपराधियों की सूची से बाहर कर दिया गया था। अक्षम नेतृत्व के कारण उत्तर प्रदेश बुरी तरह संकट ग्रस्त है। चाहे कोरोना, चाहे भ्रष्टाचार हो अथवा कानून का राज हो ये सभी नियंत्रण के बाहर है। चारों तरफ अराजकता व्याप्त है। जनता त्रस्त है। जनता का बुरा हाल है। क्या यही अच्छे दिन है?

"समाजवादी पार्टी हमेशा से

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि समाजवादी पार्टी हमेशा से ही अपराधियों के खिलाफ रही है। समाजवादी सरकार में कभी भी अपराधियों को प्रश्रय नहीं दिया गया। भाजपा ने न सिर्फ अपराधियों को पनाह दी है बल्कि अपराधों को रोक पाने में पूरी तौर पर विफल रहीं है। फर्जी एनकाउण्टर के उनके प्रयोग से अपराधी तो डरे नहीं निर्दोष अवश्य भयग्रस्त हो गये। सबसे ज्यादा अपराधी भाजपा में ही है। आखिर भाजपा न्यायालयों पर भरोसा क्यों नहीं करती है?

अखिलेश जी ने कहा है कि सत्ता के मद में विधिक प्रक्रिया से बाहर जाकर पुलिस बल का दुरूपयोग करने से अपराधों पर रोक नहीं लग सकती। जब तक भाजपा अपने बचाव में दूसरों को फंसाने की रणनीति पर काम करती रहेगी तब तक सुशासन स्थापित नहीं हो सकता। बदले की भावना से विपक्ष पर हमलावर होने से भाजपा को कुछ मिलने वाला नहीं क्योंकि झूठ के पैर नहीं होते हैं। समाज में नफरत फैलाना और समाज को बांट कर राजनीति करना यह

कानपुर के पीड़ित परिवारों को सपा की मदद

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कानपुर में अपहृत युवक संजीत यादव की हत्या को समूची कानून व्यवस्था की हत्या करार देते हुए इसे पुलिस की अकर्मण्यता और घोर लापरवाही का नतीजा बताया है। अखिलेश जी के निर्देश पर इकलौते पुत्र को खोने वाले पीड़ित परिवार में संजीत की मां श्रीमती सुषमा को समाजवादी पार्टी की ओर से 5 लाख रुपए की आर्थिक मदद दी गई। वहीं प्रदेश में सपा की की सभी जिला इकाइयों ने कानपुर नगर में अपराधियों से मुठभेड़ में शहीद 8 पुलिस जवानों को श्रद्धांजलि दी और अधिकारियों को ज्ञापन देकर शहीदों के परिवारों को एक-एक करोड़ तथा घायलों को पचास-पचास लाख रूपये तत्काल देने की मांग की।

राजधानी लखनऊ में हजरतगंज स्थित गांधी जी की प्रतिमा पर कानपुर काण्ड में शहीद पुलिस जवानों को श्रद्धांजलि देने सैकड़ों कार्यकर्ता एकत्र हुए। कार्यकर्ताओं ने पुलिस बल पर अपराधियों द्वारा किए गए हमले की निंदा की और शहीदों के परिवारों के प्रति संवेदना जताई। कार्यकर्ताओं ने अपराधियों की जल्द से जल्द गिरफ्तारी किए जाने की मांग की। जब कार्यकर्ता श्रद्धांजलि दे रहे थे तब पुलिस बल ने उन्हें रोका और बल प्रयोग किया। पुलिस ने इसके बाद कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने सपा के रविदास मेहरोत्रा, जयसिंह जयंत, सुशील दीक्षित, विजय सिंह यादव, अनीस राजा, सौरभ यादव, ताराचंद्र, इन्दल रावत, शैलेन्द्र सिंह पार्षद, देवेन्द्र सिंह जीतू पार्षद, नवीन धवन बंटी, दीपक रंजन, शब्बीर खां व पूजा शुक्ला आदि को गिरफ्तार किया।

उधर कानपुर में 22 जून 2020 को अपहृत युवक संजीत यादव की मां श्रीमती सुषमा को समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर कानपुर थानान्तर्गत बर्रा- स्थित संजीत यादव के घर जाकर 5 लाख रूपए का चेक दिया। इस मौके पर संजीत के पिता श्री चमन सिंह यादव और बहन सुश्री रूचि भी मौजूद थी। समाजवादी पार्टी की मांग है कि राज्य सरकार को पीड़ित परिवार को 50 लाख रूपए की मदद करनी चाहिए। इस अवसर पर विधायकगण सर्वश्री अमिताभ बाजपेयी, इरफान सोलंकी, गोविन्दनगर क्षेत्र के पूर्व प्रत्याशी सम्राट यादव, किदवईनगर विधानसभा क्षेत्र के पूर्व प्रत्याशी ओम प्रकाश मिश्रा, पार्षद अर्पित यादव, छावनी कानपुर के पूर्व प्रत्याशी रूमी हसन ने भी पीड़ित परिवार से भेंट की और अपनी संवेदना व्यक्त की।

अपराधियों के खिलाफ”

लोकतंत्र की स्वस्थ परम्पराओं के विरूद्ध है। सरकार की यह जिम्मेदारी है कि समाज में सभी के साथ बराबरी का व्यवहार होना चाहिए। जाति के आधार पर निर्णय करने से समाज में असंतोष व्याप्त होता है। इसलिए समाजवादी पार्टी सदैव सामाजिक न्याय की पक्षधर रही है, जिससे किसी भी वर्ग के अधिकारों का हनन न हो। बराबरी का समाज बनने से भेदभाव मिटता है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा राजनीतिक ताकत चाहती है, जनता को ताकत मिले या न मिले। भाजपा को बस सरकार की भूख है, जनता की भूख से उसका कुछ लेना देना नहीं। जनता निराश है, भाजपा ने प्रगति का रास्ता रोका है। लोगों का भरोसा तोड़ा है। मुख्यमंत्री जी की "ठोको नीति" के कारण अपराध बढ़ते जा रहे हैं। अपनी विफलता के बारे में चर्चा करना भाजपा नेतृत्व को रास नहीं आता है। प्रदेश में तीन वर्ष चार माह में जनता को भाजपा ने उलझा दिया है। गुमराह करने को ही भाजपा अपनी सफलता समझती है। यही अंतर है भाजपा और समाजवादी पार्टी में।

समाजवादी पार्टी का आह्वान

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने आज पार्टी मुख्यालय में "समाजवादी पार्टी का आव्हान" अपील जारी करते हुए सभी पार्टी कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों का आव्हान किया कि वे राज्य और केन्द्र की भाजपा सरकारों की अक्षम्य गलतियों तथा जनविरोधी नीतियों का जन-जन के बीच जाकर पर्दाफाश करें और पीड़ित, दुःखी तथा असहाय लोगों की यथासम्भव मदद करें।

केन्द्र की सत्ता में भाजपा ने छह साल पूरे कर लिए हैं। इन वर्षों में भाजपा ने गरीबों, किसानों और मजदूरों के हित में जो बड़ी-बड़ी घोषणाएं की, उन पर अमल नहीं हुआ। दुनिया में भारत की जो साख थी वह भी अब नहीं रही है। आंतरिक सुरक्षा में विफल भाजपा सरकार सीमाओं की सुरक्षा और देश की संप्रभुता को भी बचाने में असमर्थ, अक्षम है। देशवासियों को प्रगति और विकास के दिखाए गए सपने चकनाचूर हो गए हैं। भाजपा ने देश की जनता का भरोसा तोड़ने का पाप किया है। सरकार मनमानी पर उतारू है। नागरिकों के अधिकारों को कुचला जा रहा है। यह संवैधानिक-लोकतांत्रिक व्यवस्था पर हमला है। भाजपा का यह आचरण स्वतंत्रता आन्दोलन के मूल्यों के विपरीत है। भारत में फिर आपातकाल 25 जून 1975 की परिस्थितियां बन रही है।

भाजपा के पहले पांच साल के कार्यकाल में जनता ने नोटबंदी और जीएसटी की

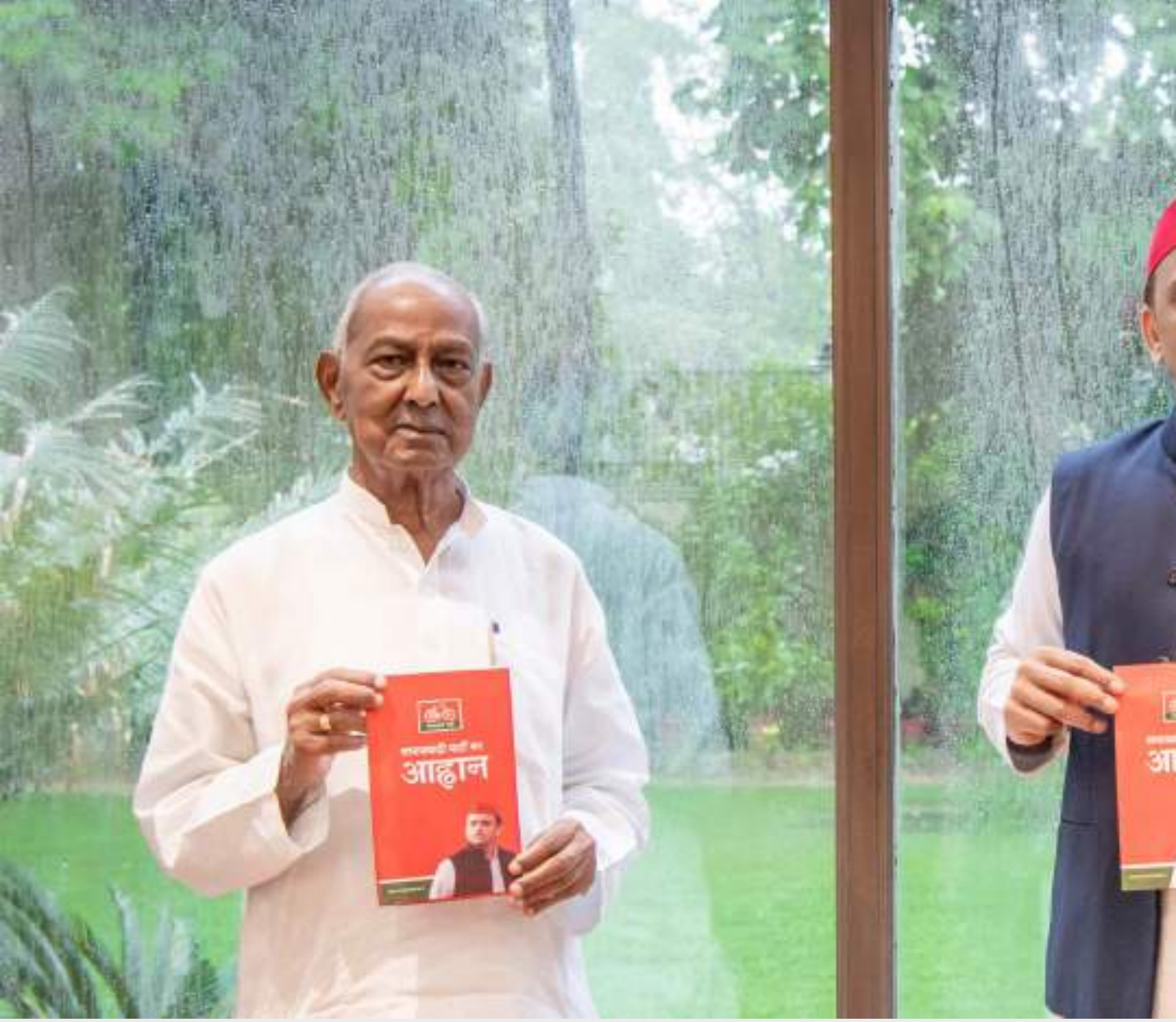

यंत्रणाएं झेली हैं। नोटबंदी में जनता लाइनों में लगा दी गई। बैंक में जमा अपने पैसे भी अब आसानी से उसे मिलने वाले नहीं। जीएसटी ने व्यापार-धंधे को चैपट कर दिया। इससे बेकारी में वृद्धि हुई। भाजपा सरकार के केन्द्र में दूसरे कार्यकाल के पहले वर्ष में कोरोना- महामारी के प्रकोप ने पूरे देश को भयाक्रांत कर दिया। सरकारी रणनीति से समस्या अनियंत्रित हो गयी।

बिना आगा-पीछा सोचे केन्द्र सरकार ने 25 मार्च 2020 से देश में अचानक रात से लाॅकडाउन घोषित कर सभी को घरों में तालाबंद कर दिया। सरकारी और निजी संस्थान तथा स्कूल काॅलेज बंद हो गए। कल कारखाने, बाजार, निर्माण कार्य के अलावा ट्रेन, बस, हवाई सेवा भी बंद हो गई। लाखों श्रमिक देखते-देखते बेरोजगार हो गए, ठेकेदारों ने उनका वेतन हड़प लिया। उत्तर प्रदेश में सरकारी बस, स्कूल वैन मिलाकर 70 हजार वाहन है पर उनका उपयोग श्रमिकों को उनके घर पहुंचाने में नहीं हुआ। मुख्यमंत्री जी और उनकी टीम-इलेवन ने समय पर कोई निर्णय नहीं लिया।

उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार का चौथा वर्ष शुरू है। इस सरकार ने अपनी एक भी जनहित की योजना नहीं शुरू की। समाजवादी सरकार के कामों पर अपना नाम लगाने के अलावा कुछ भी नहीं किया। थोथे वादे और झूठी घोषणाएँ करने में डबल इंजन सरकारों में बस प्रतियोगिता होती रहती है।

किसान को अपनी फसल कहीं किसी भी राज्य में बेचने की छूट देने का प्रचार हो रहा है कि इससे किसान को फसल के अच्छे

दाम मिल सकेंगे। परन्तु सच यह है कि इससे व्यापारी सबसे ज्यादा लाभान्वित होंगे। किसान तो अपने सूबे में भी मंडियों तक नहीं पहुंच पाते हैं। सभी किसान इतने सम्पन्न नहीं होते कि वे दूसरे राज्यों तक जा पाएंगे। कारपोरेट घराने जरूर अपनी सुविधानुसार लूट करेंगे। बिचौलियों और कम्पनियों की कुदृष्टि किसान की फसल पर रहेगी। भाजपा सरकार मंडिया खत्म करने के बाद किसान की खेती को भी कारपोरेट खेती में बदल डालेगी।

भाजपा राज में किसान, कामगार, श्रमिक और नौजवान सबसे ज्यादा बदहाल हैं। किसानों को राहत देने की जगह कर्ज पर जीने की सलाह दी जा रही है। उसको फसल की लागत का ड्योढ़ा मूल्य देने और किसान की आय दुगनी करने का सपना दिखाया गया था। क्रय केन्द्र न खुलने से किसान को फसल का घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य भी नहीं मिला। गन्ना किसानों का 20 हजार करोड़ रुपये बकाया हैं । बुन्देलखंड में दलहन की खेती बर्बाद हो गई। पांच वर्ष में 60 हजार से ज्यादा किसानों ने आत्महत्या की। फल और सब्जियों के किसानों को औने पौने दाम पर उत्पाद बेचना पड़ा और न बिकने पर फेंकना पड़ा। पान की खेती करने वालों की कमर टूट गई। फूलों की खेती भी बर्बाद हो गई।

इस वर्ष तो किसान बे-मौसम बरसात, ओलावृष्टि का भी शिकार रहा, जिससे किसानों का भारी नुकसान हुआ। भाजपा सरकार में आपदाग्रस्त किसानों को

कोई मुआवजा नहीं मिला। किसान बीमा योजना किसानों के लिए हितकर या लाभप्रद नहीं साबित हुई। किसानों को सभी फसलों के नुकसान का मुआवजा मिलना चाहिए था। अन्नदाता को भाजपा भिखारी मानकर व्यवहार कर रही है।

देश के कोने-कोने में फैले लगभग दो करोड़ छोटे और मझोले दूकानदारों पर भी आफत आ पड़ी। लॉकडाउन में राष्ट्रीय स्तर पर हजारों करोड़ का स्टाक बर्बाद हो गया। पूंजी के अभाव में काम धंधा बंद है। अमरोहा में ढोलक का कारोबार बंद हो गया जिसका निर्यात भी होता था। पुताई के काम आने वाला ब्रुश बनाने वाले भी बेरोजगार हो गए हैं। समाजवादी पार्टी ने किसानों, व्यापारियों और कामगारों से संबंधित मुद्दों को कई बार उठाया लेकिन भाजपा सरकार ने तो जैसे तय कर लिया है कि वह गूंगी बहरी बनी रहेगी। केन्द्र की भाजपा सरकार ही नहीं, उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार ने भी, समस्याओं के समाधान के लिए पलटकर भी देखना उचित नहीं समझा।

बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों के मालिकों की सुख सुविधाओं पर ही भाजपा की निगाह जाती हैं। भाजपा उन्हें ही बड़ी-बड़ी रियायतें देती जा रही है जो पहले से ही बैंकों का धन दबाए बैठे हैं। श्रमिक का शोषण करने के लिए मालिकों को छूट देने के इरादे से श्रम कानून बदले जा रहे हैं। 90 दिन के काम के एवज में 5 लाख का बीमा श्रमिकों के साथ धोखा है। श्रमिकों को न्यूनतम से भी कम दिहाड़ी दी जा रही है।

कोरोना वायरस के प्रकोप का भी भाजपा ने राजनीतिक फायदा उठाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। ताली-थाली बजवाने से लेकर दिया-बत्ती जलाने को इलाज बताकर प्रधानमंत्री जी ने 21 दिन में कोरोना संकट खत्म हो जाने का झूठा भरोसा दिलाया। फिर भी बीमारी खत्म नहीं हुई, लगातार बढ़ रही है। हजारों

निवेशक सम्मेलनों का खूब प्रचार हुआ पर आज तक एक भी एमओयू जमीन पर नहीं उतरा। सरकार यह नहीं बताती कि प्रदेश में कितना निवेश आया और निवेशक कौन है?

संक्रमित जान गंवा चुके हैं। प्रधानमंत्री जी कह रहे हैं हमें अब कोरोना के साथ रहने की आदत डाल लेनी चाहिए।

मजबूरी में भूखे-प्यासे मजदूर सिरों पर गठरी और सामान लादे कोई साधन न मिलने से पैदल, साइकिल, बाइक, रिक्शा या ठेलिया पर ही अपने घरों के लिए मजबूरी में चल दिए। मासूम बच्चों को गोद में लिए महिलाएं और बीमार बूढ़े सड़कों पर घिसटते रहे। सैकड़ों लोग दुर्घटनाओं में जान गंवा बैठे। गर्भवती महिलाओं का ट्रेन या सड़क पर प्रसव हो गया। वे सैकड़ों किलोमीटर पैदल चलती रहीं। भाजपा सरकार मजदूरों के खाने पीने की पूरी व्यवस्था कराने तथा कोरोना संक्रमितों के उचित इलाज होने के दावे करती रही पर हुआ कुछ नहीं। श्रमिकों को जगह-जगह अपमानित होना पड़ा। प्रतिदिन कमाने खाने वालों के समक्ष भुखमरी के हालात बन गए। काम की आस में उनकी आंखे पथरा गई है।

सरकार प्रवासी श्रमिकों के लिए रोजगार की बातें कर रही है पर कोई समयबद्ध ठोस योजना सामने नहीं आई है। निवेशक सम्मेलनों का खूब प्रचार हुआ पर आज तक एक भी एमओयू जमीन पर नहीं उतरा। सरकार यह नहीं बताती कि प्रदेश में कितना निवेश आया और निवेशक कौन है? कहां उनके उद्योग लगने जा रहे हैं? जब उद्योग ही नही है तो श्रमिकों को रोजगार कहां मिलेगा?

लॉकडाउन में एक बड़ी आबादी को राशन नहीं मिला। राहत कार्य में भी सत्ता पक्ष ने भेदभाव किया। विपक्ष को राहत कार्य से रोका गया। उन पर कई फर्जी मुकदमें लगा दिए गए। फिर भी समाजवादी पार्टी के नेता-कार्यकर्ता पूरे संकटकाल में गरीबों को खाना, राशन बांटने, वाहन से घर भिजवाने तथा आर्थिक मदद देने में लगे रहे।

उत्तर प्रदेश में भाजपा राज में सत्ता संरक्षित अपराधों की बाढ़ आ गई। भाजपा के दम्भी विधायक और सांसद अधिकारियों के साथ खुले आम दुर्व्यवहार करने लगे हैं। महिलाएं एवं बच्चियां असुरक्षित हैं। अपराधी बेखौफ हैं।

सरकारी शह पर फर्जी एनकाउण्टर हो रहे हैं। आए दिन आर्थिक तंगी से परेशान लोग परिवार सहित आत्महत्या कर रहे है। अपराध नियंत्रण के लिए आधुनिक वाहनों के साथ यूपी डायल 100 नं0 की सेवा शुरू हुई थी। महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा के लिए 1090 वूमेन पावर लाइन बनी। भाजपा राज में इन सेवाओं को पूरी तरह निष्क्रिय बना दिया गया है।

सरकारी भर्तियों के नाम पर युवाओं को सिर्फ छला जा रहा है। पेपरलीक के बहाने नौजवानों को नौकरी से वंचित किया जा रहा है। भाजपा सरकार के कार्यकाल में सन् 2017 के बाद से चार-चार भर्तियां अदालतों में लटकी पड़ी हैं। अधीनस्थ चयन बोर्ड नियमानुकूल परीक्षाएं करा पाने में असमर्थ साबित हो रहे हैं। अधिकारी अपनी मनमर्जी से भर्तियों के नियम बदल देते हैं। आरक्षण के नियम की भी खिल्ली उड़ाई जाती है।

भाजपा मूल मुद्दों से जनता का ध्यान भटकाने में माहिर है। वह भ्रम फैलाकर चुनाव जीतती है। समाज के सद्भाव को बिगाड़ना और नफरत का जाल फैलाना उसकी फितरत है। भाजपा सरकार असहिष्णुता और सांप्रदायिकता का माहौल पैदा कर समाज को बांटने का काम बड़ी चतुराई से करती है। पिछड़ी जातियों-दलितों और सवर्ण जातियों के बीच नफरत फैलाई जा रही है। भाजपा की केन्द्र सरकार ने देश को आर्थिक अराजकता, मंदी, अपराध और लोकतंत्र के अवमूल्यन की दिशा में ढकेला है। वैसे भी भाजपाई करते कुछ नहीं। साजिश और अफवाह, यही भाजपा के हथियार हैं।

समाजवादी पार्टी की सरकार के समय बिजली उत्पादन एवं विद्युत वितरण में अभूतपूर्व कार्य किया गया। लगभग 300 से ज्यादा नये विद्युत सब-स्टेशनों का निर्माण हुआ जबकि भाजपा सरकार के कार्यकाल में प्रदेश में एक भी यूनिट बिजली का उत्पादन नहीं हुआ। कोई विद्युत प्लांट भी नहीं लगाया गया। आज जो भी बिजली उपलब्ध है वह समाजवादी सरकार की देन है। इसके बाद भी भाजपा धोखा देने से बाज नही आती है।

भाजपा सरकार असहिष्णुता और सांप्रदायिकता का माहौल पैदा कर समाज को बांटने का काम बड़ी चतुराई से करती है। पिछड़ी जातियों-दलितों और सवर्ण जातियों के बीच नफरत फैलाई जा रही है।

प्रदेश में चाहे एम्स की स्थापना हो, कैंसर अस्पताल का निर्माण हो, लोहिया पार्क और 400 एकड़ में एशिया का सबसे बड़ा पार्क जनेश्वर मिश्र पार्क, गोमती रिवरफ्रंट और अंतर्राष्ट्रीय स्तर का इकाना स्टेडियम समाजवादी सरकार के समय में ही इनको जमीन पर उतारा गया है। गम्भीर बीमारियों-कैंसर, दिल, लीवर, किडनी के इलाज की मुफ्त व्यवस्था हुई। समाजवादी सरकार में मरीजों, दुर्घटना में घायलों को अस्पताल ले जाने के लिए 108 नम्बर समाजवादी एम्बूलेंस सेवा, गर्भवती महिलाओं एवं नवजात शिशुओं को अस्पताल लाने-ले-जाने के लिए 102 नम्बर सेवा चालू हुई हुई थी। बीमारों को इलाज के लिए विधायक निधि से प्रतिवर्ष 25 लाख रूपये की सहायता देने का प्रावधान किया गया था जिसको भाजपा सरकार ने समाप्त कर दिया है।

आप सभी इस तथ्य से अवगत हैं कि समाजवादी सरकार ने समाज के कमजोर परिवार की 55 लाख महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा देने के लिए 6 हजार रूपया प्रतिवर्ष समाजवादी पेंशन योजना लागू की थी। बुनकरों, दस्तकारों और कारीगरों के लिए तमाम रियायतें लागू की गई थी। कलाकारों एवं खिलाड़ियों का सम्मान किया गया। 18 लाख छात्र-छात्राओं को निःशुल्क लैपटॉप, कन्या विद्याधन, समाजवादी युवा स्वरोजगार योजना, कौशल विकास प्रशिक्षण जैसी तमाम योजनाएं समाजवादी सरकार में लागू की गई। पर्यावरण संरक्षण के लिए साइकिल ट्रैक बने थे।

समाजवादी सरकार के समय ही आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे और मेट्रो जैसी शानदार योजनाओं को धरातल पर उतारा गया। एक्सप्रेस-वे पर वायुसेना के युद्धक विमान और मालवाहक जहाज तक उतर चुके हैं। एक्सप्रेस-वे के किनारों पर किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए विश्वस्तरीय मंडिया बनाने की योजना शुरू की थी। समाजवादी सरकार में आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे के किनारे पर, कन्नौज में 100 एकड़ की मंडी की व्यवस्था हुई थी।

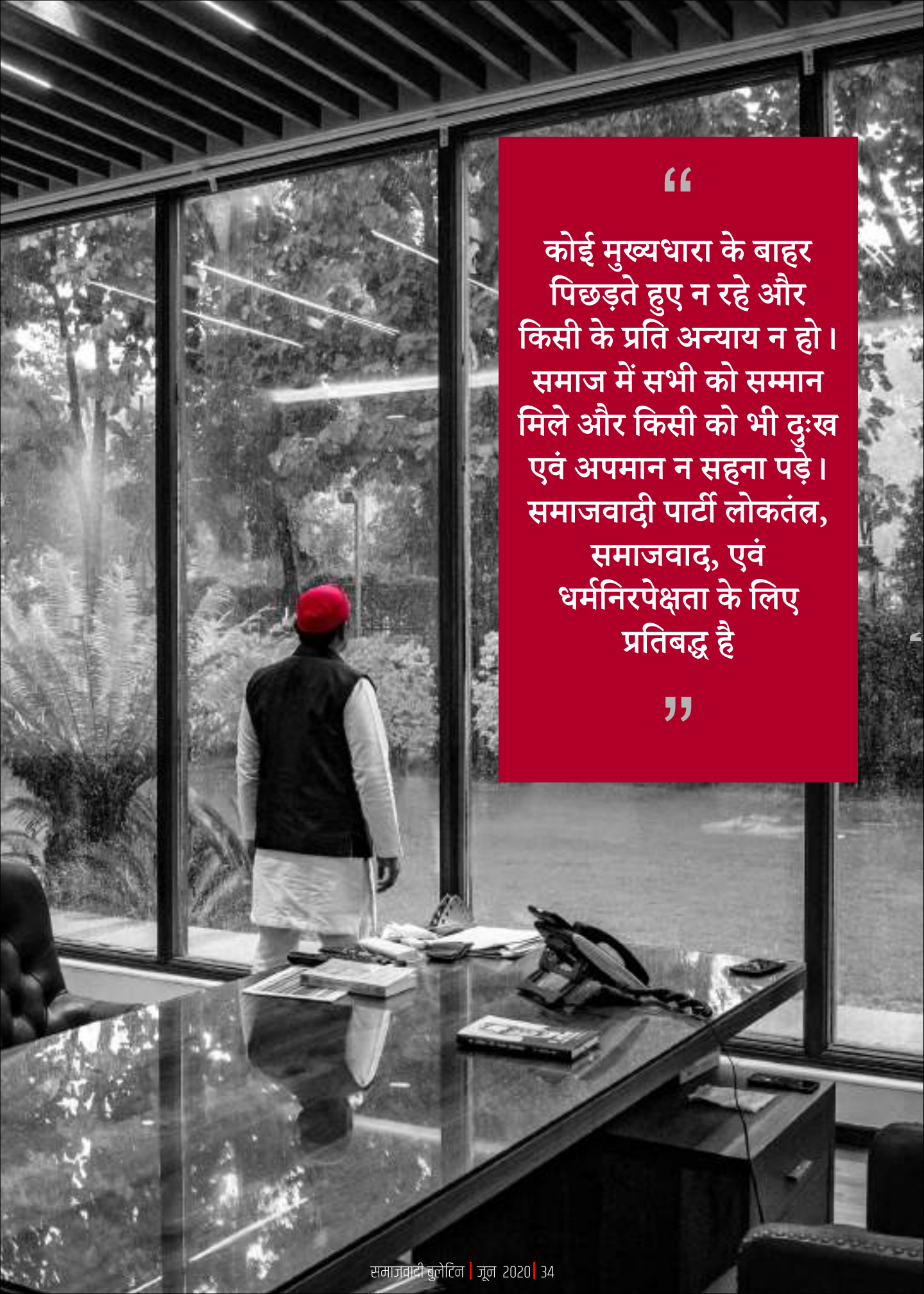

“

कोई मुख्यधारा के बाहर पिछड़ते हुए न रहे और किसी के प्रति अन्याय न हो। समाज में सभी को सम्मान मिले और किसी को भी दुःख एवं अपमान न सहना पड़े। समाजवादी पार्टी लोकतंत्र, समाजवाद, एवं धर्मनिरपेक्षता के लिए प्रतिबद्ध है

”

मुफ्त सिंचाई की सुविधा दी थी। किसानों को दुर्घटना बीमा का लाभ मिला। कृषि अर्थव्यवस्था के साथ अवस्थापना सुविधाओं का विस्तार किया गया। बजट के 75 प्रतिशत अंश की किसानों की तरक्की और कृषि उन्नति पर खर्च के लिए व्यवस्था की गई। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में पेयजल समस्या के निदान के लिए 200 तालाबों का जीर्णोद्धार और 7300 किलामीटर नहरों का निर्माण हुआ था। 5 करोड़ वृक्षारोपण का रिकार्ड भी गिनीज बुक में दर्ज है। सभी जनपदीय मुख्यालयों को फोर लेन से जोड़ा गया तथा छोटी-बड़ी नदियों पर लगभग 300 पुलों का निर्माण कराया गया।समाजवादी पार्टी महात्मा गांधी, डा॰ राममनोहर लोहिया, डा॰ भीम राव अम्बेडकर, आचार्य नरेन्द्र देव, लोक नायक जयप्रकाश नारायण और चौधरी चरण सिंह के बताए रास्ते पर चलते हुए आर्थिक-सामाजिक गैरबराबरी और सभी किस्म की विषमताओं के विरूद्ध संघर्षरत रही है। समाजवादी पार्टी ने विकास और निर्माण का रास्ता अपनाया है। वह समाजवादी व्यवस्था के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संकल्पित है। भाजपा विध्वंस और नकारात्मक राजनीति करती है। भाजपा ने लोकतांत्रिक और संवैधानिक संस्थाओं को कमजोर करने का काम किया है।

भाजपा ऐसा राजनीतिक दल है, जिसने सत्ता में आने के बाद जनहित का कभी कोई उल्लेखनीय काम नहीं किया। वह लोकतंत्र के साथ बराबर छल करती रहती है। झूठा ढिंढोरा पीटने के लिए कोई चिट्ठी पत्री घर-घर बांटने का चाहे जितना भाजपा ढोंग का अभियान चलायें, जनता उसके साथ हुए विश्वासघात को भूल नहीं सकती। सैकड़ों करोड़ रूपयों का अपव्यय कर भाजपा द्वारा की जा रही वर्चुअल रैलियों का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, जनता के साथ भाजपा ने बड़ा धोखा किया है यह भारतीय राजनीति के इतिहास का डरावना पक्ष है।

वैसे भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की विचारधारा की बुनियाद ही नकारात्मक रही है। सामाजिक सद्भाव की कीमत पर राजनीतिक लाभ प्राप्त करना और विकास अवरूद्ध करने की साज़िश करते रहना भाजपा का एजेण्डा है। गरीबों, किसानों, श्रमिकों और नौजवानों के हित में बिना कोई काम किये उन्हें गुमराह करना महापाप है। भाजपा लोकराज में लोकलाज का विश्वास नही रखती है। इसलिए हमारा मुख्य लक्ष्य उत्तर प्रदेश में कुषासन का पर्याय बन गई भाजपा सरकार को सन् 2022 के चुनावों में सत्ता से बेदखल करना है।

समाजवादी पार्टी राजनीति में शुचिता की पक्षधर है और मानती है कि विकास और सद्भाव दोनों के साथ से ही देश-प्रदेश को प्रगति की ऊंचाइयों पर ले जाया जा सकता है। हमारा ध्येय हैं कि कोई मुख्यधारा के बाहर पिछड़ते हुए न रहे और किसी के प्रति अन्याय न हो। समाज में सभी को सम्मान मिले और किसी को भी दुःख एवं अपमान न सहना पड़े। समाजवादी पार्टी लोकतंत्र, समाजवाद, एवं धर्मनिरपेक्षता के लिए प्रतिबद्ध है तथा भाजपा की भय, भ्रम और जनविरोधी नीतियों के खिलाफ सतत संघर्ष करती रहेगी।

देश की सीमाएं सिकुड़ रहीं हैं, चीन के हिंसक व्यवहार को देखते हुए भारत सरकार को सामरिक के साथ-साथ आर्थिक जवाब भी देना चाहिए। चीनी कंपनियों को दिए गए ठेके तत्काल प्रभाव से निलंबित होने चाहिए और चीनी-आयात पर अंकुश लगाना चाहिए।

किसान लुट रहा है, मज़दूर भूखों मर रहा है, बेरोजगारी सुरसा की तरह आकार बढ़ाती जा रही है, नौकरी के नाम पर युवकों को धोखा दिया जा रहा है, छात्र वर्ग कुंठित हैं। बुनकर, दस्तकार और छोटा, मझोला, बड़ा उद्यमी किसानों की तरह आत्महत्याएं करने को विवश है, इन परिस्थितियों में समाजवादी पार्टी अपने सभी साथियों का आह्वान करती है कि वे राज्य व केन्द्र सरकार की अक्षम्य ग़लतियों तथा जन विरोधी नीतियों का जन-जन के बीच जाकर पर्दाफ़ाक्ष करें और पीड़ित, दुःखी और असहाय लोगों की यथासम्भव मदद करें।

अखिलेश यादव
25 जून 2020

साइकिल लगातार चलेगी, रथ भी चलेगा

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष
*माननीय श्री **अखिलेश यादव** जी द्वारा **अमर उजाला***
दैनिक समाचार पत्र के प्रतिनिधि के साथ विशेष साक्षात्कार के अंश
(दिनांक: 29 जून, 2020 के अंक में प्रकाशित)

योगी सरकार ने सवा करोड़ लोगों को रोजगार देने के अभियान का शुभारंभ किया है। आपकी प्रतिक्रिया?

भाजपा ने धोखे से सरकार बनाई है। अब जनता को एक और धोखा दे रहे हैं। वे मनरेगा को नौकरी मान रहे हैं। मनरेगा कांग्रेस ने शुरू की थी। ऐसे तो न जाने कितने करोड़ लोगों को रोजगार दिया होगा। प्रदेश सरकार ने रोजगार देने के लिए आयोग बनाया है। बाहर से आने वाले श्रमिकों की स्किल मैपिंग कराई है। सरकार बताए कि आयोग में कितने लोगों ने रजिस्ट्रेशन कराया, उनमें से कितनों को नौकरी दी गई। किस स्किल में किसे नौकरी दी गई है। सवा करोड़ लोगों को नौकरी देने का दावा 100 फीसदी झूठा प्रचार है। यह मुख्यमंत्री का उसी तरह का दिव्य गणित है जो उन्होंने बाहर से आने वालों के बारे में बताया था कि कहां से आने वाले कितने प्रतिशत श्रमिक कोरोना पॉजिटिव हैं। दिव्य गणित की तरह ही रोजगार देने की बात दिव्य झूठ है। इसमें युवाओं को नौकरी की बात नहीं है।

पीएम ने अमेरिका जैसे देशों से तुलना करते हुए कहा है कि सीएम योगी ने 85 हजार की जान बचा ली?

अमेरिका में ऐसी बहुत सारी बीमारियां नहीं हैं जो भारत में हैं। वहाॅ एक भी केस नहीं जो गर्भवती महिला 500-600 किमी0 पैदल चली हो। प्रसव के बाद भी 100 किमी0 का सफर तय किया हो। अमेरिका में किसी का नाम लाॅकडाउन सिंह या बाॅर्डर सिंह रक्खा गया हो तो बताएं। अमेरिका, स्पेन, इटली को देखने के बजाय सरकार चाहे तो फिर थाली और ताली बजवा ले और कहे कि देश में अब कोरोना वायरस नहीं है।

दूसरे राज्यों से लगभग 35 लाख श्रमिक आए, अफरा तफरी रही। क्यों आपको लगता है कि लाॅकडाउन की घोषणा पूरी प्लानिंग से नहीं हुई?

इस सरकार ने जो भी फैसले किए, सोच-समझकर नहीं किए। अभी पुराने फैसलों पर बात करने का समय नहीं है, लेकिन नोटबन्दी, जीएसटी व कोविड-19 को लेकर फैसलो से अर्थव्यवस्था खत्म हो गई है। सरकार की व्यवस्था न होने से मजबूरी मंे भूखे-प्यासे मजदूर पैदल साइकिल, बाइक व रिक्शों से घरों के लिए चल दिये। इस दौरान उन्हें अपमान और उत्पीड़न झेलना पड़ा। कितने ही लोगों की मौत हो गई, सड़कों पर प्रसव हुए। सरकार की संवेदनहीनता है कि उसने लाॅकडाउन में हादसों व अन्य कारणों से जान गवाने वाले एक भी श्रमिक परिवार की आर्थिक मदद नहीं की। सपा ने 70 श्रमिक परिवारों को एक-एक लाख रूपये की सहायता दी। सरकार चाहती तो गर्भवती महिलाओं के लिए मुख्य मार्गो पर एम्बुलेन्स की व्यवस्था कर सकती थी। प्रदेश में 90 हजार बसें हैं। प्लानिंग होती तो किसी भी मजदूर को घर जाने के लिए सैकड़ों किमी0 पैदल न चलना पड़ता।

ये वर्चुअल नहीं, खर्चुअल रैलियां हैं। भाजपा के पास फण्ड है, संसाधन है। हम इतना खर्च नहीं कर सकते। वर्चुअल रैली में 60-70 हजार एलईडी लगाये जाते हैं, जनरेटर, ट्रक, कार समेत साधन लगते हैं।

प्रधानमंत्री के 20 लाख करोड़ रुपये के विशेष राहत पैकेज का क्या इम्पैक्ट देखते हैं?

यह राहत पैकेज नहीं ऋण है। इसे वापस करना पड़ेगा। दुनिया में पहली बार लोन को राहत पैकेज बताकर प्रचारित किया गया। पुरानी योजनाओं को एक जगह क्लब किया गया है। किसानों को राहत देने के बजाय कर्ज पर जीने की सलाह दी जा रही है। खरीद केन्द्र नहीं खुलने से किसानों को कई फसलो का न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं मिल पाया। गन्ना किसानों का 17 हजार करोड़ रूपये का भुगतान बकाया है। बुन्देलखण्ड में दलहन की खेती बर्बाद हो गई। फल, सब्जी के किसानों की कमर टूट गई।

भाजपा की वर्चुअल रैलियों का जवाब कैसे देंगे?

ये वर्चुअल नहीं, खर्चुअल रैलियां हैं। भाजपा के पास फण्ड है, संसाधन है। हम इतना खर्च नहीं कर सकते। वर्चुअल रैली में 60-70 हजार एलईडी लगाये जाते हैं, जनरेटर, ट्रक, कार समेत साधन लगते हैं। वे चीनी उपकरणों की मदद से खर्चुअल रैली कर रहे हैं और हम वाट्सएप काॅलिंग कर रहे हैं। वाट्सएप चीन का नहीं है। भाजपा को अगर डिजिटल

तकनीक पर भरोसा है तो वादा करके क्यों छात्रों को लैपटॉप नहीं बांटे? क्यों मुफ्त में डाटा नहीं दिया? सपा सरकार में इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग का जो काम शुरू हुआ, उसे क्यों आगे नहीं बढ़ाती?

आप प्रदेश की कानून व्यवस्था पर सवाल कर रहे हैं, कहाँ कमी मानते हैं?

कमी तो सरकार में है। सरकार हट जाए तो सब ठीक हो जाएगा। सपा सरकार ने अपराध नियंत्रण के लिए आधुनिक वाहनों साथ यूपी डायल 100 सेवा शुरू की। इसका रिस्पांस टाइम 5 से 10 मिनट था। महिलाओं की सुरक्षा व सम्मान के लिए 1090 वीमेन पावर लाइन शुरू की थी। भाजपा सरकार ने इन सेवाओं को बर्बाद कर दिया। सरकार बदले की भावना से काम कर रही है। रामपुर के डीएम, एसपी, पूर्व डीजीपी और मुख्यमंत्री कार्यालय ने आज़म खां को झूठे मामलो में फंसाने का काम किया। मुख्यमंत्री ने अपने खिलाफ हत्या व दंगे के केस वापस लिए। क्या इससे कानून व्यवस्था सुधरेगी? राजनीतिक लोगों को फंसाने की जो गलती कांग्रेस करती थी, वही अब भाजपा कर रही है। यह तरीका ठीक नहीं है।

सपा के युवा संगठनों ने 26 जून को पेट्रोल-डीजल की मूल्य वृद्धि के खिलाफ आंदोलन किया। क्या माना जाए कि सपा अब पूरी तरह विपक्षी तेवर में आ गई है?

समाजवादी पार्टी अब हर महीने 22 तारीख को सरकार के खिलाफ प्रदर्शन करेगी। पेट्रोल-डीजल मूल्य की वृद्धि बड़ा मुद्दा है, इसलिए पूरे प्रदेश के साथ ही लखनऊ में विधानभवन व लोकभवन के सामने प्रदर्शन किया गया, जहां बैठकर नकली अधिकारी ठेके के नाम पर लोगों को लूट रहे थे।

2022 के विधानसभा चुनाव में आपकी क्या रणनीति रहेगी?

हम पिछली समाजवादी सरकार के काम और नया घोषणा पत्र लेकर जनता के बीच जाएंगे। साइकिल लगातार चलेगी, रथ भी चलेगा। भाजपा ने धोखे के

सपा सरकार ने अपराध नियंत्रण के लिए आधुनिक वाहनों साथ यूपी डायल 100 सेवा शुरू की। .... महिलाओं की सुरक्षा व सम्मान के लिए 1090 वीमेन पावर लाइन शुरू की थी। भाजपा सरकार ने इन सेवाओं को बर्बाद कर दिया।

अलावा कुछ नहीं किया। उसके मेक इन इण्डिया, अच्छे दिन, आत्मनिर्भर जैसे नारे फेल हो रहे हैं। लोग अपने आस-पास देख रहे हैं। किसी के लिए कुछ किया हो तो बताएं। संकट के समय भी सपा सरकार के समय की एम्बुलेन्स, अस्पताल, मेडिकल कालेज जनता के काम आ रहे हैं। प्रधानमंत्री अब स्वीकार कर रहे हैं कि सोशल डिस्टेंसिंग के अलावा कोरोना का न इलाज है, न ही दवा। जब भाजपा जनता को गुमराह करके 325 सीटें जीत सकती है तो हम काम के बल पर 351 क्यों नहीं। समाजवादी पार्टी हर जाति, धर्म के लोगों को साथ लेकर, उनका सम्मान करके चुनाव में उतरेगी। सरकार के खिलाफ हर वर्ग में नाराजगी है।

क्या एंटी इनकंबेंसी फैक्टर बनेगा?

एंटी इनकंबेंसी पूरी है। भाजपा को डुबोने के लिए भाजपा के लोग ही काफी हैं। हमें तो बस मैनेजमेंट करना है। भाजपा विधायक घरों पर बैठकर अपनी ही सरकार को कोस रहे हैं। मंत्री नहीं समझ पा रहे की क्या करें? भाजपा के एमएलए सरकार के खिलाफ खड़े हैं। सरकार सदन तक बुलाने की स्थिति में नहीं है। हालांकि 6 माह बाद संविधानिक रूप से सदन आहूत करना पड़ेगा। बुराई इतनी बढ़ गई है कि सड़को पर दिखाई दे रही है। लोगों को समाजवादी सरकार के काम अब याद आ रहे हैं। ये मनरेगा, हलवाई, बाटी चोखा बनाने वालों को रोजगार देना बता रहे हैं।

सपा अकेले चुनाव लड़ेगी या गठबंधन करके?

प्रदेश मे सपा अकेले लड़ाई लड़ने जा रही है। हम किसी बड़े दल (बसपा या कांग्रेस) से गठबन्धन नहीं करेंगे। राष्ट्रीय लोकदल से हमारा गठबन्धन है और रहेगा। सेकुलर सोच वाले छोटे दलों को साथ लेने पर विचार करेंगे।

भाजपा को पता है उसकी लड़ाई किससे है

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष
माननीय श्री **अखिलेश यादव** जी द्वारा **नवभारत टाइम्स**
दैनिक समाचार पत्र के प्रतिनिधियों श्री मनीष श्रीवास्तव व श्री प्रेमशंकर मिश्र के साथ विशेष वार्ता
(दिनांक: 6 जुलाई, 2020 के अंक में प्रकाशित)

*समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव कहते हैं कि कोरोना की आपदा से राजनीति की कार्यशैली में भी बदलाव आएगा। उसके साथ साम्य बिठाना शुरू भी हो गया है। यूपी में प्रियंका गांधी की अगुवाई में सक्रिय होती कांग्रेस, उस पर हमलावर होती भाजपा को अखिलेश खतरा नहीं, भाजपा की 'दिव्यचाल' मानते हैं। उनका कहना है कि भाजपा को पता है कि उसकी लड़ाई किससे है। कानपुर के विकास दुबे प्रकरण में सपा पर लगे आरोपो पर अखिलेष सरकार को चुनौती देते हैं कि वह पांच साल के सीडीआर सार्वजनिक करे। आज की राजनीति, सत्ता के आंकलन और कल की रणनीति जैसे अहम मुद्दों पर मनीष श्रीवास्तव व प्रेमशंकर मिश्र के सवालों पर कुछ यूं रहे श्री **अखिलेश यादव** जी के जवाब:-*

कोरोना काल ने नेता को कितना बदला है? नई चुनौतियां क्या हैं?

रूटीन बहुत बदल गया है। सब कुछ नए से शुरू करने जैसा है। कार्यकर्ताओं और पदाधिकारयों से अब मोबाइल फोन व विडियो कॉल के जरिए बात हो रही है। आप जानते हैं कि आपकी हर बात रेकॉर्ड हो रही है। इसलिए संवाद की अपनी सीमाएं भी हैं। लेकिन, इन बदलावों के साथ हम जनता तक पहुंच रहे हैं। सरकार की असफलता को उजागर कर रहे हैं।

प्रियंका गांधी लखनऊ में घर तलाश रही हैं। उनके हर ट्वीट का जवाब देने के लिए भाजपा के नेता आक्रामक हैं। वहीं मुख्य विपक्ष सपा उतनी मुखर नहीं है क्या? कांग्रेस की आक्रामकता चुनौती नहीं?

राजनीति में कल क्या होगा कोई नहीं जानता। सब सत्ता तक पहुंचना चाहते हैं। लेकिन, फैसला तो जनता करेगी। भाजपा को पता है उसकी असली लड़ाई किससे है। इसलिए इस चाल को समझना होगा। कि किसे जवाब देकर सामने खड़ा किया जा रहा है। भ्रम फैलाना की रणनीति है। लेकिन, हमें उम्मीद है कि जनता समाजवादियों का काम देखते हुए हमें मौका देगी। जो भी विपक्ष में हैं उन्हें सरकार को एक्सपोज करना चाहिए।

लेकिन, बीएसपी प्रमुख मायावती के सुर तो बदले हुए हैं? विरोध कम सुझाव ज्यादा है?

मैं उनकी पार्टी पर कोई टिप्पणी नहीं करूंगा। लेकिन, उनकी भाजपा से पुरानी दोस्ती है, सब जानते हैं।

कानपुर में अपराधी विकास दुबे को पकड़ने गए आठ पुलिसकर्मी शहीद हुए। विकास के तार आपके दल से जोड़े जा रहे हैं?

हमारी मांग है कि उसके फोन की पांच सालों की या तकनीक हो तो और पहले की सीडीआर जारी की जाए। पुलिस उसके यहां चाय पीने जाती थी भाजपा के बड़े नेता उसके दुआ-सलाम में थे। सीधे-सीधे उसे सत्ता का संरक्षण था।

सरकार का दावा है कि आपदा में हर जरूरतमंद तक मदद पहुंची है। इससे आपकी क्या नाइत्तेफाकी है?

सरकार की जरूरतमंदों तक मदद पहुंचती तो खौफनाक मंजर हमें नहीं देखना पड़ता। प्लानिंग से लेकर अमल हर मोर्चे पर सरकार फेल रही। उसे सब मालूम

है कि कितना और कहां तक संक्रमण है, लेकिन वह इसे जनता से छुपा रही है। मैंने सीएम के इंटरव्यू देखे हैं। वह जब फंसते हैं तो पीएम के पीछे खड़े हो जाते हैं। मोदीजी के मार्गदर्शन का राग दोहराते हैं।

लेकिन पीएम का कहना है कि कोरोना की लड़ाई में सीएम की अगुआई में यूपी ने विकसित देशों को पीछे छोड़ा?

जनता भी यह सोच रही है कि पीएम क्या कह रहे हैं? यूरोप का एक भी देश बता दो जहां गर्भवती महिला 800 किमी पैदल चली हो। जहां 'लॉकडाउन' और 'बॉर्डर' पैदा हुए हों। सरकार केवल बहाने बनाती रही। अब कहा जा रहा है कि हर्ड इम्यूनिटी ही कोरोना का इलाज है। जब 60ः जनता को संक्रमित ही होना था तो अर्थव्यवस्था क्यों तबाह की?

लेकिन, यूपी में संक्रमण की दर कम है। सीएम रोज टीम-11 के साथ स्थितियों की निगरानी करते हैं?

टीम-11 में सब टॉपर हैं। उनके हेड सीएम हैं। उनके पास 'दिव्यज्ञान' है। यह कौन सी निगरानी थी कि वह रोज हजारों मजदूरों को भूखे-प्यासे सड़कों पर पैदल चलते देखते रहे। हमारे कार्यकर्ताओं ने अपनी क्षमता भर बड़े पैमाने पर मदद की। बेहतर होता कि टीम-11 में डॉक्टर, मेडिकल एक्सपर्ट शामिल किए जाते, तो शायद सरकार तक सही सलाह पहुंचती।

प्रदेश में हर बड़ी घटना के तार सपा से जुड़ जाते हैं? संयोग या सियासत?

कागज तो सरकार तैयार करती है, चाहे जैसा तैयार कर ले। आजम खां साहब पर डीएम-एसपी ने झूठे मुकदमे लगाए। जांच में फंसे एसपी को यह कहकर पूर्व डीजीपी ने रामपुर भेजा था कि आजम को फंसा दोगे तो जांच रुक जाएगी। यह वही सरकार है, जिसमें सीएम और डिप्टी सीएम अपने मुकदमे वापस ले रहे हैं। फर्जी एनकाउंटर हो रहे हैं।

टीम-11 में सब टॉपर हैं। उनके हेड सीएम हैं। उनके पास 'दिव्यज्ञान' है। यह कौन सी निगरानी थी कि वह रोज हजारों मजदूरों को भूखे-प्यासे सड़कों पर पैदल चलते देखते रहे।

अपराधियों पर कार्रवाई होना गलत है?

सरकार ने बड़े अपराधियों की सूची जारी की है। आखिर सरकार के खास अपराधी अपने गृह जिलों में क्यों है? जज के सामने कोर्ट में हत्या की गई। जेल में हत्या हुई। कानपुर की घटना हुई। यह कौन सी कार्रवाई है कि जिम इंस्ट्रक्टर और ठेला चलाने वाले का एनकाउंटर कर रहे हैं। जाति-धर्म देखकर, पिछड़ा, दलित, अल्पसख्यंक देखकर एनकाउंटर होंगे तो पुलिस और कानून व्यवस्था कैसे सुरक्षित रहेगी।

जातिवाद की राजनीति के आरोप आप पर भी थे? मुकदमे वापसी की भी कोशिशें हुई थीं?

करीब चार साल से भाजपा सरकार है, तो आरोप क्यों साबित नहीं कर पाई। सारी भर्तियां मेरिट के आधार पर हुईं। आखिरकार इस सरकार की 69 हजार शिक्षक भर्ती का क्या हश्र हुआ? मुकदमा वापसी बिना कोर्ट की प्रक्रिया के नहीं होती। सरकार बदले की राजनीति में उलझी है। प्रदेश में कोई नया निवेश और रोजगार नहीं आया। किसानों को भुगतान का आंकड़ा गिनाते हैं, लेकिन 15 हजार करोड़ गन्ना मूल्य का बकाया है, यह नहीं बताते।

योगी सरकार का दावा है कि 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निवेश जमीन पर उतरा है?

ऐसा है तो सरकार उनके लोन के कागज जारी करे। इंसेंटिव के लिए बजट प्रावधान दिखाए। आप पुरानी निवेश पॉलिसी के इंसेंटिव दे रहे हैं, वह सब सपा सरकार में हुए थे। साढ़े तीन साल में केंद्र-प्रदेश यूपी में एक प्रॉजक्ट दिखा दे। पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे का केवल नाम बदला। चार साल में वह भी पूरा नहीं हुआ। बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे भी हमारी योजना थी। डिफेंस कॉरिडोर भी जमीन पर नहीं उतरा। इस समय चीन के साथ संवेदनशील स्थिति है। ऐसे में रक्षा में क्या निवेश आएगा। चीन फिंगर 4 तक आ गया है।

पीएम का कहना है कि हमारी एक इंच भी जमीन नहीं गई। सर्वदलीय बैठक में आपके भी प्रतिनिधि थे?

भाजपा और सरकार दोनों ही चीन की भाषा बोल रहे हैं। क्या यह सच नहीं है कि

फिंगर 8 तक हमारी सेना गश्त करती थी, अब फिंगर 4 तक चीन आ गया है। सरकार मानसरोवर की बात क्यों नहीं करती? चीनी बहिष्कार का नारा देने वाले भाजपाई चीनी ऐप पर वर्चुअल रैली करते हैं। स्वदेशी का नारा देने वाले स्वेदशी उद्योगों को बर्बाद करने के लिए जीएसटी लाते हैं, जिससे मल्टीनैशनल्स आगे बढ़ सकें। दुनिया में डंका बजा रहे थे और पड़ोस में नेपाल में ही डंका कमजोर पड़ रहा है।

जिसे आप भाजपा का 'झूठ' बता रहे हैं, उसे सत्ता में रहते हुए नहीं समझा पाए तो अब तो परसेप्शन और संसाधन दोनों की लड़ाई है?

भाजपा की ताकत संगठन नहीं बल्कि अफवाहों को पेश करने की क्षमता है। हम बूथ से लेकर विधानसभा क्षेत्र स्तर तक तैयारी कर रहे हैं। विधानसभा उपचुनावों में कांग्रेस और बसपा के वोटों को बांटने की साजिश के बाद भी हम बेहतर प्रदर्शन करने में सफल रहे। मऊ में हमारा उम्मीदवार बिना सिंबल के जीत के करीब पहुंचा। इसलिए हमारी तैयारी भी सही दिशा में है और जनता का मन भी।

कांग्रेस की तो यूपी में 7 सीटें हैं, आपसे बहुत कम? उससे समझौता की गुंजाइश है?

सीटें भलें कम हैं लेकिन वह बड़ा दल है। बड़े दल के साथ समझौते में आपको बहुत कुछ खोना पड़ता है। हमने उनके अनुभव से भी बहुत कुछ सीखा है। आज (रविवार) गुरु पूर्णिमा भी है। जो आपको अनुभव, सिखाए उसे धन्यवाद कहना चाहिए।

हमारी सरकार होती तो मजदूर पैदल नहीं जाते

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष
माननीय श्री **अखिलेश यादव** जी द्वारा **हिन्दुस्तान**
दैनिक समाचार पत्र के प्रधान संपादक श्री शशि शेखर के साथ विशेष वार्ता
(दिनांक: 26 जून, 2020 के अंक में प्रकाशित)

पूरी दुनिया कोरोना के संकट से गुजर रही है। यूपी में कोरोना से लड़ने के जो उपाय देखे गए, उससे आप संतुष्ट हैं?

मैंने मुख्यमंत्री का साक्षात्कार सुना। उससे तो लग रहा है कि यूपी में कोविड-19 से कोई बीमार ही नहीं हो सकता। मैं कहना चाहता हूॅ यहां आम लोग सरकार के साथ इस महामारी से लड़ने के लिए तैयार थे। लेकिन इतना किसी प्रदेश में नहीं डराया गया होगा जितना यहां भाजपा के मुख्यमंत्री ने डराया।

आप कह रहे हैं कि सरकार ने वाजिब काम नहीं किया लेकिन सच्चाई यह है कि एक भी टेस्ट की सुविधा नहीं थी अब हजारों की हो गई है। आज टेस्ट तो हो रहे होंगे न?

आज 4 महीने हो गए। आज सुविधा बढ़ी है। अब सरकार बता रही है कुछ दिनों बाद हम इतने टेस्ट करने लगेंगे। आपने दो तीन महीने कैसे गुजारे? सरकारी अस्पतालों ने अपनी क्षमता नहीं बढ़ाई। हम ये जानना चाहते है कि सरकार जो मेडिकल कालेज का दावा कर रही है, कह रही है कि इतनी सीटें बढ़ा दी हैं तो मैं उन्हीं से जानना चाहता हूॅ कि उनके कार्यकाल में कौन सा मेडिकल कालेज बना।

आप पांच साल मुख्यमंत्री रहे हैं उप्र में। आपके समय में कोरोना आता तो आप कौन से तीन काम करते?

हमने ट्विटर पर सुझाव दिये हैं उन्होंने कुछ अपनाये, कुछ नहीं। हमारी सरकार होती तो एक भी मजदूर पैदल नहीं चलता। दूसरा खाने की दिक्कत नहीं होती। सपा का ट्रैक रिकार्ड है कि जो वादा किया वो पूरा किया। मैं जानना चाहता हूं कि मुख्यमंत्री ने कौन सा निवेश ला दिया।

आप पर बड़ा आरोप है कि कोविड के समय आपने ने निकलना बन्द कर दिया। आपके कार्यकर्ताओं ने भी आप का अनुसरण किया। सारी बात ट्विटर और सिर्फ सोशल मीडिया पर हो रही है।

यह बात एकदम ठीक नहीं है। जितनी मदद सपा कार्यकर्ताओं ने शुरूआती दौर में की किसी और ने नहीं की। जिस समय मदद की जरूरत थी हमारे कार्यकर्ता ही आगे आए। जगह-जगह पर मदद की, खाना खिलाया और मजदूरों को उनके घर तक पहुॅचाने के इंतजाम किए। हम लोग निकल पड़ते तो आप ही लोग खबर चलाते कि हमने सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नहीं किया।

सबसे पहले बसें उन्होंने ही भेजी थी जयपुर, दिल्ली बार्डर पर भी। कुछ बसें तो भेजी गई थीं न?

अच्छी बात है कोटा से बच्चों को निकाला वह अच्छी बात है। सरकार के पास 70 हजार बसें हैं। सरकार उनसे मजदूरों को पहुॅचा सकती थी। रेलवे का बड़ा नेटवर्क था।

बस से याद आया कि प्रियंका गांधी के प्रोत्साहन पर राजस्थान सरकार ने बसें भेजीं। आप का क्या कहना है जो 24 घंटे का दृश्य टीवी पर देखने को मिला?

हमारे यूपी के सीएम किसी से मदद नहीं लेंगे। जब इन्हें बचना होगा तो प्रधानमंत्री जी को आगे कर देंगे। बसों को लेना चाहिए था। यह बहाना नहीं करना चाहिए था कि फिट नहीं हैं बसें।

चीन से लगी सीमा पर कशमकश जारी

“

हमारी सरकार होती
तो एक भी मजदूर
पैदल नहीं चलता।
दूसरा खाने की दिक्कत
नहीं होती।
सपा का ट्रैक रिकार्ड है
कि जो वादा किया वो
पूरा किया।

”

है। प्रधानमंत्री ने जो सर्वदलीय बैठक की थी उसमें आप भी थे। तो क्या बातें हुई, आप संतुष्ट हुए, उन्होंने जो कहा?

चीन का मुद्दा हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा का बड़ा सवाल है। सपा ने राममनोहर लोहिया, नेताजी से लेकर अब तक यही माना है कि भारत को पाकिस्तान से ज्यादा चीन से खतरा है। कई मौकों पर डा. लोहिया, नेताजी और सपा ने कहा है कि चीन कभी भी धोखा दे सकता है। देखिए परिणाम क्या हुआ। भारत की धरती पर भारत के जवान शहीद हुए हैं।

पीएम ने ऑन रिकार्ड कहा कि हमारे जो जवान थे जिन्होंने मातृभूमि के लिए शहादत दी, जिन लोगों ने भारत मां की तरफ नजर उठा कर देखा था उन्हें सबक सिखाया, उन्होंने यह भी कहा कि एक भी इंच जमीन पर कोई विदेशी फौज नहीं है? आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

मैं प्रधानमंत्री के इस कथन से सहमत नहीं हूॅ। मेरे जैसे न जाने कितने भारतीय वासी हैं जो इस कथन से बिल्कुल सहमत नहीं है। इसलिए मैंने शुरूआत में कहा कि यह हमारे देश की सुरक्षा का सवाल है।

आपने उद्योगों की बात की तो इस समय मांग बहुत जोर पकड़ रही है कि चीन के माल का बहिष्कार करो। आप क्या कहना चाहते हैं कि ऐसा करना अभी अनुचित होगा?

मैंने ये कहा है कि इसका जरूर विरोध होना चाहिए। सामान रोकना चाहिए। केन्द्र सरकार ने 20 लाख करोड़ का पैकेज बनाया है क्या उससे चीन से व्यापार रूक जाने के बाद देश के उद्योगों या व्यापार को मदद मिलेगी।

मुख्यमंत्री सवा करोड़ लोगों को रोजगार देने का उद्घाटन करने जा रहे हैं?

क्या मनरेगा को भी अपने रोजगार में गिनेंगे? मनरेगा में 70-90 लाख रू0 का बजट पहले से ही था। मैं मुख्यमंत्री जी से पूछना चाहूँगा कि नए रोजगार अवसर के लिए आपने कितने बजट का इन्तजाम किया है। क्या बिना बजट के रोजगार दे देंगे?

चीन का मुद्दा हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा का बड़ा सवाल है। ..... कई मौकों पर डा. लोहिया, नेताजी और सपा ने कहा है कि चीन कभी भी धोखा दे सकता है। देखिए परिणाम क्या हुआ।

अध्यापकों के मामले में उनका कहना है कि हमने बैकलाॅग खत्म किया है। नियुक्तियों को पारदर्शी किया है। अध्यापकों के मामले में सरकार के पक्ष में अदालत का आदेश आया है।

69 हजार भर्ती मामले में तमाम उलझनें हैं। सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट, डबल बेंच, एसटीएफ जांच, पेपर आउट हुआ है, नम्बरों में हेराफेरी है, आरक्षण को लेकर सवाल है। 69 हजार भर्ती को सरकार की नीयत ने इतना उलझा दिया है कि उन्हें जल्द नौकरी नहीं मिलेगी। सरकारी नौकरियां कितनी दी हैं, मुख्यमंत्री केवल इसका आंकड़ा दें।

आप पर आरोप हैं कि यदि आजम खां साहब पर फर्जी मुकदमें लगाये गये तो सपा ने उसे इस तरह नहीं लड़ा जिस तरह लड़ा जाना चाहिए?

सपा ने लड़ाई लड़ी। रामपुर से लेकर विधानसभा, लोकसभा तक में लड़ी। लगातार आजम खां साहब के साथ लड़ाई में खड़े दिखाई देंगे। जमानत मिल रही है, कोर्ट राहत दे रहा है, हमें उम्मीद है कि न्यायालय उनकी मदद करेगा।

अब राजनीति की बात। चुनाव की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। उनकी तैयारियां और रैलिया शुरू हो गई हैं। आप की तैयारी क्या है?

सपा की तैयारी है। सरकार कैसे बनाएं और उस दिशा में संगठन और पार्टी के युवा बड़ी तैयारी के साथ काम कर रहे हैं।

अखिलेश जी आपका मुख्य चुनावी मुद्दा क्या होने जा रहा है, आप किन बड़ी चीजो पर चुनाव लड़ेंगे?

मैं भरोसा दिलाता हूं कि समाजवादी पार्टी प्रदेश का इंफ्रास्ट्रक्चर बेहतर करने के लिए काम करेगी। जिस तरह स्वास्थ्य के क्षेत्र में बेहतरीन काम किया था। मेडिकल कालेज और एम्बुलेन्स से लेकर तमाम सुविधाएं और कानून व्यवस्था के

लिए जो बेहतरीन रिस्पांस सिस्टम क्रिऐट किया था, जो डायल 100 था, अब 112 है। इस तरह के इंतजाम करके ऐसा माहौल बनाना है जिससे इंवेस्टर आएं। मुझे खुशी है इस बात की कि यूपी में सैमसंग का सबसे बड़ा प्लांट सपा सरकार ने लगाया।

पेट्रोल, डीजल की कीमतें बढ़ रही हैं लगातार, आज तेजस्वी यादव ने साइकिल चलाई हालांकि आप तो बहुत साइकिल लवर हैं इस संबंध में आप क्या कहना चाहेंगे।

धीमे-धीमे सबको साइकिल पर आना है। मैं दुनिया के दूसरे हिस्सों के बारे में पढ़ता हूं तो जबसे कोविड-19 की बीमारी आई है लोगों ने साइकिल का इस्तमाल बढ़ा दिया है।

#काम बोलता है

सपा का काम जनता के नाम

समाजवादी पार्टी

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव का

47 वां जन्मदिवस

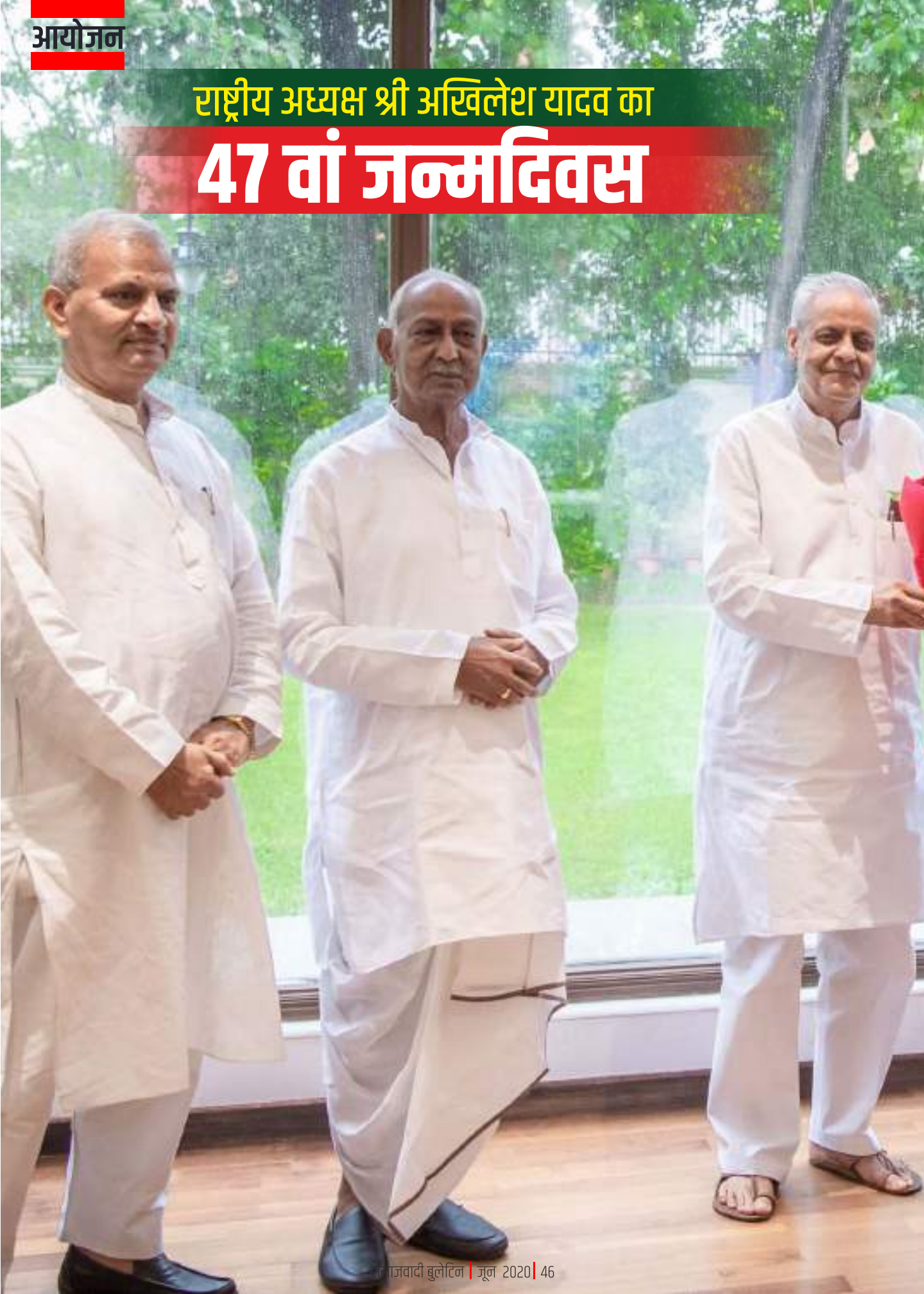

समाजवादियों ने गरीबों-जरूरतमंदों की मदद कर मनाया अपने नेता का जन्मदिन

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव का 47वां जन्मदिवस 1 जुलाई को उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त उत्तराखण्ड, आंध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, मध्य प्रदेश, सहित विभिन्न स्थानों पर सादगी से मनाया गया। लोकसभाध्यक्ष श्री ओम बिड़ला समेत विभिन्न दलों के कई प्रमुख नेताओं, सांसदों, विधायकों पूर्व मंत्रियों तथा समाजवादी पार्टी के नेताओं ने उनके स्वास्थ्य एवं दीर्घजीवन की कामना की। इनके अतिरिक्त अधिकारियों, अधिवक्ताओं, पत्रकारों, साहित्यकारों एवं कवियों ने भी उन्हें जन्मदिन की बधाई दी।

कोरोना संकट को देखते हुए श्री अखिलेश यादव ने उनके जन्मदिन पर सार्वजनिक रूप से कोई आयोजन नहीं करने और गरीबों की मदद करने का निर्देश दिया था। अत: पार्टी

पदाधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं ने प्रदेश के सभी जनपदों में कई कार्यक्रम आयोजित किए जिसमें अस्पतालों में फल वितरण, गेहूं, चावल, दाल के पैकेट गरीबों को भोजन तथा वस्त्र वितरण एवं वृक्षारोपण, हवन, रक्तदान कर जन्मदिन मनाया। स्वयं श्री अखिलेश यादव ने पार्टी मुख्यालय में हिम चम्पा के पौधे रोपे। मंदिरों के परिसर में लगने वाला यह एक पवित्र वृक्ष है। उन्होंने कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया कि वे गरीबों की मदद करते रहें। प्रदेश के कई स्थानों में कार्यकर्ताओं ने साइकिल चलाकर जन्मदिन मनाया।

यद्यपि श्री अखिलेश यादव ने अपने जन्मदिवस पर कोई भी सार्वजनिक आयोजन मुख्यालय में न करने का निर्देश दे रखा था तथापि अपने प्रिय नेता को जन्मदिन पर बधाई देने के लिए सैकड़ों कार्यकर्ता तथा पदाधिकारी समाजवादी पार्टी मुख्यालय 19, विक्रमादित्य मार्ग लखनऊ के बाहर आ जुटे। उन सभी को धन्यवाद देकर विदा किया गया।

श्री अखिलेश यादव के जन्म दिवस पर देश-प्रदेश में जो उत्साह एवं उनको सन् 2022 में पुनः मुख्यमंत्री बनाने का संकल्प लेते जो सैकड़ों संदेश मिले उससे उनकी बढ़ती लोकप्रियता और जनता में उनके प्रति असीम विश्वास का परिचय मिलता है। लोगों को भरोसा हो गया है कि श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में राजनीति के एक नए अध्याय का पृष्ठ खुलेगा। उनमें भविष्य की असीम सम्भावनाएं है।

पूर्व सांसद एवं वरिष्ठ कवि, साहित्यकार श्री उदय प्रताप सिंह ने श्री अखिलेश यादव को सुखद एवं सफल दीर्घजीवन का आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा कि उन्होंने अखिलेश जी जैसे किरदार का नेता नहीं देखा। उनकी शिष्ट भाषा, पद का गुमान रहित, सबसे सदव्यवहार, दूरदृष्टि, कर्मठता, लगन, राजनैतिक इच्छाशक्ति, प्रखर बुद्धि, अध्ययनशील जिज्ञासा, अपराधी प्रवृत्ति के लोगों से परहेज जैसे अनेक गुण के बावजूद आज तक उन्होंने अपने धुर विरोधी जो उनकी आलोचना करते नहीं अघाते उनको भी अपशब्द कहना तो दूर जब लिया पूरे सम्मान से नाम लिया है। अपने कार्यकाल में उन्होंने कई जमीनी काम निष्पक्षता से किए हैं व अवस्थापना सुविधाएं बढ़ाई है। श्री उदय प्रताप ने मंगल कामना की कि अखिलेश यादव राजनीति के सर्वोच्च शिखर पर पहुंच कर देश सेवा करें।

मथुरा के श्री कृष्ण कन्हाई ने अखिलेश जी का चित्र बनाकर उन्हें जन्मदिन की बधाई दी। सचिवालय में उनके बनाए सभी पूर्व मुख्यमंत्रियों के तैल चित्र है। लखनऊ आकर श्री ललिता देवी मंदिर के प्रधान पुजारी एवं श्री ललिता आश्रम नैमिषारण्य के संचालक श्री लाल बिहारी ने अखिलेश जी को जीवन में सफलता एवं यशस्वी होने का आशीर्वाद दिया। नैमिषरण्य में साधु-संतो ने हवन पूजन के साथ अखिलेश जी को जन्मदिवस पर बधाई दी। मथुरा-वृंदावन में हवन, वृक्षारोपण तथा पूजापाठ कर अखिलेश जी के दीर्घजीवन की प्रार्थना की गई। सूरत के श्री निमेष ने तथा उनके पिता जी ने भी अखिलेश जी को जन्मदिन की बधाई दी। जौनपुर में समाजवादी कुटिया के बच्चों ने गीत गाकर जन्मदिन मनाया।

प्रोफेसर रामगोपाल यादव को जन्मदिवस पर शुभकामनाएं

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव एवं राज्यसभा सदस्य प्रोफेसर रामगोपाल यादव जी का जन्मदिवस दिनांक 29 जून को सादगी के साथ मनाया गया। कोरोना महामारी से उत्पन्न हालातों के मद्देनजर प्रोफेसर साहब ने पार्टी के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं से अपील की थी कि जन्मदिवस पर कोई आयोजन न हो बल्कि सामाजिक दूरी का पालन करते हुए जरूरतमंद लोगों की मदद की जाए। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने जन्मदिवस पर उनके सुखद एवं मंगलमय जीवन की कामना की। प्रोफेसर रामगोपाल यादव जी के स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन की शुभकामना करते हुए राष्ट्रीय सचिव एवं प्रवक्ता श्री राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल तथा एमएलसी श्री एसआरएस यादव ने भी उन्हें जन्मदिन की बधाई दी।

अपने प्रिय नेता के जन्मदिन पर स्वतः उत्साह के साथ समाजवादी पार्टी के नेताओं ने विभिन्न जनपदों में अपने-अपने ढंग से कार्यक्रम आयोजित किए। बालामऊ (हरदोई) में 103 वर्ष की बुजुर्ग सोनकर महिला सहित 50 गरीब महिलाओं को साड़ी दी गई। उन्होंने श्री अखिलेश जी को ढेरो आशीर्वाद दिए। सैफई गांव में सादगी से जन्मदिन मनाते हुए नौजवानों ने इटावा मैनपुरी फोरलेन सड़क के किनारे 47-47 पौधों का रोपण किया। लाॅयन सफारी के आसपास भी वृक्षारोपण किया गया। राजधानी में 50 गरीबों को 5-5 किलो चावल-दाल के पैकेट बांटे गए। श्री अखिलेश यादव की ओर से उन्नाव जनपद में इंटर परीक्षा में प्रथम शीर्ष स्थान प्राप्त वैभव द्विवेदी को लैपटाॅप और हाईस्कूल में प्रथम शीर्ष पर आने वाली कु0 रागिनी वर्मा को साइकिल तथा 51 सौ रूपये देकर सम्मानित किया गया।

श्री अखिलेश यादव के जन्मदिवस पर उत्तराखण्ड में समाजवादी पार्टी के देहरादून परेड ग्राउण्ड स्थित राज्य कार्यालय में पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री एसएन सचान ने श्री अखिलेश यादव का 'आव्हान' पत्रक जारी किया और इसके संदेश को घर-घर तक पहुंचाने का संकल्प व्यक्त किया। सरस्वती सोनी मार्ग देहरादून स्थित अखिल भारतीय महिला अनाथ आश्रम में फल, मिष्ठान्न व भोजन वितरण कर जन्मदिन मनाया गया।

हरिद्वार, रूड़की, ऋषिकेश, बाजपुर, पिथौरागढ़, हल्द्वानी , कोटद्वार, चम्पावत, काशीपुर व पौड़ी में भी कार्यक्रम हुए जिनमें में श्री अखिलेश यादव के स्वास्थ्य एवं दीर्घजीवन की कामना की गई। आंध्र प्रदेश के हैदराबाद से श्री मधुपट्टा एवं दर्जनों अन्य लोगों ने वीडियोंकाॅलिंग कर अखिलेश जी को जन्मदिन की बधाई दी। हैदराबाद में अखिलेश जी के तमाम समर्थकों एवं प्रशंसकों द्वारा सैकड़ों स्थानों पर जन्मदिन मनाया गया हैं। अखिलेश जी ने इन सभी के प्रति आभार जताया तथा धन्यवाद दिया। पूर्व सांसद श्रीमती डिम्पल यादव ने अखिलेश जी के जन्मदिन को सादगी के साथ मनाए जाने और उन्हें बधाई देने वालों के प्रति आभार व्यक्त किया।

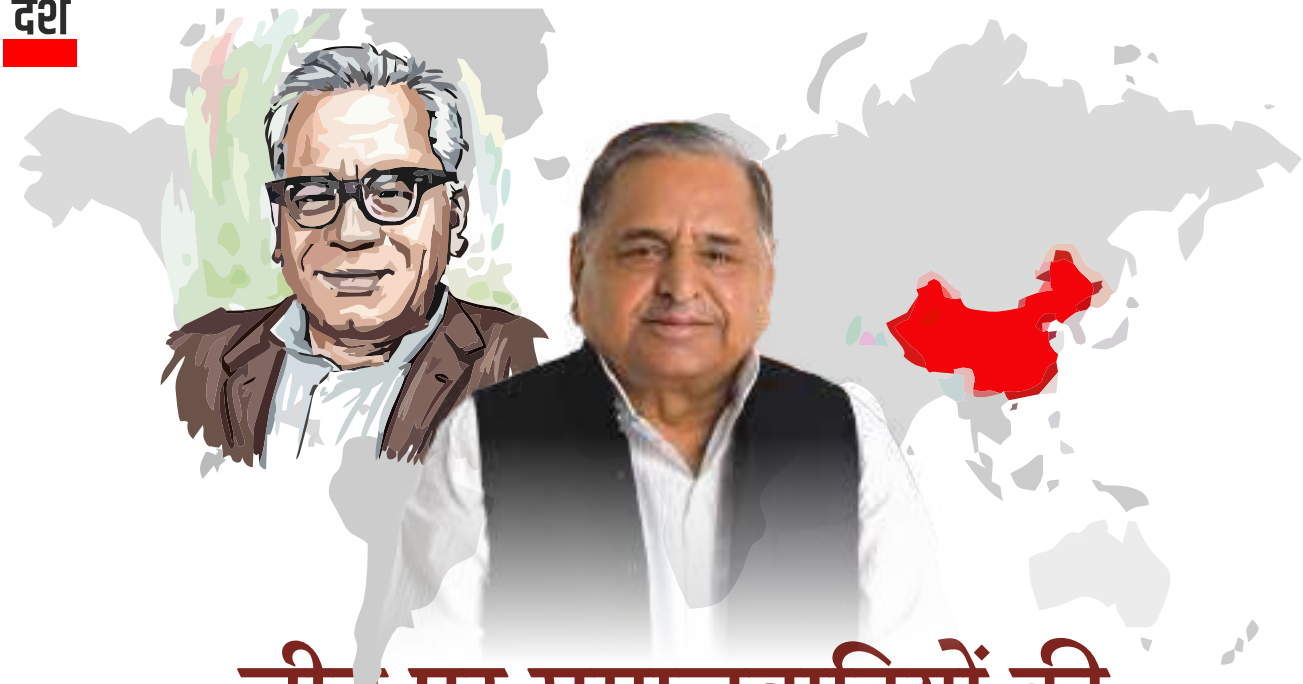

चीन पर समाजवादियों की नीति रही है सबसे स्पष्ट

बुलेटिन ब्यूरो

भारत-चीन सीमा पर हालिया घटनाक्रम से विदेश नीति के मोर्चे पर भारत सरकार की विफलता नज़र आने लगी है। भारत सरकार की गलत नीतियों के चलते सीमाओं पर तनाव है। नेपाल जैसा मित्र राष्ट्र भी अब भारत को आंख दिखाने लगा है। भारत सरकार चीन-नेपाल के बदलते रवैये पर अब तक कड़ी प्रतिक्रिया देने से बचती दिखाई देती है। जबकि भारत को अपने राष्ट्रीय हितों की दृष्टि से केन्द्र सरकार को तत्काल कठोर कदम उठाने चाहिए।

चीन पर समाजवादियों की नीति सर्वाधिक स्पष्ट रही है। डॉ. राम मनोहर लोहिया व श्री मुलायम सिंह यादव कई मौकों पर यह कह चुके हैं कि चीन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। इस संबंध में डॉ राममनोहर लोहिया ने दिसम्बर 1950 में नागपुर में सोशलिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में स्पष्ट चेतावनी दी थी कि हिमालयी प्रदेशों के बारे में केवल तटस्थता या उदासीनता की नीति अपनाई जाएगी तो सियासी रिक्ति प्रस्तुत होगी। उन्होंने ही पहली बार चीन की तिब्बत पर कुदृष्टि के मद्देनज़र यह भविष्यवाणी भी की थी कि अब हिमालय के हिन्दुस्तान का कुदरती संरक्षक न रहने का खतरा पैदा हुआ है। वहीं श्री मुलायम सिंह यादव ने तो लोकसभा में दो टूक यह बात कही थी। केन्द्र सरकार ने नेताजी की चेतावनी को गंभीरता से लिया होता तो आज यह नौबत न आती कि चीन हमारी सीमा में घुसपैठ कर लेता।

दरअसल चीन ने जब तिब्बत पर कब्जा किया था, तभी से वह भारत के लिए खतरा बना हुआ है। देश को सबसे पहले इस खतरे की चेतावनी डॉ. राममनोहर लोहिया ने दी थी। तिब्बत पर चीनी हमले को उन्होंने 'शिशु हत्या' करार देते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से कहा था कि वे तिब्बत पर चीनी कब्जे को मान्यता न दें, लेकिन तत्कालीन सरकार ने डॉ. लोहिया की सलाह नहीं मानी और चीनी नेता चाऊ एन लाई से अपनी दोस्ती को तरजीह दी थी। जिसके कुछ दिन बाद ही चीन ने भारत पर हमला कर दिया था।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव की भी चीन पर स्पष्ट राय है। उन्होंने कहा है कि पूर्वी लद्दाख में भारतीय सीमा क्षेत्र में चीनी सेनाओं द्वारा अतिक्रमण भारत की संप्रभुता पर चोट है। चीन विस्तारवादी नीतियों पर

चीन पर केन्द्र की बैठक में समाजवादी पार्टी ने दिए अहम सुझाव

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चीन के साथ टकराव से उत्पन्न हालातों पर 19 जून 2020 को विपक्षी दलों के साथ जो बैठक बुलाई उसमें समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं सदस्य राज्यसभा प्रो. रामगोपाल यादव जी ने भाग लिया।

बैठक में उन्होंने गलवान घाटी की घटना के संदर्भ में कहा कि चीन और पाकिस्तान पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता है। हमें हमेशा सतर्क रहना पड़ेगा। डोकलाम के बाद गलवान घाटी की घटना को देखते हुए हमें लांगटर्म के लिए तत्काल प्रभाव से तैयारी करनी चाहिए। उन्होंने कहा युद्ध अंतिम विकल्प होता है। उन्होंने चीन को आर्थिक क्षति पहुंचाने को अस्त्र-शस्त्रों की चोट से भी ज्यादा खतरनाक बताया। उन्होंने हर छह माह में सर्वदलीय बैठक बुलाने का भी सुझाव दिया।

प्रो. रामगोपाल यादव जी ने सर्वदलीय बैठक में कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उन्होंने कहा सरकार कुछ भी कहें किन्तु सच यह है कि चीन ने हमारी कुछ जमीन पर कब्जा कर लिया है। इसको कूटनीतिक राजनीतिक वार्ताओं के जरिए वापस लेना होगा। उन्होंने कहा कि प्राथमिकता के तौर पर चीन-पाकिस्तान की सीमा तक जाने वाली सड़कों को सिक्सलेन हाईवेज में परिवर्तित करने के लिए युद्धस्तर पर कार्य शुरू करना होगा। जैसे ग्वालियर से लिपुलेख तक जाने वाली सड़क ग्वालियर कैण्ट, फतेहगढ़ कैण्ट, बेरली कैण्ट से सीधे जुड़ती है। लखनऊ कैण्ट और कानपुर कैण्ट से भी हमारी सेनाए काफी कम समय में इस हाईवे पर पहुंच सकती है।

उन्होंने कहा कि चीनी उत्पादों का आयात रोका जाना चाहिए क्योंकि उनसे हमारे कुटीर उद्योग खत्म हो गए है और करोड़ों लोग बेरोजगार हो गए है। भारत चीन के उत्पादों का डम्पिंग ग्राउण्ड बन गया है। आयात पर तत्काल रोक पर कोई दिक्कत हो तो चीन से आयातित उत्पादों पर 300 प्रतिशत डयूटी लगाने की व्यवस्था होनी चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि अरुणाचल प्रदेश से लेकर कच्छ तक जितने लोकसभा क्षेत्र, चीन और पाकिस्तान की सीमा से मिलते हैं, उनके सांसदों से हर तीन माह में मिलकर जमीनी हकीकत की जानकारी लेनी चाहिए।

प्रो. रामगोपाल यादव जी ने कहा कि युद्ध किसी देश के लिए हितकर नहीं होता है, यह केवल विनाश लाता है। इसलिए शांति के यदि प्रयास असफल हो जाएं और चीनी सैनिक हमारी सीमाओं से वापस न हटें तो युद्ध को अंतिम विकल्प के रूप में ही चुना जाए और इस अवधि में भारत को अपनी सेनाओं को पूरी तरह सुसज्जित करके सीमाओं की रक्षा के लिए तैयार रखा जाए।

चल रहा है। भारत की प्रगति से उसे जलन है। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के अलावा अक्साईचिन पर भी चीन की निगाह है। उन्होंने भारतीय विदेश नीति पर डाक्टर राममनोहर लोहिया का यह कथन उद्धृत किया कि "कमजोरों के सामने गरमी और ताकतवरों के सामने नरमी यह नीति चलती रही है। कोई राज्य जब विदेशी पर अपना जोर नहीं दिखा पाता है तो वह अपने देशवासियों पर उसका इस्तेमाल करता है। हिमालय सम्बंधी हमारी सभी नीतियां इसलिए असफल रहेंगी क्योंकि हमारा दिल उनमें नहीं है। यह सरकार कोई काम ठीक से नहीं कर सकती है।"

अखिलेश जी ने अपने बयान में कहा कि आज पूरा देश व हर दल, चीन और एलएसी पर भारत सरकार के साथ पूरे विश्वास के साथ खड़ा है। अब सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि देश की सीमाओं के साथ ही जनता के विश्वास की भी शत-प्रतिशत रक्षा है। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी सरकार के समय बने आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे आज देश की सेना के लिए रनवे की तरह तैयार है। यहां लड़ाकू विमान उतर सकते है और यहां से उड़ान भी भर सकते हैं। यह एक्सप्रेस-वे एक दूरगामी निवेश की सोच का परिणाम है जिसका दोहरा लाभ देश के सैनिकों एवं जनता को निरंतर मिलता रहेगा।

समाजवादियों की प्रेरणा हैं दिवंगत दिग्गजों की

यादें

बुलेटिन ब्यूरो

श्री बेनी प्रसाद वर्मा

समाजवादी पार्टी के कद्दावर नेता, पूर्व केन्द्रीय मंत्री व राज्यसभा सदस्य श्री बेनी प्रसाद वर्मा 'बाबूजी' का 27 मार्च 2020 को लखनऊ में निधन हो गया। उन्होंने लखनऊ स्थित मेंदांता अस्पताल में अंतिम सांस ली जहां उनका इलाज चल रहा था। वे 79 वर्ष के थे।

उनके निधन की सूचना मिलते ही समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव तत्काल अस्पताल पहुंचे एवं दिवंगत बेनी बाबू को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की व उनके शोकाकुल परिजनों को ढांढस बंधाया।

11 फरवरी 1941 को बाराबंकी जनपद के सिरौली ग्राम में पैदा हुए श्री बेनी प्रसाद वर्मा समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्यों में से प्रमुख थे। वे लोकसभा व उत्तर प्रदेश विधानसभा के कई बार सदस्य व केन्द्र व राज्य सरकार में मंत्री भी रहे। वर्ष 2016 में वे समाजवादी पार्टी के सदस्य के रूप में राज्यसभा के लिए निर्वाचित हुए। आजीवन समाजवादी विचारधारा के प्रबल पैराकार बेनी बाबू समाजवादी पार्टी के और देश के दिग्गज नेताओं में शुमार किये जाते थे। वे सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव के बेहद करीबी नेताओं में से थे।

श्री वर्मा 1993 सरकार में प्रदेश के लोकनिर्माण और संसदीय कार्यमंत्री बने। वे 1996 में कैसरगंज लोकसभा क्षेत्र से सांसद चुने गए व केन्द्र में संयुक्त मोर्चा की सरकार में केन्द्रीय संचार मंत्री बनाए गए। उसके बाद वे 1998, 1999, 2004 में भी यानी लगातार चार बार कैसरगंज लोकसभा क्षेत्र से सांसद चुने गए। वे 2009 में गोण्डा से सांसद निर्वाचित होकर केन्द्रीय मंत्री बने। 2016 में बेनी बाबू राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित हुए।

बाबूजी के बताए रास्ते पर चल रहे

- राकेश वर्मा

बेनी बाबू के पुत्र पूर्व मंत्री श्री राकेश वर्मा उनकी राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। बाबूजी को याद करते हुए राकेश जी ने कहा कि उनके बताए रास्ते पर राजनीतिक गतिविधियों को आगे बढ़ा रहे हैं। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव जी बात करते रहते हैं। उनका मार्गदर्शन हमेशा मिलता रहता है।

राकेश जी कहते हैं - बाबूजी ने बुढ़वल केन यूनियन से राजनीति शुरू की। 1974 में दरियाबाद विधानसभा से विधायक बने। 1978 से मसौली विधानसभा से लगातार पांच बार विधायक रहे। मंत्री बने। 1989 में नेताजी माननीय मुलायम सिंह यादव जी की सरकार में मंत्री बने। केन्द्र में भी मंत्री बने।

बाबूजी की सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वे हमेशा आमजनता से जुड़े रहे। चाहे लखनऊ में रह रहें हों या बाराबंकी, जनता से मिलने का समय जरूर निकालते थे और उनकी कोशिश रहती थी कि जिसकी भी जो मदद हो सके करें। अब उनकी अनुपस्थिति में हमलोग उनके आदर्शों को थाती बनाकर जनता से लगातार जुड़े रहने की प्रक्रिया को कायम रख रहे हैं। उनके सिखाए रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव जी का मार्गदर्शन हमेशा मिलता रहता है।

श्री पारसनाथ यादव

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता, विधायक एवं पूर्व मंत्री श्री पारसनाथ यादव का 12 जून 2020 को जौनपुर में निधन हो गया। 73 वर्ष के पारसनाथ जी कुछ समय से बीमार चल रहे थे। श्री पारसनाथ यादव 2 बार सांसद तथा 3 बार मंत्री रहे। वे राज्य विधानसभा में 7 बार विधायक निर्वाचित हुए थे। स्वर्गीय श्री पारसनाथ यादव के तीन पुत्र और एक पुत्री हैं।

उनके निधन के समाचार से लखनऊ स्थित पार्टी मुख्यालय में शोक छा गया। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने श्री पारसनाथ यादव के निधन पर गहरा शोक जताते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। उन्होंने श्री यादव के शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना भी व्यक्त की है।

श्री पारसनाथ यादव के निधन पर समाजवादी पार्टी मुख्यालय में शोकसभा हुई जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव, पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री अहमद हसन, श्री अवधेश प्रसाद, श्री राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल तथा एम.एल.सी. श्री एसआरएस यादव आदि ने दो मिनट मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

पारसनाथ यादव जी के त्रयोदशाह संस्कार पर श्री अखिलेश यादव ने व्हाट्सऐप पर वीडियोकॉल से स्वर्गीय पारसनाथ यादव के बड़े पुत्र श्री लकी यादव एवं उनके भाइयों से बात की और उन्हें ढांढस बंधाया। श्री अखिलेश यादव जी ने कहा कि पारसनाथजी बड़े नेता रहे हैं। पूर्वांचल में उनका प्रभाव रहा। उन्होंने जनहित के कार्यों एवं गांवों के विकास को प्राथमिकता दी थीं। समाजवादी पार्टी उनके परिवार के साथ है।

श्री अखिलेश यादव ने श्री पारसनाथ यादव को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री यादव ने किसानों तथा कमजोर वर्ग के लोगों के हितों के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष किया। इनका राजनीतिक सफर ग्राम पंचायत से लेकर देश की सबसे बड़ी पंचायत (लोकसभा) तक रहा। उनके निधन से समाजवादी पार्टी को अपूरणीय क्षति हुई है। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि स्वर्गीय पारस नाथजी ने किसानों, गरीबों के लिए आजीवन संघर्ष किया। वह समाजवादी विचारों के लिए पूरी निष्ठा से प्रतिबद्ध रहे।

श्री घूराराम

समाजवादी पार्टी व दलित समाज के वरिष्ठ नेता एवं पूर्वमंत्री श्री घूराराम का 16 जुलाई 2020 को इलाज के दौरान लखनऊ के एक अस्पताल में निधन हो गया। 64 वर्षीय श्री घूराराम कर्मठ और लोकप्रिय नेता थे। श्री घूराराम 26 अगस्त 2019 को समाजवादी पार्टी में शामिल हुए थे। उन्होंने श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में निष्ठा रखते हुए अपने समाज में विशेष तौर पर काम कर समाजवादी पार्टी को ताकत बढ़ायी थी। उनके निधन से समाजवादी पार्टी की अपूरणीय क्षति हुई है।

श्री घूराराम राज्य सरकार के मंत्री रहे। वे कर्मठ और लोकप्रिय नेता थे। 1993, 2002 और 2007 में जनपद बलिया के रसड़ा विधानसभा क्षेत्र से तीन बार विधायक निर्वाचित हुए थे। श्री घूराराम के परिवार में दो पुत्र एवं एक पुत्री हैं। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्रीअखिलेश यादव ने उनके निधन पर गहरा शोक जताते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की है। उन्होंने स्वर्गीय घूराराम के बेटे से बात कर

परिवार को सांत्वना दी।

दिनांक 29 जुलाई को स्वर्गीय घूराराम की श्रद्धांजलि सभा में पुज्य भंतो (बौद्ध भिक्षुक) द्वारा परित्राण एवं शांति पाठ किया गया। श्रद्धांजलि सभा का आयोजन बलिया के पहाड़पुर गांव में किया गया। इस अवसर पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने उनके पुत्र श्री सुबाष चंद राम से वीडियोंकॉलिंग पर बात की तथा श्री घूराराम जी के प्रति श्रद्धा व्यक्त की। उन्होंने परिजनों को ढांढ़स बंधाते हुए कहा कि श्री घूराराम की चिंता रहती थी, वह समाज का ज्यादा से ज्यादा भला कर सके।

श्री घूराराम ने समाजवादी पार्टी को ताकत देने के लिए दिन रात एक कर दिया था। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि श्री घूराराम के योगदान को समाजवादी पार्टी कभी भूला नहीं सकती, उन्होंने परिवार को भरोसा दिया कि समाजवादी पार्टी में उनका हमेशा सम्मान रहेगा।

श्रद्धांजलि सभा में समाजवादी पार्टी के प्रमुख नेतागण सर्वश्री संग्राम सिंह यादव पूर्व विधायक, नारद राय पूर्व मंत्री, मिठाई लाल भारती वरिष्ठ नेता, राज मंगल यादव जिलाध्यक्ष, मु. रिजवी साहब पूर्व मंत्री, सनातन पाण्डेय पूर्व विधायक, जय प्रकाश अंचल पूर्व विधायक, गोरख पासवान पूर्व विधायक, छोटे लाल राजभर पूर्व विधायक, सुभाष यादव पूर्व विधायक तथा आद्या शंकर यादव पूर्व जिलाध्यक्ष आदि उपस्थित रहे तथा श्री घूराराम के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

श्री शमीमुल हक

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं मुरादाबाद देहात के पूर्व विधायक श्री शमीमुल हक का 25 जून 2020 को निधन हो गया। उनका निधन दिल्ली में हुआ जहां उनका इलाज चल रहा था। शमीमउल हक मुरादाबाद देहात से दो बार समाजवादी पार्टी के टिकट पर विधायक निर्वाचित हुए। पहली बार साल 2002 में फिर 2012 में।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने श्री हक़ के निधन पर गहरा शोक जताते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की। श्री यादव ने कहा कि श्री शमीमुल हक पार्टी से निष्ठापूर्वक जुड़े थे। समाज के कमजोर वर्ग की आवाज को वे पुरजोर तरीके से उठाते थे। उनके निधन से समाजवादी पार्टी को भारी क्षति हुई है।

श्री हक शुरू से ही समाजवादी विचारधारा से प्रभावित रहे। राजनीति में ने से पहले वे चौपाल लगाकर किसानों की समस्याओं को सुना करते थे। इन चौपालों के बारे में बताया जाता है कि श्री हक खुद ही किसानों की आवभगत के लिए हुक्का एवं जलपान की व्यवस्था करते थे।

श्री हक ने हमेशा समाजवादी पार्टी नेतृत्व के फैसलों का सम्मान किया। वे समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव जी का बेहद सम्मान करते थे। उनके लिए हर निर्णय पर उन्होंने सहमति जताई।

श्री हक अपने पीछे परिवार में पत्नी, दो बेटों एवं दो बेटियों को छोड़ गए हैं। उनके बेटे हाजी कसीमुल हक अपने पिता की राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं।

"समाजवादी सिपाहियों का हमारा परिवार"

स्वर्गीय श्री शमीमुल हक के बेटे कसीमुल हक कहते हैं कि उनका परिवार राजनीतिक परिवार है जिसका आधार समाजवादी विचारधारा है। कसीमुल कहते हैं- मेरे पिता एवं उनका परिवार समाजवादी पार्टी के वफादार सिपाही रहे हैं और रहेंगे। बकौल कसीमुल- श्री अखिलेश यादव जी उनके नेता हैं। जैसा उनका निर्देश होगा वे वैसा ही करेंगे। उनका स्नेह और सम्मान मेरे पिता को पूर्व विधायक होने के बावजूद मिलता रहा। उनके न रहने के बाद हमने पाया कि उनकी अटैची, फाइलें व बैग में राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की तमाम तस्वीरें हैं। उनके निधन के बाद अखिलेश जी ने फोन कर बेहद अफसोस जताया और भरोसा दिलाया कि शीघ्र ही मिलेंगे भी। उन्होंने जनता की सेवा करते रहने का निर्देश दिया है जिसे मानते हुए मैं लगातार लोगों से मिल रहा हूं और उनकी दिक्कतें दूर करने की कोशिश कर रहा हूं।

श्री अजीमुल हक पहलवान

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं अंबेडकरनगर जिले के टांडा विधानसभा के पूर्व विधायक अजीमुल हक पहलवान का 5 मई 2020 को लंबी बीमारी के बाद उनके पैतृक घर भूलेपुर में निधन हो गया। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने श्री हक के निधन पर गहरा शोक जताया। उन्होंने परिजनों से बात कर उन्हें ढांढस जताया। उन्होंने श्री हक के बेटों मुसाब अजीम व शोएब अजीम को भरोसा दिया कि समाजवादी पार्टी उनके साथ है।

अजीमुल हक पहलवान समाजवादी पार्टी का प्रमुख चेहरा थे। न सिर्फ टांडा विधानसभा क्षेत्र बल्कि अंबेडकरनगर जनपद में भी वे खासे लोकप्रिय थे। उनके निधन से समाजवादी पार्टी ने एक सच्चा सिपाही खोया जिनके जाने की भरपाई बेहद मुश्किल है।

श्री हक के निधन की खबर सुनते ही पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। उनके गांव में शोक संवेदना व्यक्त करने वालों का तांता लग गया।जिला अध्यक्ष रामशकल यादव, विशाल वर्मा, हीरालाल यादव, राममूर्ति वर्मा, बलिराम, सुभाष राय, भीम प्रसाद सोनकर समेत सभी नेताओं ने गहरा दुख जताते हुए शोक संवेदना व्यक्ति की है।

जनसंपर्क का जारी है सिलसिला

अजीमुल हक पहलवान के बड़े बेटे मुसाब अपने पिता के नक्शे कदम पर चलते हुए क्षेत्रीय लोगों के बीच व्यापक जनसंपर्क कार्यक्रम चला रहे हैं। मुसाब कहते हैं- मैं बचपन से ही देखता रहा कि मेरे पिता का जनसंपर्क पार्टी लाइन पर चलता ही रहा। बीते साढ़े तीन दशक में उनकी यह कार्यशैली रही। जनता से मिलना और उनकी समस्याओं का समाधान करवाना। गरीब, मजदूर, बुनकर तबके के साथ वे हमेशा खड़े रहे। बीते बारह-तेरह वर्षों से मैं भी उनके साथ जनसंपर्क के कार्यक्रमों में रहा इसलिए करीब से देखा कि आम लोगों के प्रति उनके मन में कितना समर्पण भाव था। रोजाना दस से बारह घंटे वे क्षेत्र का दौरा करते हुए लोगों से मिला करते थे। वे फोन भी खुद ही उठाते थे। कई-कई बार वे रात में एक-दो बजे तक लोगों से मिलते -मिलाते रहे। पांच बजे सुबह फिर नमाज पढ़ने के लिए उठ जाते थे। नमाज उनकी एक भी नहीं छूटती थी। क्षेत्र का बहुत विकास भी करवाया उन्होंने। इलाकाई लोगों, खास तौर पर बुनकरों को कई सुविधाएं दिलवाईं।

यदुनाथ सिंह पटेल

जनपद मिर्जापुर के चुनार के पूर्व विधायक श्री यदुनाथ सिंह पटेल का 31 मई 2020 को उनके पैतृक आवास में निधन हो गया। श्री यदुनाथ सिंह पटेल समाजवादी विचारधारा के लिए जीवनपर्यन्त प्रतिबद्ध रहे। छात्र, युवा, किसान-मजदूर आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाते हुए चुनार से चार बार विधायक चुने गए। वे जनता की सेवा में जुटे रहते थे। उनके निधन से सार्वजनिक जीवन में बड़ी क्षति हुई है।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने निधन पर दुःख व्यक्त किया है। श्री अखिलेश यादव ने शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। स्वर्गीय यदुनाथ सिंह के परिवार में एक पुत्र और 4 पुत्रियां हैं।

श्री यदुनाथ सिंह ने बीएचयू में छात्र जीवन से ही राजनीति की शुरुआत कर दी थी।

केमिकल इंजीनियरिंग के छात्र श्री सिंह ने आंदोलन करके रामनगर पीपा पुल पर हो रही पथकर की वसूली को बंद करा दिया था। विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलाधिपति प्रो. प्रभु नारायण सिंह ने पथकर माफ करने का आदेश जारी किया था। यदुनाथ जी का प्रिय नारा था- "तू जमाना बदल"।

...तू जमाना बदल !

स्वर्गीय यदुनाथ सिंह पटेल के पुत्र श्री धनंजय सिंह पटेल ने कहा कि स्वर्गीय श्री पटेल की स्मृति में एक पुस्तक पर काम चल रहा है जिसका शीघ्र ही विमोचन होगा। पुस्तक का शीर्षक है- "एक निहत्थी क्रांति-तू जमाना बदल"। धनंजय जी कहते हैं- मेरे पिता पहले वामपंथी विचारों से प्रभावित थे, फिर समाजवादी विचारधारा की तरफ झुकाव हुआ और आजीवन समाजवादी रहे। उन्होंने फीस माफी के लिए भी कई सफल आंदोलन चलाए। वे सर्वसमाज के नेता थे। उन्होंने अपने कार्यालय में खाना पकाने व खाना परोसने की व्यवस्था संभालने की जिम्मेदारी समाज के वंचित समाज के लोगों को दे रखी थी। सर्वसमाज का नेता होने व अपने प्रगतिशील विचारों के कारण वे किंवदंती बने।

टीएस मेहता

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने वरिष्ठ समाजवादी एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव के सूचना सलाहकार श्री त्रिलोक सिंह मेहता के निधन पर गहरा शोक जताते हुए संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की है। उन्होंने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की है। श्री मेहता का 25 जुलाई को लखनऊ में निधन हुआ। वे पिछले कुछ समय से बीमार चल रहे थे।

श्री त्रिलोक सिंह मेहता (87वर्ष) ने राज्य सूचना विभाग में लम्बे समय तक सूचनाधिकारी रहते हुए तत्कालीन मुख्यमंत्रियों श्री मुलायम सिंह यादव समेत अन्य मुख्यमंत्रियों के कार्यकाल में अपनी सेवाएं दी थी। सेवा निवृत्ति के बाद भी वे श्री मुलायम सिंह यादव के सूचना सलाहकार के रूप में लोहिया ट्रस्ट में काफी समय तक कार्यरत रहे। समाजवादी बुलेटिन के प्रकाशन एवं संपादन से वे लम्बे समय तक जुड़े रहे। पत्रकारों के बीच भी श्री मेहता काफी लोकप्रिय थे।

भारत को विदेश नीति में रणनीतिक हित देखना चाहिए

अली खान महमूदाबाद
प्रोफेसर, अशोका विश्वविद्यालय

अगर समय से पहले किसी ने चीन के बढ़ते वर्चस्व के बारे में लोगों को जागरूक करने की कोशिश की तो वो श्री मुलायम सिंह यादव हैं जिन्होंने लोकसभा में खड़े हो कर कई बार कहा कि भारत का असल दुश्मन चीन है। चीन भारत के उत्तरी क्षेत्रों में चारों तरफ़ से अपना फंदा फैला रहा है। सरहद पर बने शत्रुतापूर्ण गतिरोध और लद्दाख में सैनिकों की हत्या के बाद, भारत को एक और बड़ा रणनीतिक झटका लगा है।

उधर विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार, ईरान ने घोषणा की है कि वह चाबहार बंदरगाह विकास परियोजना में भारत की भागीदारी को समाप्त कर रहा है। ईरान ने चीन के साथ 25 साल का एक नया समझौता किया है । इस समझौते के तहत चीन ईरान में 400 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश करेगा। साथ ही चीन ने घोषणा की है कि सैन्य और सामरिक संबंधों में भी ईरान को सहयोग देगा। तेल और गैस से समृद्ध ईरान अपनी कमज़ोर आर्थिक स्थिति के कारण इस निवेश का पूरा लाभ उठाना चाहेगा। ईरान इस समय जिन कठोर आर्थिक प्रतिबंधों को झेल रहा है, ऐसे में उसकी लचर अर्थव्यवस्था को काबू पाने में ये निवेश बेहद सहायक होगा।

2016 में जब भारत ने चाबहार बंदरगाह को विकसित करने के लिए एक समझौता किया था तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दावा किया था कि ये दोनों देशों के लिए "विकास का एक इंजन" साबित होगा। समझौते के

मुताबिक़ बंदरगाह को विकसित करने के लिए 250 मिलियन डॉलर के निवेश की बात की गई थी और चाबहार और उत्तर पूर्वी शहर ज़ाहेदान के बीच एक रेलवे लाइन बिछाने के लिए 400 मिलियन डॉलर का वादा किया गया था। कुछ दिनों पहले, ईरान ने यह इरादा ज़ाहिर किया है कि इस 628 किलोमीटर लम्बी रेलवे लाइन को बिछाने का काम वह खुद करेगा। इसके लिए उसने स्पष्ट किया कि भारत ने अपने वादे से पीछे हटकर प्रतिबद्धताओं पर फिर से कुठाराघात किया है। ईरान ने अपने राष्ट्रीय हित के लिए यह फैसला लिया है। हालात का जायज़ा लेने पर ईरान इस नतीजे पर पहुंचा है कि भारत का साथ छोड़ने पर उन्हें किसी तरह का कोई नुकसान नहीं होगा और ना कोई ज़्यादा विरोध करेगा।

हालांकि हाल में ईरान के रेल मंत्री ने भारत की हिस्सेदारी समाप्त होने की ख़बर को रद्द करते हुए भारतीय राजदूत से मुलाक़ात के दौरान कहा कि यह ख़बर भारत और ईरान के प्राचीन संबंध ख़त्म करने ले लिए कुछ देश फैला रहे हैं, लेकिन अभी तक लिखित में कोई बात सामने नहीं आई है।

क़ाबिले ग़ौर यह है अमरीका ने ईरान के ख़िलाफ़ आर्थिक प्रतिबंधों का उपयोग किया है लेकिन उस में अफगानिस्तान-बलूचिस्तान के दक्षिण पूर्वी प्रांत में चाबहार बंदरगाह शामिल नहीं है। इसका एक कारण यह था कि अमरीका चाहता था कि बंदरगाह का इस्तेमाल युद्धग्रस्त अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण के लिए किया जाए। इस के अलावा, अफगानों के पास हिंद महासागर तक पहुँचने के लिए एक सुरक्षित मार्ग होगा और इस तरह से पाकिस्तान में स्थित ग्वादर के चीन समर्थित बंदरगाह से भी बचा जा सकता है।

भारतीयों के लिए चाबहार बंदरगाह का बड़ा रणनीतिक महत्व है क्योंकि यह ग्वादर को दरकिनार करता है और इसके अलावा भारत को अफगानिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और अन्य मध्य एशियाई देशों के बाजारों तक सीधे पहुँचने का मार्ग भी देता है। वास्तव में, अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे के माध्यम से, अश्काबाद समझौते के अनुसार, यूरोपीय बाजारों में ओवरलैंड ट्रान्स्पोर्ट का उपयोग भारत को माल ढुलाई लागत के साथ-साथ लगभग 50% परिवहन का समय बचाने की सहूलियत देता है। इसके अतिरिक्त, भारत के लिए इस गलियारे की महत्वपूर्ण रणनीतिक प्रासंगिकता भी है क्योंकि यह चीन के बेल्ट एंड रोड पहल के लिए काउंटर चलाता है, जिसमें ईरान भी एक सदस्य है।

आर्थिक लाभों को खोने के अलावा चाबाहर में अगर भारत की भागीदारी ख़त्म होती है तो रणनीतिक रूप से भी यह देश के लिए एक बड़ी हार होगी। यदि ईरान चाबहार में भारतीय भागीदारी को छोड़ने का फैसला करता है, तो ऐसे में चीन ग्वादर के साथ बंदरगाह के एकीकरण के लिए जोर देगा। इसका एक नतीजा यह होगा कि चीन इस क्षेत्र में अपना रणनीतिक असर बढ़ाएगा और इस से पाकिस्तान की भी मदद होगी।

संकेत बता रहे हैं कि इन हालात में ईरान राजनीतिक पैंतरा खेलने के लिए तैयार है। पिछले साल ईरान ने अनुच्छेद 370 और उसकी कश्मीर नीति पर भारत सरकार की आलोचना की थी, और इस वर्ष अयातुल्ला खामिनई ने सरकार से मुस्लिम विरोधी हिंसा से "चरमपंथी हिंदुओं" को रोकने की अपील की थी। लगता है कि ईरान ने तय किया है कि भारत की आंतरिक सियासी मुद्दों पर टिप्पणी करने से उसको कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा।

जबकि दूसरी तरफ़ चीन के दक्षिण-पश्चिम प्रदेश शिनजियांग में मुसलमानों के साथ अन्याय और अमानवीय व्यवहार के बावजूद बीजिंग के साथ ईरान को नए समझौते करने में कोई वैचारिक कठिनाई नहीं हुई। इसके अलावा, ईरान ने जनवरी 2020 में ओएनजीसी विदेश की अगुवाई में एक भारतीय कंसोर्टियम (अल्पकालीन संघटन) को दरकिनार करते हुए फरज़ाद-बी गैस क्षेत्रों को विकसित करने के लिए एक अन्य ऑपरेटर को अनुबंधित किया। फरज़ाद-बी में भारत का निवेश अमेरिका से प्रतिबंधों के डर के कारण निष्क्रिय हो गया था।

यह पूरी तरह से स्पष्ट हो चुका है कि अपने पड़ोसियों के साथ व्यवहार के मामले में भारत पूरी तरह से अमेरिका पर निर्भर होने के साथ उसका हर आदेश मानने को मजबूर है और एक रणनीतिक शिकंजे में फंसता चला जा रहा है। यूरेशिया (EURASIA) के बढ़ते भू-सामरिक महत्व की ओर कई विश्लेषकों ने इशारा किया है और इसे मात्र संयोग नहीं कहा जा सकता है कि यहाँ पर चीन अपना वर्चस्व स्थापित करने में लगा है। अगर अमेरिका पर निर्भरता की बात की जाए तो 2017 के उस गठबंधन QUAD (जिसमे जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका सदस्य हैं) पर ध्यान दें। इसके तहत भारत की भागीदारी उसे केवल भारत-प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक मज़बूती देती है। लेकिन चीन

कोई बात सामने नहीं आई है।

क़ाबिले ग़ौर यह है अमरीका ने ईरान के ख़िलाफ़ आर्थिक प्रतिबंधों का उपयोग किया है लेकिन उस में अफगानिस्तान-बलूचिस्तान के दक्षिण पूर्वी प्रांत में चाबहार बंदरगाह शामिल नहीं है। इसका एक कारण यह था कि अमरीका चाहता था कि बंदरगाह का इस्तेमाल युद्धग्रस्त अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण के लिए किया जाए। इस के अलावा, अफगानों के पास हिंद महासागर तक पहुँचने के लिए एक सुरक्षित मार्ग होगा और इस तरह से पाकिस्तान में स्थित ग्वादर के चीन समर्थित बंदरगाह से भी बचा जा सकता है।

भारतीयों के लिए चाबहार बंदरगाह का बड़ा रणनीतिक महत्व है क्योंकि यह ग्वादर को दरकिनार करता है और इसके अलावा भारत को अफगानिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और अन्य मध्य एशियाई देशों के बाजारों तक सीधे पहुँचने का मार्ग भी देता है। वास्तव में, अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे के माध्यम से, अश्काबाद समझौते के अनुसार, यूरोपीय बाजारों में ओवरलैंड ट्रान्स्पोर्ट का उपयोग भारत को माल ढुलाई लागत के साथ-साथ लगभग 50% परिवहन का समय बचाने की सहूलियत देता है। इसके अतिरिक्त, भारत के लिए इस गलियारे की महत्वपूर्ण रणनीतिक प्रासंगिकता भी है क्योंकि यह चीन के बेल्ट एंड रोड पहल के लिए काउंटर चलाता है, जिसमें ईरान भी एक सदस्य है।

आर्थिक लाभों को खोने के अलावा चाबाहर में अगर भारत की भागीदारी ख़त्म होती है तो रणनीतिक रूप से भी यह देश के लिए एक बड़ी हार होगी। यदि ईरान चाबहार में भारतीय भागीदारी को छोड़ने का फैसला करता है, तो ऐसे में चीन ग्वादर के साथ बंदरगाह के एकीकरण के लिए जोर देगा। इसका एक नतीजा यह होगा कि चीन इस क्षेत्र में अपना रणनीतिक असर बढ़ाएगा और इस से पाकिस्तान की भी मदद होगी।

संकेत बता रहे हैं कि इन हालात में ईरान राजनीतिक पैंतरा खेलने के लिए तैयार है। पिछले साल ईरान ने अनुच्छेद 370 और उसकी कश्मीर नीति पर भारत सरकार की आलोचना की थी, और इस वर्ष अयातुल्ला खामिनई ने सरकार से मुस्लिम विरोधी हिंसा से "चरमपंथी हिंदुओं" को रोकने की अपील की थी। लगता है कि ईरान ने तय किया है कि भारत की आंतरिक सियासी मुद्दों पर टिप्पणी करने से उसको कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा।

यह पूरी तरह से स्पष्ट हो चुका है कि अपने पड़ोसियों के साथ व्यवहार के मामले में भारत पूरी तरह से अमेरिका पर निर्भर होने के साथ उसका हर आदेश मानने को मजबूर है और एक रणनीतिक शिकंजे में फंसता चला जा रहा है।

जबकि दूसरी तरफ़ चीन के दक्षिण-पश्चिम प्रदेश शिनजियांग में मुसलमानों के साथ अन्याय और अमानवीय व्यवहार के बावजूद बीजिंग के साथ ईरान को नए समझौते करने में कोई वैचारिक कठिनाई नहीं हुई। इसके अलावा, ईरान ने जनवरी 2020 में ओएनजीसी विदेश की अगुवाई में एक भारतीय कंसोर्टियम (अल्पकालीन संघटन) को दरकिनार करते हुए फरज़ाद-बी गैस क्षेत्रों को विकसित करने के लिए एक अन्य ऑपरेटर को अनुबंधित किया। फरज़ाद-बी में भारत का निवेश अमेरिका से प्रतिबंधों के डर के कारण निष्क्रिय हो गया था।

यह पूरी तरह से स्पष्ट हो चुका है कि अपने पड़ोसियों के साथ व्यवहार के मामले में भारत पूरी तरह से अमेरिका पर निर्भर होने के साथ उसका हर आदेश मानने को मजबूर है और एक रणनीतिक शिकंजे में फंसता चला जा रहा है। यूरेशिया (EURASIA) के बढ़ते भू-सामरिक महत्व की ओर कई विश्लेषकों ने इशारा किया है और इसे मात्र संयोग नहीं कहा जा सकता है कि यहाँ पर चीन अपना वर्चस्व स्थापित करने में लगा है। अगर अमेरिका पर निर्भरता की बात की जाए तो 2017 के उस गठबंधन QUAD (जिसमे जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका सदस्य हैं) पर ध्यान दें। इसके तहत भारत की भागीदारी उसे केवल भारत-प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक मज़बूती देती है। लेकिन चीन उत्तर में भारत के तीनों ओर उन जगहों पर फंदा फैला कर अपनी घुसपैठ करने की कोशिश कर रहा है जहाँ पर उसे भारतीय

उत्तर में भारत के तीनों ओर उन जगहों पर फंदा फैला कर अपनी घुसपैठ करने की कोशिश कर रहा है जहाँ पर उसे भारतीय रणनीति की कमज़ोरियां नज़र आ रही हैं।

दूसरी ओर, भारत 2001 की उस शंघाई सहयोग परिषद की अपनी सदस्यता का लाभ नहीं उठा सका है, जो चीन की पहल से बनाई गई थी। इसके अन्य सदस्य रूस, कजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान, किर्गिस्तान, पाकिस्तान और ताजिकिस्तान हैं। इसके अतिरिक्त, अमेरिका, भारत और रूस के बीच प्रतिबंधों का उपयोग करने की धमकी दे रहा है। अमेरिका ने रूसी सैन्य हार्डवेयर खरीदने के लिए 2017 के सी-ए-ए-टी-एस-ए (CAATSA) कानूनों के तहत भारत को दंडित करने की खुलेआम धमकी दी है। याद रहे कि अमेरिका के इशारे पर ये भी एक ऐसी रणनीति है जिसमें भारत ने अपनी स्वतंत्र धार्मिक नीति के आधार पर ईरान के साथ समझौते की पहल की थी। इसके बाद 2005 में भारत ने अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी में भारत-अमेरिका परमाणु समझौते पर ईरान के खिलाफ मतदान किया था।

ईरान के पास पहले से ही रूस के साथ चीन के बेल्ट एंड रोड पहल का हिस्सा होने और पाकिस्तान के साथ विभिन्न द्विपक्षीय समझौतों पर हस्ताक्षर करने के अलावा रूस के साथ एक करीबी राजनीतिक और सैन्य संबंध है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिखाया गया उनका अत्यधिक व्यक्तिगत बड़बोलापन और कूटनीति भारत के लिए कोई ठोस रणनीतिक परिणाम देने वाली नज़र नहीं आती है। इसके अतिरिक्त, अमेरिका और इज़राइल के साथ बहुत प्रचारित निकटता, जो मोदी, डोनाल्ड ट्रंप और बेंजामिन नेतन्याहू के बीच स्पष्ट रूप से व्यक्तिगत संबंधों पर भी निर्भर करती है।यह ईरान की भारत के प्रति पहले की निष्पक्षता के बारे में संदेह पैदा करती है। ऐसा लगता है कि भारत सरकार अपनी विदेश नीति की रणनीति के तहत ट्रंप के दोबारा चुने जाने की उम्मीद कर रही है। लेकिन दूसरे देश की आंतरिक राजनीति में किसी एक दल या व्यक्ति का खुला समर्थन विदेश नीति के हर उसूल के ख़िलाफ़ है। अगर अमेरिका में इस साल नवंबर में प्रस्तावित राष्ट्रपति चुनावों में

रिपब्लिकन के बजाय डेमोक्रेट चुना गया तो भारत ट्रंप की खुलेआम समर्थन की सफ़ाई कैसे देगा?

भारत को अपने पड़ोसियों और क्षेत्रीय सहयोगियों का भरोसा एक बार फिर जीतना पड़ेगा ताकि यूरेशिया में वह अपनी जगह को सुरक्षित कर सके। अगर यह नहीं हुआ तो अन्य देशों को संदेश जाएगा कि भारत अब केवल अमेरिका के इशारे पर चलेगा। भारत के लिए ईरान एक महत्वपूर्ण रणनीतिक सहयोगी है। देश के राष्ट्रीय हितों को नुक़सान नहीं पहुँचना चाहिए। मौजूदा सरकार ने अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी निष्पक्षता खो दी है। भाजपा को अपने वैचारिक हितों से परे भारत के रणनीतिक हितों को फिर से परिभाषित करने और एक सुसंगत विदेश नीति की रणनीति पर काम करने की जरूरत है।

जैसे मार्केटिंग, पीआर और ब्रांडिंग से देश की राजनीति नहीं चल सकती है वैसे ही देश की विदेश नीति केवल दिखावे और किसी एक व्यक्ति के निजी सम्बन्धों से नहीं चलाई जा सकती है। भाजपा राष्ट्रवाद को अपना एकाधिकार समझती है लेकिन देश की आंतरिक और विदेशी नीतियाँ हमको यह बता रही हैं कि भाजपा ही देश को सब से ज़्यादा नुक़सान पहुँचा रही है। देश हित वाली नीतियों को न अपनाने से भाजपा उसी तरह से भारत को नुक़सान पहुँचा रही है जैसे अतीत में कांग्रेस पार्टी ने नुक़सान पहुँचाया था। 45 साल के बाद लद्दाख में भारतीय सेना के जवान चीनी सेना के हाथ शहीद हुए हैं।

पिछली बार ऐसा हुआ था तो कांग्रेस की सरकार थी और उस समय डाक्टर लोहिया ने बार-बार कहा था कि देश को हिमालय पॉलिसी बनाना चाहिए। इस ही संदेश को मुलायम सिंह जी ने दोहराया और आज श्री अखिलेश यादव जी दोहरा रहे हैं लेकिन लोग भूल जाते हैं कि कांग्रेस और भाजपा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Congratulations to my daughter Aditi for scoring 98% in ISC XII.

We are proud of all the students who have worked very hard. They are going to make our future bright.

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

रक्षाबंधन के पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Skills are the key to unlock the future.
#WorldYouthSkillsDay

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

"Ether, air, fire, water, earth, planets, all creatures, directions, trees and plants, rivers and seas, they are all organs of God's body. Remembering this a devotee respects all species."

— Srimad Bhagavatam

#WorldNatureConservationDay

Following

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

बेरोज़गारी, महँगाई व क़ानून-व्यवस्था के ख़िलाफ़ सपा के कार्यकर्ताओं के विरोध-प्रदर्शन पर लाठी चार्ज बता रहा है कि प्रदेश की असफल भाजपा सरकार किस प्रकार जनहित के मुद्दों पर जनता की आवाज़ को लगातार दबा रही है.

घोर अलोकतांत्रिक, निंदनीय कृत्य!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

वर्तमान मुख्यमंत्री का निष्फल कार्यकाल इसी बात में बीता कि वो काटते रहे सपा के कार्यकाल में हुए कामों का फ़ीता...

इसी कड़ी में अब 'डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल नोएडा' का उद्घाटन हो रहा है.

#सपा_का_काम_जनता_के_नाम

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh · 2d

धर्म और राजनीति का रिश्ता बिगड़ गया है। धर्म दीर्घकालीन राजनीति है और राजनीति अल्पकालीन धर्म। धर्म श्रेयस की उपलब्धि का प्रयत्न करता है, राजनीति बुराई से लड़ती है।
- डा० राम मनोहर लोहिया

Invest in people, Invest in infrastructure — Be Socialist.

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

कोरोनाकाल में न तो सीमाएं सुरक्षित हैं, न काम-कारोबार, रोज़गार. अर्थव्यवस्था व बैंक डूब रहे हैं, जमा राशि पर ब्याज घटता जा रहा है, PF से पैसे निकाले जा रहे हैं. लोगों ने अपने क़रीबियों को खोया है.
भाजपाई सरकार की कुनीतियों के कारण जनता मानसिक रूप से नाउम्मीदगी की शिकार हो रही है

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

दरअसल ये कार नहीं पलटी है, राज़ खुलने से सरकार पलटने से बचाई गयी है.

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या LW/NP-300/2018-2020

www.samajwadiparty.in